बड़की बहिन

बड़की बहिन

जगदीश प्रसाद मण्डल



पल्लवी प्रकाशन
बेरमा/निर्मली

BARKI BAHIN (बड़की बहिन)
A Maithili Novel by Shri Jagdish Prasad Mandal

ISBN: 978-93-87675-31-5
दाम: 250/- (भा.रु.)

पाँचम संस्करण: 2023 (पहिल संस्करण: 2013, श्रुति प्रकाशन, दिल्ली)

प्रकाशक: पल्लवी प्रकाशन
तुलसी भवन, जे.एल.नेहरू मार्ग, वार्ड नं.: 06, निर्मली
जिला- सुपौल, बिहार: 847452
मुद्रक: पल्लवी प्रकाशन (मानव आर्ट)

वेबसाइट: http://pallavipublication.blogspot.com
ई-मेल: pallavi.publication.nirmali@gmail.com
मोबाइल: 6200635563; 9931654742

फोण्ट सोर्स: https://fonts.google.com/,
https://github.com/virtualvinodh/aksharamukha-fonts
आवरण: श्रीमती पुनम मण्डल, निर्मली (सुपौल), बिहार: 847452
अक्षर संयोजन: डॉ. उमेश मण्डल

समर्पण भाव

घरे-घरे ज्योति दीप
गाम अन्हार पड़ल छै
घरे-घर समाज कहि-कहि
अध-मरल गाम पड़ल छै
इतिहास मिथिला कहि-सुनि
पुर जनक धाम बनल छै
वक्र आठ गीत गबिते
ज्योतिरमान जगल छै
बनि-कनियाँ-पुतरा-पुतरी
मूक नाच नचैत रहै छै
राति-दिन एकबट बरहबट बनि
नाचि नाच नचैत रहै छै
घरे-घरे ज्योति दीप
गाम अन्हार पड़ल छइ।

अनुक्रमः

पहिल पड़ाव

चारि भाए-बहिनक बीच सुलोचना पहिल रहने बड़की बहिनक नाओंसँ गाम भरिमे जानल जाइ छैथ। दू-अढ़ाइ बीघा जमीनबला परिवार।

छियासी बर्खक अवस्थामे जिनगीक ढलानक आखिरी सीढ़ीपर पहुँचल सुलोचना भातीजक संग मध्य-प्रदेशक बिलासपुरसँ अपने गाड़ीसँ गाम पहुँचली। पहुँचते गाममे हलचल भऽ गेल-

‘सुलोचना बहिन एली, बड़की बहिन एली.!’

ओना, पैछला पीढ़ीक अनुकरण करैत ऐगलो पीढ़ीक सभ सुलोचनाकेँ ‘बहिने’ कहै छैन। एक्के-दुइए टोलक धियो-पुतो आ जनिजातियो पहुँचए लगली। डेढ़ियापर गाड़ी रोकि रघुनाथ उतैर एका-एकी सभकेँ उतारए लगल। दू बर्खक पोताकेँ सुलोचना कोरामे नेने गाड़ीसँ उतरली।

हिष्ट-पुष्ट शरीर, चानीक बल्ला दुनू हाथमे, महीन-सादा साड़ी पहिरने। थुल-थुल देह। उतैरते चारू दिस आँखि उठा तकली तँ बुझि पड़लैन जे जेबा कालसँ विपरीत सभ किछु गामक भऽ गेल। जिनगीक आशा तोड़ि घरो-दुआर आ गामोकेँ गोड़ लागि कहने रहिऐन जे अन्तिम दर्शन केनहि जाइ छी। ई कहाँ आशा छल जे गामक मुँह फेर देखब। तैबीच जेठ भौजाइपर नजैर पड़लैन। नजैर-सँ-नजैर मिलिते दुनूकेँ बघजर लगि गेलैन। मुँहक बोल बन्न रहलैन। तैबीच झुनकुट चेहरा, ठेंगा हाथे बसमतिया दीदी सेहो पहुँचली। जहिना सुलोचना गामक बेटी तहिना बसमतियो दीदी। एक उमरिये दुनू गोरे, मुदा सुलोचना बहिन

तीन मास जेठ छैथ। बसमतिया दीदीकेँ देखिते सुलोचना पुछलखिन-

“साले भरिमे एते लटैक गेलेँ?”

दुनूक जिनगी बच्चेसँ एकठाम बितने बजैमे कोनो कमी रहबे ने करैन। निधोक भऽ बसमतिया दीदी बजली-

“तूँ ने भाए-भातिजक कमेलहा खा कऽ गेंड़ा बनि गेलँह, हमरा के देत?”

निआरले जकाँ सुलोचना बजली- “किए, भगवान तोरा थोड़े बेपाट छथुन जे नइ देनिहार छौ?”

बसमतिया-

“हँ से तँ ऐछे, मुदा जएह कमाएत तेहीमे ने देत। अच्छा, कह जे टुटलाहा लग कज्जी ने तँ रहलौं, नीक जकाँ हाड़ जुटि गेलौं किने?”

“हँ। आब तँ बाल्टिनो उठबै छी आ पोतोकेँ कोरा-काँखमे लऽ कऽ खेलबै छिऐ। अपने गाड़ियो छी, आब गामेमे रहब।”

“ऐ उमेरमे असगरे रहि हेतौ?”

“मुनेसरो आब एतै रहत किने? काल्हि ओहो औत। ताबे कहुना अही टुटलाहा घरमे रहि पजेबाक घरो बनौत। हम सभ केते जीबे करब। मुदा जाबे आँखि तकै छी ताबे तकक ओरियान तँ करए पड़त।”

चौदह बर्खक अवस्थामे सुलोचनाक बिआह भेलैन। जेहने पिताक साधारण किसान परिवार तेहने परिवारमे बिआहो भेलैन। समाजमे अखन धरि धन नहि कुले-मूलक महत अधिक रहल मुदा लेनो-देन तँ चलिते छल। नीक-मूलक कन्याक मांगो बेसी। ओना, अपन-पिताक कुल-मूलसँ दब परिवारमे बिआह भेलैन, मुदा कोनो हिनके-टा नहि, समाजमे एना केतेको गोरेकेँ भेल छैन आ होइतो अछि। तँए कोनो प्रश्ने नहि उठल।

मिथिलांचलक ओइ गाममे सुलोचनाक जन्म भेल छेलैन जइ

गाम होइत एकटा धारो अछि आ पूबसँ कोसीक पानि आ पच्छिमसँ कमलाक पानि सेहो बरसातक मौसममे बाढ़ि बनि अबिते अछि। ओना, कोसी-कमलाक बान्ह नै रहने अबैत-अबैत बाढ़ि पतरा जाइए मुदा बरखो-बुन्नीक तँ कोनो निसचित ठेकान नहियेँ छइ। जइ साल बरखा बेसी भेल तइ साल बाढ़ियो नमहर-नमहर आएल आ जइ साल कम बरखा भेल ओइ साल बाढ़ियो छोट अबैत। गाममे खेती-ले बरखा छोड़ि दोसर कोनो साधन नहि। लकड़ीक करीनसँ किछु खेती होइ छल मुदा ओ तँ पोखैरसँ होइ छल जे बैशाख-जेठमे अपने सुखि जाइत। जे पोखैर गहींर रहैत ओइ पोखैरक पानि ऊपर अनैमे तीन-चारि गाँड़ करीन लगि जाइत। तँए गहुमक खेती नहियेँक बरबैर होइ छल, कियो-कियो दू-चारि कट्ठा कऽ लइ छला। सेहो बिनु पटौलहा।

छह गोरेक परिवार चलबैमे सुलोचनाक पिता-हरिहरकेँ कठिनाइ तँ रहबे करैन मुदा गाममे मात्र हरिहरे एहेन नहि, बहुतो एहेन छला जे हुनकोसँ भारी जिनगी जीबैत रहैथ।

एक तँ महिला शिक्षाक चलैन नहि, तैपर गाममे साधनोक अभाव। ओना, बाहरसँ कम सम्पर्क रहने गाममे शिक्षाक ओते जरूरतो नहियेँ छल, खाली बेवहारिक ज्ञानक जरूरत छल जे सभमे थोड़-बहुत रहबे करइ, अखनो छइ...। स्कूलक मुँह सुलोचना नै देखली। बिआहक तीन सालक पछाइत सुलोचनाक दुरागमन भेल, सासुर गेली। बरख-पाँचे-छबेक पछाइत सासुरसँ सुलाचनाकेँ भगा देलकैन। भगबैक कारण रहै जे सन्तान नै भेलैन। ओना, ने कहियो डॉक्टरी जाँच करौल गेलैन आ ने सन्तान नै हेबाक दोष किनकामे छैन, से फरिछौल गेल।

समाजमे एहेन धरल्लेसँ होइत जे कोनो महिलाकेँ ‘कुरुप’ कहि सासुरसँ ठोंठिया कऽ भगौल जाइत तँ कोनोकेँ सौतीन तर बसा भगौल जाइत, इत्यादि-इत्यादि। जैठाम वैदिक पद्धति एक-पुरुष एक नारीक सम्बन्धकेँ पहिल श्रेणीक विचार समाज मानने अछि, तैठाम रंग-रंगक

बाधा बना नारीकेँ अगुआइसँ रोकल गेल। रंग-रंगक सगुन-अपसगुन कहि तँ उढ़री-ढढ़री बना दबौल गेल। एहेन स्थितिकेँ जँ रोगक जड़ि बिना तकने आ ओइठामसँ वैचारिक बाट बनौने बिना आइ एक्कैसम शताब्दीमे पहुँचल छी। ई बिलकुल सत् जे कियो शेर होइ आकि सियार, सभकेँ अपन कालखण्डक लेखा-जोखा होइ छइ। तँए ओ ऐगला-पैछला दोखक भागी भेला, ई बुझब नेनमैत भेल। हँ, जँ कियो अपना हाथे किछु केलैन तेकर जवाबदेह तँ भेबे कएल।

हरिहर समाजक ओहन बेकती जे आँखिक सोझहामे कियो गाछक आम तोड़ि लैन वा खेतक धान नोचि लैन तँ एतबे चेतावनी दैत बजै छला जे ‘जाइ छियौ बापकेँ कहए जे ई छौड़ा धान नोचलक, आम तोड़लक। बुझयहैन जे जखन तोरा कनैठी पड़तौ।’

समाजमे सहयोगक विचार छल। अपन गार्जन अपने बच्चाकेँ सिखबै छला। मुदा हरिहरक परिवारमे एकटा जबरदस गुण छेलैन जे महिनाक चारि-पाँच रवि, चारि-पाँच सोमक सोमवारीक संग केतेको पाबैनक उपाससँ सालो छोट कऽ नेने छला। सरस्वतीक आगमन परिवारमे भऽ गेल छेलैन। सिरिफ अपने हरिहरेटा नै पढ़ने छला। कारणो छल समंगर परिवारमे एक समांग गिरहस्तियो करै छला। तँए शुरूहेसँ पढ़ाइ दिस नै लगौल गेलैन। ओना, काल-क्रमे ओहन-ओहन भैयारी पछुआएल। ई दीगर भेल। ओना, किछु समाज एहनो छल जे एहेन-एहेन अवस्था (सुलोचनाक संग जेहेन भेल तेहेन) केँ बाहुबलसँ रोकलक मुदा समाजोक कटनियाँ तँ बड़का मूस बनि-बनि लोक कटिते छल। आ कटितो अछि जे जाति-जातिकेँ बाँटि सभ रोगसँ रोगाएल छी। कियो कम कियो बेसी। मुदा एहेन-एहेन अपराध समाजक मुद्दा नै बनि बनि, जातीय मुद्दा बनि कमजोर पड़ैत गेल। काल-क्रमे जातियोसँ परिवारमे पहुँच गेल। एक जातिकेँ नीच देखाएब वा जातिक भीतरो अगुआएलक निच्चाँ पछुआएल मनोरंजनक साधन बनि गेल अछि।

सरस्वतीक आगमनसँ हरिहरक परिवारक विचारमे किछु नवीनता तँ आबिए गेल अछि। सासुरसँ भगौल सुलोचनाकेँ परिवार सहर्ष अपना लेलैन। अपनबैक कारण भेल जे परिवारक सभ अपने गलती मानि लेलैन जे ओहन कुल-मूलमे डेगे नै उठबैक चाही। ओहनसँ मुहोँ लगाएब नीक नहि हएत। ..बापक दुलरूआ बेटा दोसर बिआह कऽ लेलैन। मुदा सुलोचना अपनाकेँ वैधव्य नइ बुझली। हाथक चुड़ी रखनहि रहली...।

समय आगू बढ़ल। लक्ष्मी जहिना दरबज्जापर हँसी-खुशीसँ आबि जाइ छथिन आ तखन जहिना केतबो ताड़ी-दारूक खर्चा हेराएले रहैए तहिना ने सरस्वतियो रगड़ी-झगड़ी छैथ। सुलोचना जकाँ नहि ने छैथ जे मने-मन संकल्पक संग जीबैक बाट पकड़ती, ओ तँ तेहेन रगड़ी छैथ जे एकटा सौतिनक कोन गप जे हजारो सौतीनकेँ झोंटिया-पिटिया कऽ अपन हिस्सा लाइए कऽ छोड़ती। पुरुखक कहने भऽ जेतै जे जेठकीक जेठुआ जोश कमा देतइ।

सरस्वतीक रूप परिवारमे बदलल। संस्कृत पद्धतिक जगह नव-नव पद्धति शुरू भेल। थोड़-थाड़ संस्कृतोक पद्धति रहबे कएल। मुदा शिक्षाकेँ बुनियादी पद्धतिसँ उछालि देलक। सुलोचनाक पीठ परहक जेठ भाय जुगेसर तमुरिया स्कूलसँ मैट्रिक पास केलैन। गरीबी-बेकारीसँ त्रस्त परिवार। ..नोकरीक तलासमे जुगेसर कलकत्ता गेला। दू साल रहला। भाषाक दूरी, शहर-गामक दूरी तँ स्पष्टे रहइ। दू सालक पछाइत जुगेसर टीचर्स ट्रेनिंग कऽ लोअर प्राइमरीक शिक्षक बनला।

जुगेसरसँ छोट मुनेसर सेहो तमुरिये स्कूलसँ मैट्रिक पास केलैन। जनता कौलेजमे साइंसक पढ़ाइ नइ होइत। ..गर लगबैत खगड़ियाक गर लगौलैन। ओइ ठामक संस्कृत विद्यालय विद्यार्थीकेँ भोजन-डेराक बेवस्था सेहो करैए। कोसी कौलेज सेहो छइहे। साइंसक विद्यार्थी मुनेसर नीक जकाँ बी.एस-सी केलैन, तैबीच बिआहो अफसरक

परिवारमे भऽ गेलैन। ..चारि भाँइक भैयारी हरिहरक छेलैन, तइमे बँटबारा भऽ गेलैन। दुनू परानी हरिहरो मरि गेला जइसँ आब दुनू भाँइक परिवार रहलैन।

साल भरिक पछाइत मुनेसरक दुरागमन भेल। दुरागमन भेला पछाइत साधना सासुर एली। सासुरक रहन-सहन, घर-दुआर देखि मनमे जबरदस धक्का लगलैन। जे सोभाविको छेलइ। केतए अफसरक परिवार आ केतए एकटा छोट-छीन गामक किसान परिवार। मुदा एहेन खाली साधनेकेँ भेलैन से नहि, धनेरोकेँ भेलो छैन आ होइतो अछि। ओना, साधनाक अपनो (नैहर) परिवार गामेक छेलैन। मुदा नोकरी भेने परिवारकेँ संगे राँचीमे रखै छला। राँचीए-मे जमीन कीनि मकानो बना नेने छैथ।

अफसर–एस.डी.ओ.–रहने दोसो-महिम आ सरो-सम्बन्धी सभ अगुआएल तँ छैन्हे। ओना, परिवारमे तीन भाए-बहिनक बीच साधना सभसँ जेठ। पहिल सन्तान रहने दोसर-तेसर-ले अभिभावके सदृश रहथिन। मुदा बेटी तँ बेटी होइत, बिआह-दुरागमन धरि माए-बापक घरकेँ अपन घर बुझैत। ..अपना गामसँ श्यामानन्द (साधनाक पिता) सम्बन्ध तोड़िये जकाँ लेलैन। कहैले तँ घर-घराड़ी छैन्हे मुदा रहैक घर नहि। साधारण घर छेलैन जे किछु दिनक पछाइत गिर पड़लैन, दोहरा कऽ बनबैक खगता नहियेँ बुझलैन।

दुरागमनसँ पूर्व धरि मुनेसर परिवारक भारक बीच नै पड़ल छला, मुदा पत्नी एने किछु जवाबदेही तँ भइये गेलैन। अपना ओते खेत-पथार नहि जे गिरहस्तीसँ जीविकोपार्जन कऽ सकै छला, तैसंग समाजमे पढ़ल-लिखल बेकतीक संग हँसैक ई जबरदस समस्या तँ जन्म लइए नेने छल जे जँ पढ़ल-लिखलकेँ नोकरी नै भेलैन तँ समाजमे पीहकारीक पात्र बनियेँ जाइ छैथ। गाम-घरमे प्रचलित अछि ‘पढ़ए फारसी बेचए तेल देखू भाइ करम-के खेल’ बिनु खेतबला जँ गिरहस्त बनि गिरहस्ती

अपनबए चाहत सेहो बात नहियेँ अछि। जीविकोपार्जन-ले केहेन गिरहस्ती चाही ओ तँ सबहक लेल सम्भव नहि। खेतक खरीद-बिक्री होइ छै; सम्पैत छिऐ। ओना, जेठ भाय जुगेसर नोकरी करै छेलखिन। लोअर प्राइमरीक शिक्षक छला, मुदा अखुनका जकाँ ने सरकारी छल आ ने तेहेन वेतन।

..दुनू भाँइ मिला परिवार नमहर छेलैन्हे। जहिना सभ पढ़ल-लिखल वेरोजगारकेँ होइ छै तहिना मुनेसरोकेँ होइ छेलैन जे एतए नोकरीक आवेदन करू, ओतए नोकरीक इन्टरभ्यू दिऔक' इत्यादि...।

ओना, ग्रामीण समाजमे पढ़ल-लिखल बेकतीक गनल-गूथल संख्या, मुदा जेतबो छल ओकरो नोकरीक आशा तँ नहियेँ छेलइ। आ ने अखुनका जकाँ सरकारी कार्यालय छेलइ। ओना, अखनो कम अछि। तहिया नमहर-नमहर पंचायत छल, चालीस-चालीस, पचास-पचास पंचायतक बीच ब्लौक थाना छेलइ। तैसंग सरकारी कामो-काज कम छल, जइसँ सरकारी काजमे प्रवेश करब कठिन तँ छेलैहे। ब्लौकमे अफसरक नाओंपर मात्र एकटा बी.डी.ओ. रहै छला। काजो कम, अन्नक अभाव रहने खैरातक बँटबारा आ कोटाक माध्यमसँ अमेरिकन गहुमक बिक्री...। चीनीक कोटा नै बनल छल, तेकर कारण ईहो छल जे एक तँ चीनीक उत्पादन नीक, दोसर खेनिहार कम। तहिना स्कूलो-कौलेजक संस्था सएह, 'गनल कुटिया नापल झोर' सदृश छल। जे शिक्षक काज करै छला ओ सेवा-निवृत्त हेता तेकर पछाइते नव चेहराक प्रवेश हेतैन। लोक बैंकक नाउँए-टा सुनै छल जे ओइमे रुपैआक लेन-देन होइ छइ।

दुरागमनक किछुए-दिनक पछाइत साधना नैहर गेली। अखन धरि पिता-श्यामानन्द बेटी-जमाइक घर-दुआर नै देखने। बी.एस-सी लड़का, शरीरसँ स्वस्थ सुनि बेटीक बिआह केलैन। तइ समय बेटियो (साधना) मैट्रीक पास केनहि रहैन। बिआहो समयसँ भेल छेलैन। ..नैहर

आपसीक पछाइत साधना जखन सासुरक सभ हाल माता-पिताकेँ कहलखिन तखन श्यामानन्दक मनमे जमाइक नोकरीक प्रश्न उठलैन। मुनेसरकेँ राँचीए बजा लेलैन। जमाइक नोकरीक चर्च श्यामानन्द अपन संगियो-साथी आ सरो-सम्बन्धीक बीच गप-सप्पक क्रममे करए लगला। राँची विश्वविद्यालयक केमेस्ट्री विषयक हेडक सोझहा सेहो चर्च केलैन। दुनूक बीच घनिष्ठ दोस्ती। डेरो अगले-बगलमे रहैन। हुनकर ससुर हाइ स्कूल पलामूमे बनौने छैथ। ओना, जंगल-झाड़क इलाका पलामू, मुदा छोट-मोट कसबा जकाँ तँ छेलैहे। हुनका बुझल छेलैन जे स्कूलमे जे साइंस-टीचर छला, ओ छोड़ि कऽ दोसर नोकरी करए चलि गेला जइसँ साइंस टीचरक अभाव छइ।..ओ फोन कऽ ससुरकेँ पुछलखिन। विद्यालयमे शिक्षकक अभाव रहबे करै, मुनेसरकेँ नोकरी भऽ गेलैन। दिनांक 1-10-1967 ईस्वीकेँ नियुक्ति भेलैन। विद्यालयो सरकारी नहियेँ भेल छल, मुदा कोठारी कमीशनक मंजूरी तँ भइये गेल छेलइ। एक साए पाँच रुपैआ महिनाक नोकरी मुनेसरकेँ भऽ गेलैन।

..नोकरीक समय पत्नी कौलेजमे पढ़ैत रहथिन तँए पिते ऐठाम रहितो छेलखिन। अपने असगरे पलामूमे रहै छला आ छुट्टीमे राँची अबै-जाइ छला। ओना, साइंस शिक्षककेँ सभठाम ट्यूशन चलिते अछि जे मौका मुनेसरोकेँ भेटलैन। एक तँ ग्रामीण जिनगीक जीवन स्तर, तैपर अविकसित इलाकाक नोकरी, बचत नीक होइ छेलैन। किछुए दिनक पछाइत मुनेसर राँचीए-मे जमीन कीनि अपन घर सेहो बना लेलैन। मकानसँ किछु भड़ो आबए लगलैन। अपन पैतृक गाम मुनेसर छोड़िये जकाँ देलैन। कहियो काल बहिन-सुलोचनाकेँ कपड़ो आ रुपैओ पठा दइ छेलखिन मुदा आबा-जाही नहियेँ जकाँ छेलैन।

हाइ स्कूलक शिक्षक-ले ट्रेनिंग करब जरूरी छल। ट्रेण्ड-आ-अनट्रेण्ड शिक्षकक बीच वेतनोक अन्तर छेलै आ बिना ट्रेण्ड शिक्षककेँ स्थायी हेबामे सेहो बाधा छेलइ। मुनेसरक नियुक्तिक दू सालक पछाइत

माड़वाड़ी कौलेज दरभंगामे ट्रेनिंगक पढ़ाइ शुरू भेल। दसे मासक कोर्स। डोनेशनपर एडमीशन होइत। जे पढ़ाइक समय (सेशन शुरू भेला बादो छह मास धरि एडमीशन होइते रहल।) चारि मासक पछाइत मुनेसरो एडमीशन लेलैन। छबे मासमे ट्रेण्ड भऽ पुन: पलामू ज्वाइन कऽ लेलैन। ओना, ओइ समय झारखण्ड लगा कऽ बिहार छल। राज्योक स्थिति दू भागमे विभाजित रहइ। 'उत्तर बिहार' आ 'दच्छिन बिहार'क स्पष्ट अन्तर रहइ। 'दच्छिन बिहार'मे खेती-पथारी कम होइत। खेती-जोकर माटियो कम छइ। कम क्षेत्र उपजाऊ अछि। पहाड़ी-जंगलक इलाका छी। ओना, खनिज सम्पदा प्रचूर मात्रामे अछि। कोयलासँ लऽ कऽ अबरख धरिक खान अछि। जखन कि 'उत्तर बिहार' गंगा-ब्रह्मपुत्रक तलहटी मैदान छी। पहाड़-जंगल नहियेँ जकाँ अछि। ओना, गाछी-बिरछी पर्याप्त अछि मुदा पहाड़ी लकड़ी नहि।

खनिज सम्पदा रहने 'दच्छिन बिहार'मे देशी-विदेशी पूजीपति आ सरकारियो कारोबार पर्याप्त मात्रामे अछि। रंग-रंगक खनिज-सम्पदा अछि, तँए विस्तृत रूपमे कारोबार चलैए। देशी-विदेशी पूजीपति आ सार्वजनिक (सरकारी) कारोबार रहने रोजगारो बहुतायत अछि। मुदा जंगली-पहाड़ी इलाका रहने स्थानीय मूलवासीक बीच शिक्षाक प्रचार-प्रसार कम भेल अछि। साधारण-सँ-कुशल श्रमिकक सृजन नहियेँ जकाँ अछि। साधारण मजदूरक रूपमे रहल अछि। ..मुदा 'उत्तर बिहार' पढ़ै-लिखैमे अगुआएल। जइसँ कुशल श्रमिकोक संख्या बेसी अछि, तँए 'उत्तर बिहार'क पढ़ल-लिखल लोक दच्छिन बिहार जा नोकरी करए लगला आ घरो-दुआर बना बसि गेल छैथ। ऐगलो पीढ़ी-ले जीविकोपार्जनक उपाय बनियेँ गेल छैन।

उत्तर बिहारक अर्थात् मिथिलांचलक ईहो दुर्भाग्य रहल जे कृषि प्रधान क्षेत्र होइतो पहाड़ी नदी तेतेक अछि जे क्षेत्रकेँ नष्ट कऽ देने अछि। ओना, तीन रूपमे धार प्रवाहित अछि। किछु धार एहेन अछि जे मात्र

बरसातक मौसममे प्रवाहित होइए आ पछाइत सुखि जाइए। प्रवाहित होइत किछु धार एहेन अछि जे असथिरसँ बहैए, काट-छाँट नहियेँ जकाँ करैए, ओ हजारो बर्खसँ एके स्थानपर बहैए। आ किछु धार एहनो अछि जे काटो-छाँट बेसी करैए आ उपजाऊ माटिकेँ बालुसँ भरि नष्टो करैए। जइसँ गाम-गामक खेतियो नष्ट होइ छै आ घरो-दुआर नष्ट होइ छइ। ..जीवन-यापनक मूल आवश्यकता, उत्पादित पूजी नष्ट भेने पड़ाइन लगल, आ लगलो रहत।

ओना, मिथिलांचलक माटि-पानि-हवाकेँ अनुकूल रहने उर्वर शक्ति तँ छइहे। जइसँ केतबो लोक गामसँ पड़ा देश-विदेशक कोण-कोणमे बसला मुदा अखनो गाम-घरक आवादी सघन तँ अछिए।

गामसँ तीन कोस हटि जुगेसरो नोकरी करै छला आ डेरो बाहरे रखने छला। कारणो छल जे ने अखुनका जकाँ गाड़ी-सवारी छेलै आ ने बान्ह-सड़कक दशा नीक रहइ। शहर-बजार छोड़ि ने पीच (पक्की सड़क) गाम दिस बढ़ल छल आ ने बिजली। मुदा तैयो 1947 ईस्वीक अंग्रेज भगा अपन स्वतंत्र देश बनेबाक विचार तँ जन-जनक मनमे छेलैन्हे। गुलामीक शोषणसँ देशक स्थिति बिगैड़ गेल, जइसँ देशक विकास अवरूद्ध भऽ गेल। स्वतंत्र भेला पछाइत विकासक रास्ता देश जरूर पकड़लक। मुदा तेते असथिरसँ जे आजादीक साठि-पैंसैठ बर्खक पछाइतो जनकेक हरसँ खेतियो होइए आ करीने-ढोसिसँ खेतक पटौनी। जइसँ कृषि-प्रधान देश (जइ देशमे अस्सी प्रतिशतसँ ऊपर आवादी कृषि आधारित अछि) रहितो पाछू पड़ि गेल। किछु पूजीपति सत्ता हथिया शहरे-बजारक विकास धरि देशक अर्थ-बेवस्थाकेँ समेट लेलक। तैसंग ईहो नै नकारल जा सकैए जे जे मिथिलांचलवासी आन-आन देशक उन्नतिमे अपन शक्ति बेच सेवा करै छैथ ओ मिथिलांचलसँ, अपन मातृभूमिसँ आँखि सेहो मूनि लेलैन। ..देशक सत्ता किसानक समस्यासँ हटि जाति-धर्मक एहेन वातावरण बना देने अछि जे

वास्तविक विकासकेँ अवरूद्ध कऽ देने अछि। मिथिलांचलक पानि-माटि आ मौसममे एहेन अनुकूलता अछि जे साइयो रंगक अन-पानि, फल-फलहरी आ तीमन-तरकारीक संग साइयो रंगक चिड़ै-चुनमुनी आ पशु-ले सेहो अनुकूल अछि। मुदा सभ किछु रहितो की अछि, केहेन अछि ओ सबहक सोझहेमे अछि.!

ओना, अठबारे (शनि-रवि) जुगेसर गाम अबिते छला तैसंग पाबैनक छुट्टी आ अनदिनोक छुट्टीमे सेहो गाम आबि जाइ छला। स्थिति सेहो एहेन नै छेलैन जे साइकिलो कीनि सकितैथ। ओना, परिवारो तेहेन नमहर नहियेँ छेलैन। तहूमे अपने अन्तइ रहै छला। जैठाम डेरा रखने छला ओइ परिवारक बच्चा सभकेँ पढ़बै छला। बदलामे भोजन आ रहैक बेवस्था छेलैन। ने बाइली ट्यूशन छेलैन आ ने दरमाहा छोड़ि दोसर कोनो आमदनी। शनिचरा प्रथा समाप्त भऽ गेल छल।

जुगेसरक सासुर मुंगेर जिला। गंगा दियाराक गाम। तीन भाँइक भैयारीमे ससुर जेठ रहथिन। संयोग एहेन जे छोट दुनू भाएकेँ बेटो भेलैन, हिनका (जुगेसरक ससुरकेँ) दूटा बेटीए-टा भेलैन। बहुत बेसी जमीनबला परिवार तँ नहियेँ छेलैन मुदा पच्चीस-तीस बीघा तँ छेलैन्हे। ..भैयारीक सम्पतिक प्रश्न तीनू भाँइमे टकराएल। दुनू छोट भाइक कहब छेलैन- सभ दिन अबैत-जाइत रहती। मुदा से जेठ भाय रमानन्दकेँ मान्य नइ रहैन। रमानन्दक विचार छेलैन जे हम अपन हिस्सा बेटीए-केँ देबइ। ..भैयारीमे जमीन लऽ कऽ विवाद ठाढ़ भेल। छोट दुनू भाँइ विचार केलैन जे किछु हौउ, जमीन तँ गामेमे रहत, ओ तँ ससैर कऽ आनठाम नै जाएत। तखन गामक लोक कीनि लेत आ रुपैया उठा कऽ दऽ औथिन। ..गामे-गाम तँ तीनतसियो चालिक लोक अपन चालि चलैबते अछि। मुदा किछु होशियारी भेल। दुनू भाँइ सौंसे गामक लोककेँ, खास कऽ तीन-तसियाबलाक बैसार केलैन। बैसारमे अपन प्रस्ताव देलखिन जे जखन भैयाकेँ बेटा नहि छैन तखन बुड़हारीक सेवा

अछि से भातीजे सभ करतैन, जइसँ कुलो-खनदानक इज्जत बँचल रहत आ सेवो हेतैन। किए अनेरे बुड़हारीमे ऐ-गाम-सँ-ओइ-गाम वौएता। ..समाजोकेँ जँचल। मुदा रमानन्द सेहो अपने मनक लोक। परिवारसँ समाज धरिक किनको बात सुनैले तैयारे नहि। अकैछ कऽ समाजक सभ दुनू भाँइकेँ कहि देलकैन जे भैयारीक झंझट छी, समाज ऐमे नइ पड़त। मौका पाबि दुनू भाँइ पुछि देलखिन-

“जँ कियो चोरनुकबा जमीन लिखा लथि, तखन?”

जेते गोरे बैसल रहैथ पंच-परमेश्वरक रूपमे रहैथ, अनुकूल विचार देखि अनुकूलतामे भँसि हरे-हरे एक्के शब्दमे बाजि उठला-

“जे समाजसँ बाहर हएत ओ बेटी चो.. हएत!”

बजैकाल तँ सभ बाजि गेला मुदा पछाइत अपनेपर तामस उठए लगलैन जे सस्त चीज हाथसँ निकैल जाएत...। जहिना आगिक ताउपर लोहियाक जिलेबी-कचरी पेनीसँ उठि ऊपर अलैग जाइत तहिना रमानन्द गामसँ अलगए लगला। गंगाकातक गाम जकाँ गामक लोक सोझहे-सोझही रमानन्दकेँ दुतकारए लगलैन। अखन धरि समाजमे अहाँकेँ लोक कोन नजरिये देखैत रहल आ अहाँ की करैपर उताहुल छी? ..मुदा तेकर कोनो असैर रमानन्दकेँ नै भेलैन।

1940 ईस्वीक लगाइतमे रमानन्द मैट्रिक पास केने छला। जइ समय हजारो विद्यार्थी स्कूल-कौलेज छोड़ि आजादीक आन्दोलनमे कुदि अपन सर्वस्व तियाग केलैन। ओही समैयक उत्पादित मनुक्ख रमानन्द सेहो छैथ, अंग्रेजी धुर-झार बजै छला। रेल-तार आदि सरकारी सेवाक केतेको गोरे नोकरी छोड़ि अपन आहुति देलैन।

मध्यम किसान परिवारक रमानन्द। पिताक देख-रेखमे परिवार चलैत, तँए घरक छुट्टा आदमी। एतए-ओतए घुमनाइ आ गुलछर्ड़ा छोड़नाइ जिनगीक काज छेलैन। मुदा जहिना शरीरमे रोगक आगमसँ

धीरे-धीरे शरीरक शक्ति गरसित हुअ लगैत तहिना रमानन्दकेँ परिवारसँ समाज धरिमे हुअ लगलैन। जे भातीज 'बड़का बाबू' कहै छेलैन ओ मुँहपर गारि पढ़ए लगलैन। मनुक्खोक तँ अजीव सोभाव होइत। घनिष्ठ-सँ-घनिष्ठ मित्र जँ कोनो अधला वृत्तिमे फँसि जाइए तखन जे स्थिति पैदा लैत सएह रमानन्दोकेँ भेलैन। समाजक लोक ने कियो दरबज्जापर बैसए कहैन आ ने गप-सप्प करैले तैयार। जहिना खुला जहल होइत तहिना रमानन्दकेँ भेलैन।

भैयारीमे विवाद उठने परिवारमे मोकदमाबाजी सेहो उठल। समांगसँ पातर रहने रमानन्द कमजोर पड़ए लगला। सोझहेमे भाए सभ खेतक जजाति, गाछ-बाँस उजाड़ए-काटए लगलैन।

दुनू भाँइ अबधारि लेलैन जे जेते मोकदमा करता करौथ। थनो-पुलिस आमदनी बुझलक, तँए हिसाब मिला कऽ चलए। दुनू बेटी-जमाए-केँ बजा रमानन्द अपन सभ दुखरा सुनबैत कहलखिन-

"जहिना, हम अपन सभ सम्पैत अहाँ सभकेँ दिअ चाहै छी तहिना तँ अहूँ सभकेँ चाही जे ओकरा बँचा कऽ लऽ जाइ।"

दुनू बेटी-जमाइक बल जहिना रमानन्दकेँ भेटलैन तहिना ओहू दुनू भाँइकेँ समाजक लोक मोकदमामे संग दिअ लगलैन। धीरे-धीरे रमानन्दक मन टुटए लगलैन। एक तँ साठि बर्खक उमेर टपि गेला तैपर कोट-कचहरीक दौड़-धूपसँ लऽ कऽ बेटी-जमाए ओइठामक दौड़-बरहा तेते बढ़ि गेलैन जे गामसँ बेसी अन्तइ गुजरए लगलैन। ..असगरे पत्नी घरमे सकपंज भेल रहैथ आ रमानन्द अपने वौआइत-वौआइत फिरिसान।

किछु दिनक पछाइत पत्नी अस्सक पड़लखिन। ने दियादवाद आ ने गामक कियो एको बेर पुछाइर करए आबैन दुनू बेटियो-जमाए लगमे नहि, मधुबनी जिलाक गाममे। ने उचित समैयपर डॉक्टरी देख-भाल होनि आ ने दवाइ-दारू। किछु दिनक पछाइत मरि गेलखिन। ..पत्नीक

मुइला पछाइत रमानन्दक जिनगी आरो जटिल भऽ गेलैन। गाममे जखन रहैथ तखन भानसो-भातक ओरियान अपने करए पड़ैन। आमदनी सेहो भाए सभ रोकि देलकैन। अन्ना-गाँहिस देखि, पछाइत दुनू जमाइयो अपन-अपन हाथ-मुट्ठी सक्कत केलैन। फटो-फनमे रमानन्द पड़ि गेला। जिनगीक कोनो सोझराएल बाट देखबे ने करैथ।

जिनगीक अन्तिम पाँच बरख रमानन्दक एहेन बितलैन जेकरा लोक नरकक बास कहै छइ। हारि-थाकि कऽ किछु दिनक पछाइत मरि गेला। जमाइयो सभ आवाजाहीक संग केसो-मोकदमा देखब छोड़ि देलकैन। अन्त-अन्त एकतरफा केस भऽ गेल।

जुगेसरक गाममे दियादीक दोसर परिवारमे वेमात्रेय भैयारीक बीच विवाद उठल। एक माएकेँ एक बेटा आ दोसरकेँ चारिटा। चारू भैयारी मिलि पाँचम भाएकेँ (वेमात्रेय) उपद्रव कऽ गामसँ भगा देलकैन। किछु दिन तँ ओ (पाँचम भाए) सर-सम्बन्धीसँ लऽ कऽ समाजक बीच चक्कर लगौलैन, मुदा किछु हाथ नै लगलैन। अन्तमे खिसिया कऽ पिताक सम्पतिक कागत-पत्र कलक्ट्रीएटसँ निकालि कहि देलखिन जे अपन हिस्सा घराड़ी तक बेच लेब। बीघाक लगभग हिस्सा पड़ैत रहैन। मुफ्तक माल खाइबला सभ समाजमे रहिते अछि। तीन-चारिटा परिवार खेत लिखबैक विचार कऽ लेलक। मुदा विवाद तँ बीचमे छेलैहे। लेबालक बीच प्रश्न उठल जे जमीन-जयदादक विवाद छी, मारियो-पीट हेबे करत आ थाना-फौदारी सेहो हेबे करत। ने मारिक ठेकान अछि आ ने केते दिन झंझट रहत तेकर ठेकान। तँए दुनूकेँ नजैरमे रखि लेन-देन करब।

..तहिना जमीनबलाक (पाँचम भाय) बीच प्रश्न उठल जे जँ सस्तमे लिखि देबै, तइसँ लाभ की हएत? तखन तँ नीक अछि जे अपने भैयारी सभ खाथि। कम-सँ-कम एक परिवारक तँ छैथ। मुदा चाइलो देनिहारक तँ कमी नहियेँ अछि। ..उनटा-सीधा मंत्रक तेते डाकैन पड़ल

जे बैहरा कड़कड़ेतक बीख जकाँ निच्चाँ मुहेँ ससरल।

अन्तमे फरियाएल जे अधिया दाममे खेत लिखबैले तैयार भेला। बेचनिहारकेँ (पाँचम भाएकेँ) तेते चारू भाँइ गंजन केने जे तामस कमबे ने करैत। होइत-हबाइत अधिया दाममे जमीनक लेन-देन भऽ गेल। ओही लेबालमे एकटा जुगेसरो। मुदा संयोग नीक रहलैन जे जुगेसर अपने स्कूलक नौकरी दुआरे बाहरे रहैथ तही बीचमे गाममे दोसर लेबालक संग मारि उठल। जबरदस मारि भेल। दुनू दिस कपार फुटल, बाँहि टुटल। सौंसे गाम सना-सनी पसैर गेल। अनेको भागमे समाज विभाजित भऽ गेला। किछु गोरे खुलि कऽ दुनू पार्टीकेँ केसमे गवाही दइले तैयार भऽ गेला। किछु गोरे मारियोमे संग देलकैन। किछु गोरे बेकतीगत पूजी देखि अपनाकेँ दुनूसँ अलग रखलैन। मुदा समाजोक लत्ती तँ एहेन सकबेधने अछि जे नहियोँ विचार भेने परिस्थितिवश मजबूरीमे 'हँ' कहए पड़ै छइ। सेहो भेल। तेतबे नहि, लत्तीक सोरो एहेन अछि जे गामोमे लोक सासुर-मातृक ठाढ़ कऽ लइए।

ओही झंझटमे जुगेसर आठ कट्ठा जमीन किनैक विचार केलैन। ओना, दुनू परानीक विचार भेलैन जे मुनेसरकेँ ऐ जमीनमे संग नै करब। मुदा परिवारक तँ विधिवत बँटबारा भेल नै अछि तखन जेठ भाय छिऐ, छोट भाइक हिस्सा तँ भइये जाएत। तँए कहि देब जरूरी अछि। जँ अदहा खर्च देत तँ ठीके छै, नइ तँ अपन दोख तँ मेटा लेब।

ओना, एहेन विचारक पाछू पेटमे ईहो रहैन जे मुनेसरक आमदनी तेतबे छै जे कहुना कऽ परिवार चलै छइ। तखन रुपैया केतए सँ आनत। तैबीच मनमे ईहो जे गुप-चुप दाम भेल अछि किने, बढ़ा देबइ। कहुना (अधिया दाम भेने) चारि कट्ठा तेफैसला खेतक भैलू कम नइ भेल। पोस्ट कार्डक माध्यमसँ जुगेसर मुनेसरकेँ जनतब देलखिन। स्कूलक दरमाहा तँ जुगेसरकेँ बुझल, मुदा ट्यूशनक आमदनी तँ नै बुझल। तैसंग मुनेसरकेँ पत्नियो विचार देलकैन जे नैहरमे देल बरतन-बासन जे अछि

ओ अनेरे घरमे ढनमनाइत रहैए, ओकरा बेच कऽ जमीन कीनि लिअ...। अखन धरि दुनू भाँइक बीच पहिलुके सम्बन्ध जीवित छल। मुनेसर अदहा खर्च दइले तैयार भऽ गेलखिन। जमीनक रजिष्ट्री जुगेसर दुनू भाँइक नाओंसँ करा लेता।

अपन कमजोर पाशा देखि जुगेसर दुनू परानी विचार केलैन जे नीक हएत बेटा नाओंसँ जमीन लिखाएब।

मुनेसरकेँ कोनो पता नहि। तइ समय रजिष्ट्रियो ऑफिसमे अखुनका जकाँ नै छल जे लिखौनिहारोकेँ उपस्थित रहए पड़ैत। कियो केकरो नाओंसँ जमीन लिखा सकैए। तैसंग पान-सात बर्खक पछाइत दस्ताबेज भेटै छै, ताबे बातो पुरनाए जाइत। तहूमे कागतक खोज जखन हएत तखन ने आ जँ नै हएत तँ के बुझत...। ने भिनौज भेल अछि आ ने खेती-पथारी बँटल अछि। तखन तँ गाममे रहै छी जेना-तेना जनक हाथे खेती कऽ लइ छी। बात खुजबे ने करत, तँ मुहाँ-ठुट्ठी आकि हल्ला-फसाद हएत किए। जहिया भीन हएब तहिया बुझल जेतइ।

अनुकूल विचार बुझि जुगेसर अपना बेटाक नाओंसँ आठो कट्ठा जमीन लिखा लेलैन। जे पछाइत दुनू भाँइक बीच विस्फोटक भऽ गेल।

किछु सालक पछाइत रजिष्ट्रीक भेद खुजल। भेद खुजिते दुनू परिवारमे, माने दुनू भाँइमे अनोन-विसनोन शुरू भेल। दू तरहक अनोन-विसनोन उठल। एक तरहक भेल मुनेसर दुनू बेकतीक बीच आ दोसर तरहक भेल जुगेसरक बीच।

..जुगेसरक पत्नी पिताक सम्पतिक खेल देखि चुकल छेली जे अछैते हिस्से हिस्सा नै भेलैन। तँए पतिपर दवाब बनौने जे जे भेल से नीक भेल, माने बेटा नामे रजिष्ट्री नीक भेल। मुदा जुगेसरकेँ सद्य: भाइक संग बेइमानी आ समाजक बीच दोखी हेबाक डर मनमे नाचए लगलैन। मुदा बेटो जुआन भऽ गेल रहैन। अपन खास हिस्सा बुझि

ओहो माइयेक पीठपोहू बनल। तहिना दोसर दिस मुनेसर अपन आमदनी देखि सबुर करैत। आमदनियो नीक बनि गेल रहैन। स्कूलकेँ सरकारीकरण भेने नीक दरमाहा, तैसंग ट्यूशनो फीस बढ़ने अधिक आमदनी आ तैपर सँ राँचीक मकानक भाड़ा सेहो जोर दैत रहैन। मुदा साधनाक भूख आरो उग्र भऽ गेलैन। तहूमे अपन बाप-माइक देल बरतन-बासन बिकाएल रहैन। ..दुनू परानीक बीच खुलि कऽ मतभेद शुरू भऽ गेल। गप-सप्पक क्रम एना भेलैन। मुनेसर पत्नीकेँ बुझबैत कहलखिन-

“देखियौ, राँची सन शहरमे अपन मकान भऽ गेल, गाममे रहैक कोनो प्रश्ने ने अछि। तखन तँ वएह खेतियो करै छैथ, खेबो करता।”

मुनेसरक विचारकेँ कटैत साधना अपन अर्थशास्त्रीय तर्क देलखिन- “जखन गाममे नइ रहब तखन गामक पूजीकेँ मार पूजी किए बनौने रहब। ओकरा बेच कऽ बैंकमे जमा कऽ लेब तैयो सूदि औत। नइ जँ घरे आरो बना लेब तैयो भाड़ा एबे करत।”

पाशा बदलैत मुनेसर तर्क देलखिन-

“बाप-पुरखाक जँ घराड़ीए बेच लेब तखन कोन मुँह लऽ कऽ जिनगी जीब, कोनो कि पेट जरैए जे बेचब।”

होइत-हबाइत ई भेल जे गामक खेत भरना लगा बैंकमे जमा कऽ लेब। मुदा विवाद तँ बीचमे भैयारीक रहबे करैन।

किछु दिनक पछाइत दुनू परानी गाम आबि अपन डीह-डावरसँ लऽ कऽ बाध धरिक बँटबारा करैक विचार जुगेसरक सोझहामे रखलैन।

..जुगेसरो विवादी जमीन, जे रजिष्ट्री भेल रहए छोड़ि सभ किछु बँटैले तैयार भऽ गेला। नइ मामासँ कनहा मामा नीक। विवादी जमीन छोड़ि मुनेसर बाँकी बाँटि लेलैन।

हरिहरक भैयारीमे अढ़ाइ कट्ठा घराड़ी। जे बँटाइत सबा छह

धूरपर आबि गेल।

जइ समय सुलोचना सासुरसँ नैहर आएल छेली ओ समय देशक आन्दोलनक तूफानी दौड़ छल। सन् 1942 ईस्वीक दमनचक्र प्रारम्भ भऽ गेल छल। परोपट्टाक लोक अंग्रेजी हुकुमतक खिलाफ सड़कपर उतैर गेल छल। गोरा-पलटनक अड्डा झंझारपुर बनल छल। केतेको गाममे आगि लगौल गेल। केतेको गोरे भूमिगत काज करै छला। केतेको गोरे मारि खा-खा जहलमे बन्न छला। मुदा लाजी बात ईहो रहल जे ऐठामक केतेको परिवार गोरा सरकारक संग देलक! रहै-खाइक बेवस्थाक संग-संग सम्पतिक लूट सेहो केलक!

ओना, गाममे सुलोचना बहिन सन केतेको गोरे छैथ जे सासुरसँ भगौल छैथ। अपन माए-बाप, भाए-भौजाइक संग सेहो रहै छैथ आ असगरो बोनि-बुत्ता कऽ जीवन-यापन सेहो करै छैथ! किछु गोरेकेँ सन्तानो छैन आ किछु गोरेकेँ नहियोँ छैन।

अदौसँ एक पुरुष आ एक नारीक सम्बन्धक विधानो आ बेवहारो तँ बनल रहल मुदा परिवारकेँ आगू बढ़ैले किछु कमियोँ तँ रहबे कएल। ओ कमी अछि- मनुक्खक शरीरक बनाबट। सभ सरीरक बनाबट समान नइ होइए। बहुलांशमे सन्तानोत्पत्तिक शक्ति समान रहैत आएल अछि तँ तैसंग कमी-बेसी सेहो रहल अछि। केतौ कोनो पुरुखमे शक्तिक कमी तँ केतौ कोनो महिलामे। तहिना केतौ कोनो पुरुखमे बेसी रहल अछि तँ केतौ कोनो महिलामे। ओना, शक्तिहीन पुरुख रहने क्षेत्रज सन्तानक चलैन सेहो रहल अछि। मुदा शक्तिहीन नारी भेने तँ परिवारकेँ आगू बढ़ैमे बाधा उपस्थित भइये जाइए। तैठाम दोसर नारीक सहारा जरूरी भऽ जाइ छइ। जँ से नै हएत तँ परिवारक अन्त हएत। अन्ते नइ हएत बुड़हारी आ बेमारीक अवस्था सेहो कष्टकर हएत। मुदा आवश्यक आवश्यकता तखन अराम आ विलास दिस बढ़ैए जखन भोग-विलासक मनोवृत्ति जोर मारै छइ। जइक चलैत समाज-

परिवारमे विकृतताक रूप पकड़ैए। से भेल। समाजक अगुआएल (खास कऽ आर्थिक रूपेँ) आ मध्य वर्गीए परिवारमे सेहो एक-सँ-अधिक बिआह करब नीके जकाँ चलैनमे छल। जइसँ एक पुरुख एक नारीक प्रथापर जबरदस चोट पड़ल। मुदा केतबो जबरदस चोट किए ने पड़ल, तैयो सोलहन्नी नष्ट नइ भेल। ओना, निम्न वर्गमे सेहो बेमारी पैसल मुदा दोसर रूपमे। ओना, राजशाही बेवस्थामे ऊपर-सँ-निच्चाँ धरिक किछु परिवार जोड़ाएल छल, तइ परिवारक बीच भोगी-विलासी मनोवृत्तिक परिणाम छल, जखन कि गरीबमे पेटक दरद कारण भेल। एहेन पुरुखोक संख्या कम नहि जे 'कामचोर', 'आलसी', 'नशाखोर' इत्यादिक कारणेँ पत्नीकेँ नै रखि पबै छल। नइ रखैक माने ई जे पत्नीक भरण-पोषण नै कऽ पबै छल। मुदा सेहो सोलहनी नइ भेल। एहेन बहुतो महिला छेली जे पुरुखे जकाँ श्रम करै छेली। जिनका मनमे पतिक प्रति असीम श्रद्धा आ मजगूत संकल्प छेलैन, जे अपन जिनगीक सभ सुख पतिमे अरोपि नेने छेली।

एकसँ अधिक बिआह करैक रूप दिनानुदिन बदतर होइत गेल। अनेको रंगक कुत्सित रोगक जन्म होइत गेल। पुरुखोक विचार एते घिनौना रूप पकैड़ लेलक जे दर्जनक-दर्जन बिआह करए लगला। तैसंग ईहो भेल जे पुरुखक उमेरोक ठेकान नै रहल। जे उमेर बिआहक नहियोँ छल तहू उमेरमे बिआह करए लगला। जइसँ अपने किछुए दिनक पछाइत मरि जाइ छला आ जुआनीए-सँ महिला वैधव्य रूपमे बदैल जाइ छेली। विधवा जिनगीक बीच एहेन परिस्थिति पैदा लऽ लइ छल जे समाजक रोग बनि गेल। ओना, नारीक प्रति पुरुख सोल्होअना अन्याये केलैन सेहो नहि। पुरुख-नारीक बीच दुनू तरहेँ रोगक प्रवेश भेल। केतौ बलक प्रयोग भेल तँ केतौ पुरुख-नारीक बीचक आंगिक सम्बन्ध सेहो भेल।

प्रश्न उठैत जे अदौक परम्परा (वैदिक परम्परा) पर एते भारी चोट

पड़ल आ सभ पुरुख-महिला मुँह देखैत रहि गेला! ऐठाम ईहो बात देखए पड़त जे ने सभ गामक एक रंग चालि-ढालि, खान-पान, बात-विचार अछि आ ने सामाजिक विकासक प्रक्रिया एक रंग अछि। एक रंग नइ होइक अनेको कारण अछि। एक तँ समाज छोट-छोट राज्यमे विभाजित छल। जइ तरहक राज्य छल ओइ तरहक रजो छला। ओना, मिथिलांचल सेहो केतेको जमीन्दारीक संग राज्योमे विभाजित छल। सभकेँ अपन-अपन शासनक संग सामाजिक बेवस्थो संचालित करैक अलग-अलग ढर्ड़ा छेलैन। ओना, क्षेत्रक हिसाबसँ सेहो अन्तर छेलैहे। खान-पानक संग उपारजन करैक सिस्टमोमे अन्तर पहिनौं छल आ अखनो अछि। अखनो एहेन क्षेत्र अछि जैठाम ने बाढ़ि कोनो काट-छाँट केलक आ ने बलुऔलक, जइसँ ओइठामक खेत-पथार आकि बास भूमि प्रभावित भेल। मुदा एहनो क्षेत्रक कमी नहि, जैठाम उपजाऊ भूमि धारो बनि गेल आ बाउलोसँ भरि गेल अछि।..जे कहियो सुन्दर गाम (बासक हिसाबे) छल ओ उजैड़ गेल। बिनु अन-पानिसँ मनुक्ख जीब केना सकैए? ई तँ प्रश्न तहियो छल आ अखनो अछिए।

एकटा आरो भेल। ओ ई जे जैठाम पुरुख-नारीक बीच परिवार ठाढ़ भेल ओइठाम पुरुख प्रधान बेवस्था रहने अनेको तरहक अबलट लगा नारीकेँ घरसँ भगौल गेल। केकरो ‘सन्तानोत्पत्ति शक्तिक अभाव, तँ केकरो ‘चरित्रहीन’ कहि इत्यादि-इत्यादि, अबलट जोड़ि घरसँ अलग कऽ देल जाइ छल आ अखनो कऽ देल जाइए।

गामक समस्या (भाइक बेवहार) दुनू परानी मुनेसरक सम्बन्धमे खाधि बनबैत गेल। दुनू भाँइक भिनौजी सुलोचनाकेँ सेहो बाँटि देलकैन। एते दिन सुलोचना दुनू भाँइक बीच छेली मुदा भीन भेने जुगेसरसँ हटि मुनेसरक संग भेली। जुगेसर मुनेसरक खेती छोड़ि देलकैन।

भाइक खेती छोड़ने खेतीक समस्या मुनेसरकेँ उठलैन। कारणो

स्पष्टे अछि। अपने दुनू परानी बाहरे रहितो छला आ गामक आवाजाही सेहो नहियेँ जकाँ छेलैन। गाममे नइ रहने माले-जाल केना पोसि सकितैथ, जइसँ खेती करितैथ। ओना, बाहरोमे दुनू बेकती मुनेसर एकठाम नहियेँ रहै छला। बाल-बच्चाक संग साधना राँचीमे रहितो छेली आ हाइ-स्कूलमे नोकरियो करै छेली आ मुनेसर असगरे पलामूमे रहै छला। एक तँ दुनूक दूरी अधिक अछि दोसर जँ स्कूलमे छुट्टियो होइ छेलैन तैयो ट्यूशन रहिये जाइ छेलैन, तँए राँचियोक आबाजाही कमे-सम्म रहै छेलैन। जिनगीक दूरी विचारोक दूरी बनौने रहलैन। जैठाम साधनाकेँ अपन परिवारक चिन-पहचिनमे कमी छेलैन तैठाम मुनेसर भैयाक आगू जमीनकेँ गौण बुझै छला।

स्पष्ट रूपेँ दुनू परानीक बीच मुनेसरकेँ मतभेद होइत गेलैन। अपन हक-हिस्सापर साधना अड़ली तँ मुनेसर आगू बढ़ैसँ हिचकिचाइ छला। होइत-हबाइत भेल ई जे दुनू गोरे एक दिन निर्णय-ले तैयार भेला। दुनूक बीच प्रश्न-उत्तर एना भेलैन।

साधना-

“जखन खेत किनैमे अदहा खर्च भैयाकेँ देलिऐन तखन ओ किए अपना बेटा नामे जमीन लिखा बेइमानी केलैन?”

साधनाक मजगूत तर्कसँ मुनेसर सहैम गेला। मुदा अपनाकेँ उदार बनबैत उत्तर देलखिन-

“भैया जँ बेइमानीए केलैन तइसँ हमर की बिगड़ल?” ❑

दोसर पड़ाव

जुगेसर आ मुनेसरक बीच मरौसी जमीनक बँटबारा भऽ गेलैन। मुदा हालमे किनलाहाक नइ भेल। दुनू भाँइक बँटबारा सुलोचना बहिनकेँ सेहो बाँटि देलकैन। सुलोचना बहिन मुनेसरक संग भेली।

जमीन बँटैलासँ खेतीक समस्या उठल। जुगेसर एकटा बरद रखि भजैती हर बना अपन खेती करए लगला आ मुनेसरकेँ खेत तँ भेलैन मुदा खेतीक कोनो समचा नहि। अपनो आ परिवारो बाहरे रहैत।

'खेतक बँटबारा' एकटा नमहर समस्या ठाढ़ कऽ देलकैन। समस्या ई जे मध्यम परिवारमे खेतक बँटबारा दू ढंगसँ होइए। पहिल जे खेते-खेते आड़ि नहि दऽ खेते-खेत बाँटि लेलौं। तइ बँटैमे गोटे-आधे खेतमे आड़ि पड़ैत नहि तँ खेते-खेत बँटा जाइत। दोसर ई जे छोट-खेत रहह आकि नमहर खेते-खेत बँटाएल। ओना, दुनू बँटबारा रोगाएले अछि। एक रोगाएल अछि जमीनक उर्वराशक्ति आ जमीनक किस्मसँ, जेना- एके गामक एक बाधमे नीच, मध्यम आ ऊँच खेत होइए। नीचरस खेतमे पानि बसने माने अधिक दिन तक पानि रहने एकेटा उपजा भेल। तेकरो कोनो निसचित बिसवास नहि। किएक तँ जँ अगते नमहर बरखा भऽ गेल तँ खेते नहि आबाद हएत, दोसर आबाद भेलो पछाइत पानिक कोनो ठेकान नइ होइ छै जँ अगते डुम्मा बरखा भेल तँ रोपलोहो डुमि गेल। जइमे लगतो डुमि गेल, उपजाक कोनो चरचे नहि। मुदा मध्यम खेतमे गिनती हिसाबसँ उपजो बेसी आ नीक फसिलो (जेना धानेमे हल्लुक धान, सतरिया-तुलसीफूल) होइत...। एहेन ठाम समस्या उठबे करत। तैसंग ऊँच जमीनमे गाछियो-कलम लगैत आ

बरसाती तरकारी सेहो होइत, जे मध्यम आ नीच खेत-ले सम्भव नहि। तहिना दोसर तरहक बँटबारामे ई समस्या उठैत जे एक बीघा खेतक टुकड़ा तीन पीढ़ी जाइत-जाइत बीघासँ कट्ठामे उतरैत धूरमे पहुँच जाइए। जेना पहिल पीढ़ी जँ चारि भाँइक भैयारीक रहल तँ बीघा पाँच कट्ठामे बँटाएल, दोसर पीढ़ी जँ चारि भैयारीक रहल तँ एक-कट्ठा पाँच धूरमे बँटाएल आ तेसर जँ दूओ भाँइक भैयारी रहल तँ साढ़े-बारह धूर भेल। खाएर जे हौउ, मुदा समाज दुनूक संग न्याय केने अछि। दुनू प्रथाक गाम-गाममे चलैनो अछि आ सभ मानितो अछि।

जुगेसर मुनेसर झगैड़ कऽ बँटबारा केलैन, खेते-खेत आड़ि पड़ल जेइसँ खेतक नक्शा तेहेन बनि गेल जे हरक जोत कोदारिपर चलि आएल। जँ एक दिस नमहर-नमहर ट्रेक्टर खेत जोतए आबि रहल अछि तँ दोसर दिस खेत खँताइत-खँताइत तेते छोट भऽ गेल जे ट्रेक्टर अँटबे ने करत तँ जोतत कथी। बेल पकने कौआकेँ कोन लाभ। ओना, समाजमे दू रंगक बँटेदारो अछि। एक ओ जे अपन हर-बरद रखि अपने हरबाहि कऽ बँटाइ खेत जोतैए, जेकरा थोड़-थाड़ खेत अपनो रहल आ दोसरो भेल। किए तँ, आजुक ओहन खेती बनि रहल अछि जे एक-फसिला नहि बहु-फसिला बनने खेतक जोतो बढ़ि जाइए। बरहमसिया खेती सेहो भऽ रहल अछि। बरहमसीए खेती कृषिक उन्नतिक चोटीक सीढ़ी भेल। बारहो मास खेती भेने, पर्यावरणविद् सभकेँ अनेरे ऑक्सीजनक साँस भेटतैन। ..दोसर तरहक बँटेदार ओ भेल जे अपने बोइन करैए आ किछु खेतियो करैए। मोटा-मोटी ओ सभ कोदारिसँ खेती करैए।

दुनू भाँइक बीच बँटबारा भेला पछाइत मुनेसरक मनमे रहैन जे खेतक देखभाल बहिन करती आ भैया खेती करता, उपजाक हिस्सा बहिनकेँ देथिन। मनमे रहैन जे बहिन तँ दुनू भाँइक छी, जँ ओहू लाथे अपन सहयोग बुझि सोल्होअना उपजा दऽ देथिन तँ हुनको गूजरमे

सुविधा हेतैन। मुदा झगड़ाक बीआ पहिनहि सुलोचना बहिन रोपि लेलैन। रोपि ई लेलैन जे खेत किनला पछाइत मुनेसर दिससँ बाजि गेली जे 'जखन दुनू भाँइ अदहा-अदहा खर्च दऽ खेत कीनलक तखन हिस्सा किए ने हेतइ।' ..अपना मुहेँ वेचारी एक भाँइसँ दूर आ दोसरसँ लग चलि एली। जुगेसरोकेँ सरकारी मान्यता भेटने दरमहो बढ़लैन जइसँ घराड़ी कीनि पजेबाक घरो नीक जकाँ बना लेलैन। सुलोचना बहिन सबूर केली जे जखन सीता महरानी जाबे जनकपुरमे रहली ताबे बेटीए रहली (बेटीक महत परिवारमे कम होइत) आ जखन राजगद्दी बेर एलैन तखन बोने गेली आ बोनोमे पति-दिअरसँ बिछुड़ि लंका गेली। तँए की ओ रावणक राजधानीमे रहली? नहि, पुष्पवाटिकामे रहली! ..तहिना हमहूँ रहब।

खेत बँटाइ करैसँ जुगेसर पाछू हटि गेला। तेहेन-तेहेन बँटेदार भेलैन जे समयपर खेतीए ने कऽ पबै छल। जइसँ उपजा बेठेकान भऽ गेल। मुदा सुलोचना बहिन अपन बाप-दादाक डीह धेने रहली।

डिफिसिट ग्राण्ट स्कूलकेँ भेटने मुनेसरोक दरमाहामे बढ़ोतरी भेलैन। तैसंग नीक शिक्षक भेने (पढ़बैमे नीक) ट्यूशन सेहो बेसिया गेलैन। जइसँ आमदनीमे नीक बढ़ोतरी भऽ गेलैन। राँचीमे अपन घरो बना नेने रहैथ। गाममे भैयारीक विवाद ठमकल रहल। मुदा दुनू बेकतीक बीचक मुनेसरक दूरी बढ़ैत गेलैन। सोभावसँ दुनू दू तरहक। एकक सोभाव अपन कर्ममे एते विश्वस्त भऽ गेल जे मनमे उठैत, कोन सम्पैत अछि मास दिनक कमाइ भेल बुझब जे मास दिन नहियेँ कमेलौं। तइसँ ई तँ हएत जे समाजोक नजैरमे जीवित रहब आ परिवारक बीच मलिनतो कमत। भैयारीक जे सम्बन्ध अछि ओ बरकरारे रहत। घराड़ी छोड़ने की होइ छइ। हमहूँ तँ गामक के कहए जे आने राजमे घर बनौने छी। मुदा भैयारियो तँ भैयारीए छी।

दू भाँइक बीच दू माए-बापक बेटी सेहो छैथ। दुनू भाँइ ऐ रोगसँ

गरसित। कारणो भेल। कारण भेल जे जुगेसरकेँ सासुरक सम्पतिक लोभ पत्नीक मातहतीमे आ मुनेसर ऐ दुआरे जे एक साधारण किसान परिवारक बेटाक बिआह प्रशासनिक अफसरक बेटीसँ भेल छेलैन। केतबो हाइ-तौबा किएक ने हुअए मुदा एकरा केना नकारि देब जे मिथिलांचलक अधिकांश परिवारमे महिलाक मुँहपुरखी नइ अछि। ई दीगर जे की अछि, केते अछि, केहेन अछि, मुदा परिवारक जुइत महिला हाथमे नै अछि सेहो तँ नहियेँ कहल जा सकैए। ओना, मुनेसर चरित्रकेँ बहुत हद तक संयमित रखला। बेटोकेँ नीक स्कूलमे पढौलैन। अपन कमाइसँ एहेन सबूर भेल मन मानि गेलैन जे जिनगी बड़ भारी नइ होइ छइ। मुदा तैयो गामक सम्पैत-ले दुनू बेकतीक बीच मतभेद भुमहुरक आगि जकाँ सुनैगते रहल। जे से, मुदा सुलोचनो बहिनक देख-रेख तँ करबे करैत रहला। जमीनो तँ जाल छी। जुगेसरकेँ पहिल चारि कट्ठा हाथ लगले छैन, दोसर सासुरक हूसलैन। फेर तेसर दस कट्ठाक जालमे पड़ला। जाल ई जे पाहीपट्टीबला दू भाँइक घराड़ी-वाड़ी मिला दस कट्ठा एकठाम। दुनू भाँइसँ किनैक दाम जुगेसर केलैन। दामो तँइ भऽ गेल। एक भाँइ रुपैआ लऽ रजिष्ट्री कऽ देलकैन। दोसर भाँइ टौहकी लगौलक। दोसर लेबाल पहुँचल। भैयारीक एके जमीनक दाम एक भाँइसँ डेढ़िया दोसर भाँइकेँ भेल। दोसर रामकिसुन अदहाकेँ के कहए जे सोल्होअना खेत दफाइन लेलक। बल प्रयोगमे जुगेसर कमजोर पड़ला। पाछू हटि कोर्ट पहुँचला। केसा-केसी शुरू भेल मुदा जमीन रहल दफननिहारेक हाथमे।

किछु दिनक पछाइत जुगेसरक बेटा जे मैट्रिक पास अछि, ओ एकटा पोस्टकार्डमे बिखैन-बिखैन कऽ गारि लिखि रामकिसुनकेँ पठा देलक। ..पोस्ट ऑफिससँ चिट्ठी भेटते रामकिसुन लोक सभकेँ चिट्ठी देखबए लगल। झाँपल बात, तँए के लिखलक नै लिखलक से प्रश्न उठल। जेकरा गारिक चिट्ठी भेटल ओ शंका केलक जे दोसर किए

लिखत। केकरोसँ झगड़ा नहि। तखन तँ खेत लऽ कऽ झगड़ा जुगेसरसँ अछि ओकरे बेटा लिखलक। जुगेसरक बेटा राधा सेहो गाममे। दुनू गोरेक घरो एकेठाम। तँए सदिकाल एक-दोसरकेँ देखबे करैत। राधाकेँ पकैड़ रामकिसुन खूब मारि मारलक।

गाममे जमीन्दारक जमीनपर अगिलग्गी केस भऽ गेल। अट्ठाइस गोरे केसक मुद्दालह भेला। ओही जमीन्दारक जमीनपर जुगेसरकेँ विवाद फँसलैन। थानाक लहकी गाममे रहबे करइ। घटना भेबो कएल। जमीन्दारो अपन हाथ ससारलक। जुगेसरकेँ अगुआ गौंआँ सभकेँ सेहो फँसौलक। खूब नमहर मोकदमाबाजी भेल। हाइ कोर्ट तक विवाद पहुँचल। मुदा जमीनपर कब्जा जुगेसरकेँ नहियेँ भेलैन।

मुनेसर दुनू परानीक बीच मतभेद कमलैन नहि बढ़िते गेलैन। एक दिन पत्नी डपटैत मुनेसरकेँ कहलखिन-

“अहाँ बुते खेत कब्जा कएल नै हएत तँ हम जा कऽ करब।”

साधनाक उग्र रूप देखि मुनेसर चुप रहला। बजला किछु ने मुदा विवादकेँ आगूमे मर्ड़ाइत देखबे केलैन। तत्कालक गुम्मी तँ किछु दिन विवादकेँ रोकलक मुदा रूकि नै सकल।

फगुआक दिन। मुनेसर सेहो सभतूर पत्नी-बेटा सहित एकठाम भेला। ओना, बेटा आवासीय स्कूल, पत्नी राँची हाइ स्कूल, अपने मुनेसर पलामूमे रहैत तँए चिट्ठीए-पतरीसँ भेँट-घाँट होइत। राँचीक होली, आदिवासी इलाका ढोल-ढालक गनगनी इलाकाकेँ गनगनबैए। मलपूआ खेलहा मुनेसरक परिवार, बैसारीक दिन रहबे करै, साधना-मुनेसरक बीच गप-सप्प उठल। दुनू बेटो लगेमे रहैन। गप-सप्प उठल गामक चारि कट्ठा जमीनक हिस्सा..?

साधना बजली-

“जहिना ओ हमरा नैहरक सम्पतिक भोग नइ हुअ देलैन, तहिना

हमहूँ नै भोग हुअ देबैन।”

पत्नीक प्रहार सुनि मुनेसर तिलमिला गेला। सचमुच वेचारीक नैहरक गहनो आ बरतनो-जात बोहा गेलइ। ..युधिष्ठिर जकाँ मुनेसर पत्नीक प्रहारो सुनैथ आ मने-मन विचारबो करैथ जे भैयारीमे एहेन नहि हेबा चाही। जेठ भाय पिते तुल्य नहि पितृगुरु तुल्य होइ छैथ। जँ सहोदर भाएमे एहेन होइ तँ राम-लक्ष्मणक सम्बन्ध केना बनत? ई तँ सद्य: रावण-विभीषणक भेल.!

एक तँ फगुआक रमकी तैपर मलपूआक सहयोग रमैक कऽ साधना दोहरबैत बजली-

“जँ हमहूँ बापक बेटी हएब तँ सिखा देबैन।”

दुनू बेटा चुपचाप। पितोक दुर्दशा आ माइक रूप देखि अनेरे वौआइत। बड़का बाबू (जुगेसर) हमरा सबहक गरदैन कटलैन आ बाबू किछु किए ने बजै छैथ।

..मुदा मुनेसरक मन जेठ भायक किरदानीपर, पत्नी रणचण्डी भेल छैथ, हमरा रोकने रूकती। परिवारक हिसाबसँ दुनूक (पत्नियो आ भैयो) दूरी अबस्स रहलैन। खान-पान आचार-विचार समाजक रीति-रिवाज, मुदा हम तँ से नै छी। पिता मोन पड़लैन। एके बाप-माइक बेटा दुनू भाँइ छी। आइ जँ नै पढ़ल-लिखल रहितैथ तँ बुझितौं जे अज्ञान-सज्ञानक बीचक बात भेल, कोन रूपेँ निराकरण हुअए ओ सज्ञानक काज भेल। मुदा जैठाम जहिना शिक्षक अपने छी तहिना भैयो छैथ। वृत्तिए दुनू गोरे एके छी तखन एहेन विचार किए मनमे एलैन..? मुदा जेठ भायकेँ केना कहबैन जे भैया अहाँ बेइमानी करै छी। हुनका बेइमान बनने तँ अपने अनेरे बेइमान कहबए लगब। ओ गाममे रहै छैथ, समाजक बीच रहिते छैथ, दरमाहा बढ़ने सुदियो-सबाइक कारोबार करिते छैथ, मुदा हम तँ से नै छी। एहेन जगहपर की कएल जाए। कोट-

कचहरीक आँखि कहियो देखलौं नहि। तहूमे छुटनगर नै छी। नोकरी करै छी, गनल छुट्टी अछि। पाबैन-तिहारक छुट्टीमे कोटो-कचहरीमे छुट्टीए रहै छइ। लगमे नोकरी करैत रहितौं तँ दुनू काज मेल-पाँच करि कऽ सम्हारि लैतौं, सेहो नइ अछि। चौबीस घन्टाक दूरी अछि। एक दिनक काजमे तीन दिन लगत। तहूमे झड़े-झमेल छी, केते समय लगत तेकर कोनो ठीक छइ। बेवस्थित जिनगी टुटि जाएत।

मुनेसरक मनमे मोड़ आएल- मात्र चारि कट्ठा ओहन खेत अछि जेकरा अपने हाथे नै करब। सम्पैतकेँ प्रतिष्ठा बनाएब नेनमति हएत। मुदा पत्नी थोड़े मानती। तैबीच फेर साधना टपैक गेलखिन-

"समय बनाउ, दुनू गोरे चलू। मरि जाएब संगे, जीबैत रहब संगे।"

बेवस भऽ मुनेसर गाम अबैक समय बना लेलैन। स्कूलमे छुट्टीक दरखास दऽ दुनू बेकती गाम चलला। सकरीमे मुनेसर पत्नीकेँ कहलखिन-

"हम मधुबनी-बहिन ऐठाम होइत परसू आएब अहाँ आगू बढ़ू।"

सएह भेल। साधना गाम एली आ मुनेसर मधुबनी गेला।

गाम अबिते साधना चौहद्दी बन्हलैन। तीन-तसिया लोकक कमी नहि। चढ़ा-उतरीक विचार दऽ फील्डपर साधनाकेँ उताइर देलकैन। दोसर दिन भोरे, करीब सात बजे साधना जुगेसरक दरबज्जापर पहुँच गेली।

जुगेसरो दरबज्जेपर रहैथ आ पत्नी-धिया-पुता आँगनमे रहैन। साधनाकेँ देखि जुगेसरकेँ भेलैन जे गाम एली तँए भेँट-घाँट करए एली अछि। आँगन जा सभकेँ भेँट करती। चौकीपर बैसल जुगेसर आँखि खसा लेलैन। साधना दरबज्जाक आगूमे अड़ि कऽ ठाढ़ होइत बजली-

"अहींसँ काज अछि?"

चौंकैत जुगेसर बजला- “की?”

“हमर हिस्सा जे जमीन रखने छी, से बाँटि दिअ।”

जुगेसर बजला-

“कोन जमीन! जइ जमीनमे हिस्सा छेलए से तँ बाँटिए देलौं!”

“जे जमीन कीनने छी, से।”

“ओ तँ राधाक नाओंसँ छै ओइमे अहाँक हिस्सा केना हएत?”

“किनैमे हमर रुपैआ नइ लगल अछि?”

दुआर परहक हल्ला अँगनोमे पहुँचल। अँगनासँ सभ दरबज्जापर पहुँचल। साधनाक प्रश्नक उत्तर सोमनी दिअ लगली-

“अहाँक रुपैआ रहैत तँ अहीं नाओंसँ ने रहितए?”

साधना-

“हम किआँने गेलिऐ जे एहेन गरदैन-कट भैया छैथ जे गरदैन काटि लेता।”

सोमनी-

“अहूँक घरवलासँ बेसी गरदैन कट छैथ?”

“की गरदैन कटने छैन?”

बाता-बातीमे गरमी आबि गेल। चारू गोरे जुगेसर साधनाकेँ मार-मार करैत चारू भागसँ घेर लेलकैन। साधनाक मन मानि गेलैन जे मारि खेबे करब। तइसँ नीक जे पाछू हटि जाइ। पाछू हटैत बजली-

“अखन हम जाइ छी, बारह बजे आबि कऽ फरिछेनहि जाएब।”

जहिना साधना विदा भेली तहिना जुगेसरो सभतूर ठमैक गेला। घुरती बरियाती जकाँ सधनो बजैत आ जुगेसरो सभ परिवार।

दियादी परिवारक जे पुरुष पात्र रहैथ ओ तँ मुँह दाबि लेलैन मुदा स्त्रीगण सभकेँ जेना अगहन आबि गेलैन तहिना गाम-गामक खिस्सा–

पिहानी सधनोकेँ सुनबए लगली आ सोमनियोकेँ।

सभ परानी जुगेसरकेँ बुझि पड़लैन जे दरबज्जापर आबि साधना बेइज्जत केलक! मुदा मनसँ हेरा गेलैन जे जइ साधनाक नैहरक सभ किछु- गहना-बरतन आदि बीकि गेल ओ केना सुपते मने मानि जाएत! अपनो दुनू परानी जुगेसरकेँ सासुरक अनुभव रहबे करैन जे उचित ससुरक हिस्सा चलि गेलैन। कोट-कचहरीमे खर्चो भेल आ भेल किछु नहि, तहिना हेतइ। रधो बुफगर छेलै। पिताकेँ विचार देलक जे जानेसँ मारि देबइ। जिनगी भरि शिक्षक रहितो जुगेसर बेटाक विचारसँ राजी भऽ गेला।

बारह बजे साधना उग्र रूपमे पहुँचली। पहिनेसँ दुनू बापूतक विचार रहबे करैन, अबिते साधनाकेँ पकैड़ लेलैन। हत्याक नीक परियास केलैन मुदा भेल नहि।

हल्ला करैत साधना थाना जा जुगेसरकेँ एरेष्ट करौलैन। मुदा विवादक किछु ने भेल। मुनेसरकेँ मधुबनीए-मे जानकारी भेलैन जे गाममे जबरदस घटना घटि गेल। एहेन परिस्थितिमे सोझहे गाम जाएब नीक नइ हएत। मुदा नहियोँ जाएब तँ उचित नहियेँ हएत। ..असमनजसमे मुनेसर पड़ि गेला।

गाममे नव घटना भेल। ओना, गामक लोक कोट-कचहरी आ जहलक अभ्यस्त जकाँ भऽ गेल छैथ तँए बेसी हल-चल नहियेँ जकाँ भेल। मुदा स्त्रीगणक संग एहेन घटना भेल तँ ई चर्चक विषय बनबे कएल।

साधनाक एक अंगीत अन्धरा ब्लौकमे अफसर। मुनेसर मधुबनीसँ गाम नै आबि अन्धरा पहुँचला। दुनू गोरे विचार केलैन जे गाम जाएब ओते नीक नै हएत जेते साधनाकेँ एतै बजबा ली। आ ऐठामसँ सोझहे राँची चलि जाएब। सएह भेल। चारिम दिन मुनेसर दुनू परानी राँची रवाना भऽ गेला।

दुनू भाँइ- जुगेसर-मुनेसरक बीच चारि कट्ठा जमीनक झंझट बढ़ि कऽ झमटगर भऽ गेल। एक संग मुनेसरक मन चारूकातक ओझरीक बीच एते ओझरा गेलैन जे मनपर भार पड़ि गेलैन। देहमे एकाएकी रोग सबहक आगमन हुअ लगलैन। ब्लड-प्रेसर डायबीटीज एते जोर मारि देलकैन जे इलाजमे जाए पड़लैन। चारूकातक भार ई पड़लैन जे एक दिस जेठका बेटा-रघुनाथकेँ बैंकमे नोकरी आ स्कूलकेँ सरकारी भेने जहिना खुशी भेलैन तहिना पत्नियो आ भाइयोक मतभेद मनकेँ मरोड़ि देलकैन। खुल्लम-खुल्ला पत्नीक विरोध सोझहामे आबए लगलैन। चारि गोरेक परिवार (मुनेसर-साधना आ दुनू बेटा) मे दू पार्टी (विचारधाराक पार्टी) बनि गेलैन। रघुनाथ मुनेसरक बेटे नहि, पढ़ाएल विद्यार्थियो। तैपर बैंकक नोकरी भेने संस्कारोमे बदलाउ चलिये एलइ। संस्कारमे बदलाउ ई जे सामंती संस्कारमे जमीन-जयदादकेँ इज्जत-प्रतिष्ठा बुझि लोक जान गमबैले तैयार भऽ जाइए, मुदा पूजीवादी सोच बनने जमीन-जयदादकेँ पूजी बुझल जाइए। जखन कि प्रतिष्ठा जिनगीक कर्तव्यसँ जुड़ल अछि जइमे माने जेकरा पूर्ति करैमे धनक सहयोग होइ छइ। तँए रघुनाथ चारि कट्ठाकेँ मात्र चालीस हजारक पूजी बुझैत, जे दुनू बापूतक पनरहो दिनक कमाइ नइ भेल। तइले भावो भऽ माए बड़काबाबूकेँ मुँहपर गरियौलक, ई नीक नै केलक। अपनो बाप-दादाकेँ नजैरमे रखक चाही छेलइ, से नइ रखलक! एहेन पढ़ल-लिखल परिवार तखन एहेन काज। ई नीक नै केलक। तैसंग अपन पिताक परिवार (अपन खनदानक) सेहो जनैत। पिताजी दुनू भाँइ शिक्षक छैथ, तइसँ पहिने (पैछला पीढ़ीमे) सेहो दू भाँइ शिक्षके छला। एक गोरे वेदक शिक्षक संस्कृत महाविद्यालयमे दोसर मिड्ल स्कूलमे। खनदानी पढ़ल-लिखल दुनू परिवार (नैहर-सासुर) तैबीच औरत भऽ कऽ एहेन कदम नै उठेबाक चाही। मरदा-मरदी हम सभ बुझितौं। ओहुना तँ मिथिलामे जेठ भायकेँ जेठौंस सम्पैत देबाक चलैनो तँ अछिए। चारि कट्ठा जमीन भेबे

केते कएल! हुनके भातीज भऽ कऽ हम जेते महिना कमाइ छी तेतबो हुनकर कमाइ नै छैन। बेटो सहजे नेते बनि कोट-कचहरी टहैल-टहैल फुकिते छैन, ईहो तँ उचित नहि जे दुनू भाँइमे एक भाँइ तालेबर बनि जाए आ दोसर भाँइ दरिद्र! तखन परिवारक गाड़ी कोन मुहेँ चलत-दरिद्रा मुहेँ आकि तालेबरी मुहेँ? बाल मन रघुनाथक (ओहन मन जेहेन पोखैरक वा पहाड़ी धारक पानि स्वच्छ होइत) बालु छानल पानि जकाँ पिता दिस बेसी झूकि गेल। मुनेसरकेँ पारिवारिक बौधिक संस्कार रहने चारि कट्ठा जमीन-ले भैयारीक बीच मलिनता आबए नै दइक विचार। जइक चलैत पत्नीसँ मतभेद चलिते रहैन। रघुनाथ मुनेसरक पीठपोहू भेल। दोसरो बेटाकेँ नोकरी बैंकेमे रहैन। तीनू बापूत एक विचारक तँए मिलान बेसी। मुदा रहैक दूरियो तँ किनकोसँ किनको कम नहि। साए किलो मीटरपर दुनू बेटो आ पत्नियो अपन-अपन डेरामे रहैत। पुश्तैनी घराड़ीक जे सुगन्ध होइत से दुनू भाँइमे केकरो नहि। जेकरा दू-दूटा घराड़ीपर घर रहतै ओ भाड़ाक घरमे जिनगी बितौत ओकरा-ले घराड़ीक कोन मोल। ओना, मुनेसरो नोकरीसँ पहिने धरि गामेक घर-घराड़ीमे रहला तँए बेसी झुकाउ, राँचीमे जे घरो बनेलैन रहबे केते दिन करै छैथ, तँए गामक झुकाउ राँचीसँ बेसी रहैन।

जहिना नादिमे बान्हल गाए दोसर गाएकेँ थुथुनबैत-थुथुनबैत ठोकरबौ लगैए तहिना परिवारमे साधनाकेँ भेल। कोनो परिवारक घटनाक बात परिवारक गार्जन अपन बाले-बच्चा लग ने राखत, एक तँ छल-प्रपंच विहीन बोध तैपर एके घटनामे माता-पिताक दू विचार!

..साधनाक मन मानि गेलैन जे जहिना पति तहिना बेटो विचारसँ बाहर अछि। ओना, बच्चेसँ राँचीमे रहने साधनाक आकर्षण राँचीसँ बेसी रहैन। तहूमे पतिक कमाइक गार्जनी हाथमे, हाथमे ई जे अपने साधना नव स्कूलक नोकरी करै छेली, जइमे अखन दरमाहा नहि रहैन, ऐगला आशामे नोकरी करैथ। जेहने दरमाहा तेहने ने काजो हएत, तँए

काजक कोनो भारे नहि। राँचीमे जमीन किनैक जखन समय आएल छल तखन मुनेसरक खाली रुपैआक सहयोग रहैन, बाँकी जमीनक दाम-दीगरसँ लऽ कऽ जगह पसिन करब इत्यादि सभ काज साधनाक हाथे भेल। जमीन भाँजपर एला पछाइत नमहर प्रश्न उठल छल। नमहर ई जे एकबेर जे भऽ जाइ छै से भऽ जाइ छइ। नै जँ आगू जमीन लिऔ चाहब तँ एक तँ महगो हएत आ दोसर जमीनो हटि-हटि कऽ हएत, एकठाम नइ हएत। तइसँ नीक जे घर किछु दिनक पछाइतो बनाएब पहिने जमीने नीक जकाँ लऽ ली...। लभगर विचार मानैमे देरी किए लगतैन। दस कट्ठा जमीनकीनि लेलैन।

जमीन किनला पछाइत दस कट्ठामे घर बनाएब धिया-पुताक खेल नहि। पत्नीक दबाबमे मुनेसर दिन-राति मेहनत करए लगला। ओना, मुनेसरक चरित्रक गुण रहलैन जे ओहन खगल समयमे बोर्ड परीछाक काँपी जाँचक चार्जमे रहला। पाइक मोटरीक लोभ देल जानि मुदा कुल-खनदानक टेक पकैड़ अपनाकेँ थीर रखला। दिन-रातिक मेहनत मुनेसरकेँ रोगक घर बना देलकैन। ओना, साधना नीके स्थितिमे रहली। दुनू बेटाक बैंकक आमदनी तँ हाथ अबिते छेलैन।

एक दिन एकाएक मुनेसरकेँ पेटमे दरद उठलैन। डॉक्टर ओइठाम पता चललैन जे पैन्क्रियाजक ऑपरेशन करबए पड़त। तैसंग महिनो बेड-रेष्ट लिअ पड़त। मुदा दरदो तेहेन जे ऑपरेशन नइ करौने जीब नहि सकै छी। खाएर हैदरावादमे ऑपरेशन भेलैन। खर्च नीक भेने प्रगतिमे किछु बाधा तँ पड़बे केलैन। तैसंग आ उमेर बेसी भऽ गेलैन जइसँ रंग-रंगक रोग शरीरकेँ पकैड़िये नेने छैन।

दुनू भाँइ-जुगेसर-मुनेसरक विवाद समाजक मंचपर आएल। जुगेसरक जे बेटा मारिमे केस केने ओ घटना-कर्ताक संग समाजोक लोककेँ फँसा देलैन। केसकेँ ओइ गतिए बढ़ौलैन जे घटनाक परात भने चारि थाना गाममे आबि गेल। हरबिर्ड़ो गाममे भऽ गेल। दौड़ा-दौड़ी

खेहारा-खेहारी जमि कऽ भेल। दू गोरे जहलो गेल। लगले बाँकी मुद्दालहक जब्ती-कुर्की भऽ गेल। जेकर प्रतिक्रिया समाजमे जमि कऽ भेल। मुँहपर जुगेसरकेँ गारि पड़ए लगलैन। मुँह गोड़ैत-गोड़ैत एते गोड़ा गेलैन जे मन मानि गेलैन। जहिना लोक कहै छै अपना गामक गाछी डरौन, आन गामक पोखैर डरौन तहिना तँ हमरोले गाम डरौन भऽ गेल! दिनक के कहए जे रातियो-बिराति निधोख भऽ कऽ गाम अबै छेलौं, मुदा से आब हएत? जेना-जेना जुगेसरक मनमे डर मर्ड़ाइत गेलैन तेना-तेना परिवार प्रभावित होइत गेलैन। तैसंग ईहो भेलैन जे पहिने जे विवादित जमीन चारि गोरे मिलि कीनने रहैथ ओइ जमीनकेँ दखल करैमे मारि फँसि गेल। बाँकी गोरे मारियो खेलैन, मारबो केलैन आ केसोमे फँसला। तइमे जुगेसर बँचि गेला। स्कूलेक समयमे मारि भेल छल। तइमे सेहो फुट-फुटौवैल भऽ गेलैन। ओना, जमीन कब्जा भइये गेलैन। ..फुट-फुटौवैलक कारण ई भेल जे जिनका सभपर केस भेल छल ओ केसक हिस्सा मंगलकैन, जे नहि देने फुटौवैल भेल।

मुनेसरक ऑपरेशन तँ सफल भेलैन, मुदा छह मास अराम करैले डॉक्टर सलाह देलकैन। जीवन-मुत्युक बीच पड़ल मुनेसरक मन छँहोछित भऽ गेलैन। एक अपन कमाइक संग दुनू बेटाक कमाइ देखि ऐगला जिनगी हरिअर बुझि पड़ैन तँ दोसर दिस अपन स्थिति देखि मन कहैन- 'अपन सेवा केना हएत?' पत्नियो पत्नीए छैथ। अकास उड़ैत चिड़ै जकाँ! कमा कऽ हाथमे दियौन आ हुकुम पुरबैत रहियौन तँ बड़बढ़ियाँ नहि तँ अपनाकेँ कपरजरूआक पत्नी कहि डाकैन दैत रहती! ..एक मनुक्ख होइक नाते लाजिमी विचार भेल? ई तँ अपन शक्तिकेँ क्षीण बनाएब भेल। सावित्री-सत्यवान सोझहेमे छैथ। खाएर.., अपन शेष नोकरी आ पेंशनक आशा पत्नीकेँ देखैथ, तँ बेटाकेँ कमासुत बुझि संतोष होनि, मुदा बड़की बहिनक की हएत? वेचारीकेँ अछैते भाइये ने भाए रहलैन आ ने अछैते पतिये पति रहलैन! घरपर ओते

सम्पैत नहि, तहूमे जँ बेचैयोक अधिकार रहितैन तँ किछु बेसियो दिनक आशा होइतैन सेहो नहि। समय रौदियाहे अछि। अपने ओछाइन धेने छी, पाइक कोनो आमदनी नहि। बेटासँ मांगि केना सकै छी, ओकरा की बहिनक खर्च नइ बुझल छै, मुदा तैयो जँ मंगबै आ ओ माएकेँ कहत तँ जेहो किछु दिन जीबैक आशा अछि सेहो चलि जाएत। आइने-अवगरानिसँ लोक जहर-माहूर खाइए।

अपन विचारकेँ अपने मनमे दाबि मुनेसर बहिनकेँ बिसरए लगला।

महिना-दू महिना तँ सुलोचना आशा धेने रहली मुदा पेटक आगि तँ ओहन आगि होइ छै जेकरा मिझबैले लोक आचार-विचार-कुल-खनदान सभ किछु बिसैर जाइए। सुलोचना ओहन परिवारमे जन्म नेने छैथ जइ परिवारक औरतकेँ भूमि-छेदनसँ बर्जित कएल गेल, तँए ओ अपन श्रम बेच केना सकै छैथ। अपन ओहन वाड़ी-झाड़ी खेत नहि जे अपनो-जोकर सागो उपजा सकितैथ। बाधक खेत। ..बेवस सुलोचना गामक टुटली मरैआमे बैस गाबए लगली-

“हे भोलादानी कहिया हरब दुख मोर.!”

चारू दिसक अपन बन्न रस्ता देखि सुलोचना बहिन आगू तकली तँ एकटा घर लगमे बुझि पड़लैन। ओ घर अपन दीदी-पीसाक। पीसाक देहान्त भऽ गेल छेलैन मुदा दीदी ओछाइन पकड़ैपर छेलखिन। गामसँ सटले, करीब कोस भरिपर दीदीक घर। ..बेरू पहरमे सुलोचना बहिन दीदी ऐठामक रस्ता पकड़लैन। सुलोचना बहिनकेँ देखि दीदीक परिवारे नहि, टोल-पड़ोसक स्त्रीगण सभ सेहो लगमे एलखिन। चुपचाप कान लग कनियेँ जोरसँ सुलोचना दीदीकेँ कहलखिन-

“दीदी, भूख लगल अछि।”

सुलोचना बहिनक बात सुनि दीदी बुझि गेलखिन जे रस्तेक

भूखल नहि भुखले घरसँ आएल अछि।

..सुलोचनाक सुन्दर चेहरा टुटल फूल जकाँ मलिन भेल देखि दीदी पुतोहुकेँ कहलखिन-

“कनियाँ, सुलोचना रस्ताक भूखल हएत, पहिने किछु पानि पीबैले दियौ।”

ओहुना गाम-समाजक चलैन अछि जे कियो दरबज्जापर आएल अभ्यागतकेँ पहिने पानियेँ आगूमे दैत अछि। जहिना अपन तहिना मात्रिकक संग मौसी आ दीदीक घर लोक बुझिते नइ अछि ऐछो। जैठाम महिनो दिन रहने कियो नहि चर्च करैत जे बहुत दिन भऽ गेल। तहूमे सुलोचना बहिनकेँ बुढ़ दीदी हाथ लगलैन, सुलोचनेटाकेँ किए दिदियोकेँ तँ एकटा टहलनीक जरूरत भइये गेल छैन। तैसंग परिवारोक भार कम भेने घरोक लोक खुशीए छैथ। सुभ्यस्त परिवार ऐछे खेबा-पीबाक समस्ये नहि। दस गोरेक खोराकीसँ बेसी मूसे खाइ छैन।

सुलोचनाक पिसियौत भाए, हाइ स्कूलमे शिक्षक छैथ। प्रतिष्ठित शिक्षक। जिनगीमे डेरापर कहियो कोनो विद्यार्थीकेँ ट्यूशनक फीस नइ लेलखिन। लगमे सुलोचना बहिनकेँ रहने नजैर पड़लैन। नैहर परिवारक सभ बात सुलोचना-मुहेँ सुनलैन। सासुरक बात किछु बुझलो रहैन। मनमे छगुन्ता भेलैन जे अछैते पतिये वेचारी वैधव्य जिनगी जीब रहली अछि! प्रश्नक जड़ि पकैड़ काज बढ़ौलैन। सुलोचनाक पति दोसर बिआह कऽ नेने रहैथ जइमे चारिटा सन्तानो भऽ गेल रहैन। मुदा सभ किछु होइतो समस्याक समाधान भऽ सकै छइ। मास्सैब गामक दियाद-वादक भाँज सेहो लगौलैन। भाँज लगबैक कारण रहैन जे जँ सासुरसँ समझौता नै हएत तखन तँ दोसर विकल्पक जरूरत अछिए। ऐठाम (अपना ऐठाम) छह मास बरख दिन रहत सएह ने, जिनगी भरि तँ नै रखल जा सकैए। रंग-बिरंगक गप, गप-सप्प क्रममे उठबे करत। दियादवादक भाँज पौलैन जे स्त्रीगण सभ तेहेन छैथ जे सुलोचना

बहिनक गोड़ा नै बैसए देती। अपन जे छैन तहीपर रहि सकै छैथ।

मास्सैबक परियाससँ सुलोचना बहिन सासुर गेली। दोहरा कऽ साठि बर्खक उमेरक पछाइत जहिना जिनगी हारल-थाकल तहिना अपन जिनगी पाँच कौर अन्न आ पाँच हाथ वस्त्रपर अँटका लेलैन। दू बरख सासुरमे रहली। जहिना उमेर बढ़ने विचारोमे बदलाउ अबै छै, से सुलोचनो बहिनकेँ एलैन। मुदा सासुरक जे सिनेह स्त्रीगणकेँ अपन बाल-बच्चाक संग, अपन लगौल वाड़ी-फुलवारी आ घर-दुआर बनौला पछाइत होइ छै, से नै भेटलैन। केतबो सतौत बेटा-बेटी किए ने रहैन मुदा अपना जकाँ तँ नहियेँ मानैत रहैन। तहूमे चेष्टगर सभ भऽ गेल, जे सत्-माए बुझैत। तहिना पतियोक संग रहैन। खाएर जे रहैन.., मुदा दस बीघाक किसान परिवार भेटने सुलोचना बहिन खुशी तँ भेबे केली। परिवारोक सभ बुझैत जे कियो आन थोड़े एली।

सुलोचना बहिनक मन मानि गेलैन जे आब जिनगी असानीसँ कटि सकैए। मरैकाल जे तिरोटो हएत तँ काटि लेब। काटि की लेब जे ओ तँ एहेन कष्टे होइ छै जे लोक मरिये जाइए। मुदा से अखन बहुत दूर अछि। अखन तँ तेहेन थेहगर छी जे पचीस-तीस बरख जीबे करब। एक दिनक जिनगी तँ लोककेँ पहाड़ होइ छइ...। सासुर एला पछाइत सुलोचना बहिनकेँ सभसँ खुशी ई भेलैन जे अछैत पति जे जिनगी बनि गेल छल ओइमे एकाएक बदलाउ आएल। ओना, वैधव्यक सीमा नै अछि। मुदा थोड़-दिन आकि बेसी-दिन बारह-सँ-चौदहअना महिलाकेँ ऐ जिनगीसँ गुजरए पड़ै छैन। मुदा सबहक जिनगी की एक समान थोड़े होइ छइ। समाजो तँ समाजे छी, एक दिस वैधव्यक मुँह देखि केतौ जाएबकेँ अशुभ बुझैए तँ केतौ शुभ बुझैए। विधवाक जिनगियो तँ तहिना होइ छइ।

पति विहीन पत्नीक, पुरुष बिनु नारीक, दू रूप समाजक बीच अछि। एक पतिक मृत्यु भेला पछाइत आ दोसर जीवितोमे छोड़ला

पछाइत। ओना, उमेरो आ विकासोक (परिवर्तनोक) हिसाबसँ वैधव्य जीवन अनेको रंगक अछि, मुदा से नहि, मोटा-मोटी जिक्र अछि।

आजुक नजरिये बीस बरख वा ओइसँ ऊपरक हिसाबमे बिआह हुअ लगल अछि। ओना, ई विषमता तँ अखनो ऐछे जे सभ परिवारक कन्यादानक एके उम्र नइ अछि। पढ़ल-लिखल अगुआएल परिवारमे जैठाम डॉक्टर, इंजीनियर वा अन्य एहेन डिग्री प्राप्त केलाक पछाइत बिआह होइए तँ ओतै नोकरीकेँ अधार बना नोकरीक पछाइत बिआह सेहो होइए जे समैनुकूल सेहो अछि। बिआहक साल भरिक एहेन प्रक्रिया बनि गेल अछि जे बेर-बेर आवाजाही आ बेर-बेर बिआहक प्रक्रियाक काज होइते रहैए। मधुश्रावनी, कोजगरा इत्यादि नजैरपर अछिए।

अध्ययनक बीच बेवधान उपस्थिति होइते अछि। जइसँ गनल कुटिया नापल झोड़ जकाँ कोर्सक (पढ़ाइक सिलेबस) तैयारीमे कमी अबिते अछि। तेतबे नहि, ई जिनगीक ओहन मोड़ छी जैठाम आबि वैचारिक रूप वौद्धिक रूपमे बदलए लगैत। रंग-रंगक किस्सा-पिहानीक संग जिनगीक ओहन मनोहर रूप दृष्टिगोचर होइत अछि, जइसँ किछु-ने-किछु धक्का लगिते छइ। एक दिस जिनगीक ओहन मोड़पर जैठाम पहिल सीढ़ीक टपान अछि, जे ऐगला पिछड़ाह सीढ़ीमे ठाढ़े-ठाढ़ टपि जाएत आकि पिछैड़-पिछैड़ खसैत-पड़ैत टपत आकि पिछैड़ कऽ तेना खसत जे उठिए ने हेतइ।

दोसर तरहक परिवारमे जइमे हायर एजुकेशन नै छै बेटा-बेटीक बिआहकेँ पारिवारिक संस्कार मानि निमाहब अनिवार्यक संग समैयोपर आ समयसँ पहिनौं करए चाहैए। कारणो छै जे अबैत परम्परामे बिआह चाहे जइ उमेरमे होइ (बच्चासँ सियान धरि) मुदा सन्तान समैयेपर होइए। समयपर आकि समयसँ पहिने करब सकारात्मक विचार भेल। एहेन परिवार आकि ऐसँ पछुआएल परिवारमे बाल-बिआहसँ लऽ कऽ

पनरह-सोलह बरख धरि बेटीक बिआह अछिए। बच्चामे बिआह नीक नहियेँ अछि। मुदा नीक किए ने अछि? ई बात सत् जे पानिमे कोनो चीजक (अन्न आकि तरकारी) बीआ देब पानिमे फेकब भेल। मुदा की पानिमे उपजैबला (मखान, सिंगहार) केँ फेकब कहबै?

बेटा-बेटीक बिआह माता-पिताक अनिवार्य काजक रूपमे समाजमे अखनो ठाढ़ अछि, जे उचितो अछि। गरीबीक चलैत जइ परिवारक जिनगीक कोनो भरोस नै छइ। राजरोग की गरीब घरमे नइ होइ छै, जँ से हेतै तँ इलाज करा पौत? तेतबे किए, किसान प्रधान गाममे, की गामेक किसानक सभटा खेत गामक छैन आकि आनो गामक किसानक छैन जे अधिक खेतबला किसान सभ छैथ। खेतीक उचित खर्च केलो पछाइत उपजौनिहारक (गौंआँक) हिस्सा केते होइ छैन? जइमे चाहे माल-जाल पोसब हुअए आकि अन्नक खेती, उपजाक अदहासँ बेसी लागत लगै छै तैठाम अदहा आकि अदहोसँ कम उपजौनिहारकेँ भेटने की लाभ हेतैन?

एहेन जइ समाजक स्थिति अछि तइ समाजमे जिनगीक भरोस मात्र सीताराम करब छोड़ि आरो की हएत! ..एहेन परिस्थितिमे जँ माए-बाप अपन पान सालक बेटा-बेटीक भारकेँ उताइर लइ छैथ तँ की अधला भेल?

ओना, विधवा विधानकेँ सामाजिक विधान नै मानल जा सकैए मुदा समाजक बीच बेवहारमे नै अछि एकरो नकारल नै जा सकैए। किछु खास परिवारक बीचक ओहन समस्या ऐछे जेकरा एक्कैसमी सदीमे अंगीकार करब नामर्दगीक अतिरिक्त आरो किछु ने छी, खाएर जे छी से छी मुदा सामाजिक समस्या तँ छीहे। बारह-चौदह बर्खक कन्या जँ वैधव्य होइ छैथ तँ हुनक जिनगी केहेन हौउ ई तँ प्रश्न अछिए। ओ उमेर ओहन उमेर होइ छै जेकरा बसन्ती हवासँ भेँट भेल नै रहै छइ। जे विधवा भेला पछाइत अबै छइ। ओ ओहन उमेर होइ छै, जेकरा

दिशा देब असाध अछि। एक दिस परिवार-समाजसँ निकालि देल जाइ छै तँ दोसर दिस जिनगीक बसन्तक लहकी लहकै छै, एहेन स्थितिमे की हएत? जइ संगी-बहिनपाक संग अखन धरि हँसी-चौल होइ छल ओहो या तँ विधवाक सोझहामे बाजब बन्न कऽ दैत अछि वा ओइठामसँ हटा देल जाइत अछि। ..की पति हेरेने (वैवाहिक बन्धनक पति) परिवारो हेरा जाइ? समाजक संग जिनगियो हेरा जाइ? मुदा हेराइ छइ!

ओइ दूधमुँह बच्चाक कोन दोख भेल जेकरा लोक मुँहपर कहतै जे 'तोरे मुँह देखि जुआ खेलए गेलौं तँ घरो-घराड़ी हारि गेलौं!'

जाधैर समाज समायानुकूल सामाजिक बन्धन बना नै चलत, ताधैर समाजक कोनो अस्तित्व नै रहत। गाछसँ पाकल कटहर खसि जहिना धरतीपर छिड़िया जाइत, आँठी उड़ि केतौ, कोआ उड़ि केतौ, कमरी केतौ आ नेरहा केतौ चलि जाइए, तहिना समाजोक होइ छइ। जखन एहेन स्थिति बनै छै तखने रंग-बिरंगक व्यभिचार समाजमे पनपै छइ..। समाज तँ समाजे छी, एहनो विधवा तँ छैथे जे दू-चारिगो सन्तान भेला पछाइतो सासु-ससुरक संग पतिसँ सेहो बिछुड़ै छैथ! की ओ अपनाकेँ आन परिवारक पुरुखसँ कम मानै छैथ, किए मानती। अपन परिवारक खेती-वाड़ीसँ लऽ कऽ बाल-बच्चाकेँ पढ़ौनाइ-लिखौनाइ सभ करै छैथ तखन ओ पुरुखसँ कम केना भेली। जँ पुरुखसँ कम नै भेली तँ कियो मुँहपर कहि दनु जे 'फल्लींक मुँह देखि यात्रा केलौं, यत्रे भंगैठ गेल।' जिनगी, जिनगी भरै छइ।

तँए कि सभ अधले तँ नहियेँ अछि, ओहनो विधवा तँ छैथे जे बेटाकेँ मनोनुकूल सेवा केलैन। नाति-नातिन, पोता-पोतीसँ घर-अँगना आबाद छैन। जँ कियो घरसँ बहराएत आ दादीकेँ गोड़ लगि आसीरवाद नै लेत तँ की माए-बाप फज्झैत नै करथिन, जे घरक गोसाँइकेँ लोक पहिने गोड़ लागि निकलैए!

जहिना भिन्न-भिन्न रूपक बीच विधवा जीब रहली अछि तहिना

ओहनो तँ छैथे जे पतिकेँ बौड़ गेने वा कोनो तेहेन रोगसँ गरसित पतिक बीच सेहो छैथ। जिनकर पति बौड़ गेल छैन ओ विधवा ताधैर नै मानल जाइ छैथ जाधैर निसचित भाँज नै लागि जाइत। ओना, जँ भाँज नै लगि सकत तँ बारह बर्खक पछाइत मृत्यु मानल जाएत...।

प्रश्न अछि पुरुख विहीन नारीकेँ जीबैक उपाय। एक मनुक्ख होइक नाते समाज हुनका कोन नजरिये देखि रहला अछि। समाजो तँ समाजे छी, मुँह केमहर छै आ नाँगैर केमहर तेकर कोनो भाँजे ने अछि। ताड़ी-दारू पीनिहार पीब कऽ मस्तीमे दोसराक माए-बहिनकेँ गारिये-मारिटा नहि, इज्जत-आबरू सेहो लूटैए मुदा अपन माए-बहिनक बीच आदर्श बनि परिवारमे रहैए। एहेन जे सोचक रूप बनि गेल अछि एकरा केना मेटौल जाएत, ई मूल बात भेल।

मुदा एहेन समस्याक सोर देखि, बाजब वा मेटाएब धिया-पुताक खेल कहाँ छी। के रोगी, के भोगी, के जोगी से चिन्हब कठिन अछि। कठिने नै अछि जएह रोगी सएह जोगी बनि निसिचर जकाँ भरैम रहल अछि। सुलोचना बहिन, अछैते पतिये विधवा नै रहितो विधवाक जिनगी जीब रहली अछि। बारह-तेरह बर्खक अवस्थामे बिआह भेलैन उन्नैस-बीस बर्खक अवस्थामे सासुरसँ भगा देल गेली। ओना, समाजमे विकल्प रहितो सबहक लेल से नै अछि। समाजक बहुलांशक बीच विकल्प खुजल अछि जे दोसर बिआह करैए। मुदा सुलोचना बहिन ओहन परिवारमे जन्म नेने छैथ जइ परिवारमे पुरुख-ले तँ कोनो बान्ह नै छै मुदा नारीक लेल छइ। सासुरसँ सन्तान नै हेबाक अबलट जोड़ि भगा तँ देने छैन मुदा वैवाहक सम्बन्ध भंग करैक जवाब तँ नै देने छैन। जवाबो तँ ओतए ने देल जा सकैए जैठाम विकल्प होइ। जैठाम विकल्प नै छै तैठाम जवाबो देनाइ असान नहियेँ अछि।

लगभग बीस-बाइस बर्खसँ साठि-बासैठ बर्ख धरि सुलोचना बहिन अछैते सासुरे नैहरमे रहली। मुदा नैहर-सासुरक बीच सम्बन्धोक

तँ दोहरी रूप अछि। जैठाम सासुरमे दिअर-भैजाइ, सासु-ससुर वा आन-आन सम्बन्ध अछि तैठाम नैहरमे भाए-बहिनक, माए-बापक सम्बन्ध अछि। जइक चलैत सुलोचना समाजक बहीने बनल रहली।

आने मैथिलानी जकाँ सुलोचनो बहिनक अपन मन मानि गेल छेलैन जे हमरा सन्तान नै हएत। ओना, सन्तान हएब आ सन्तान नै हएब, जानब थोड़े कठिन ऐछे जे सुलोचना बहिन नै बुझि पेली।

तैसंग ईहो भेलैन जे जखन स्वामी दोसर बिआह कऽ लेलैन तँ सौतीन तरक बाससँ नीक नैहरेक बास। समाजमे ओहन दीक्षा बँटनिहारक कमी नहियेँ अछि जे अबिसबासू जिनगीकेँ बिसबासू बना साठि बर्खक उमेरमे पाँचम बिआहक दीक्षा दैत दछिना पाबि एक रंगीन दुनियाँ ठाढ़ कऽ दैत अछि।

नैहरक बास तँ सुलोचना बहिन मनमे अरोपि लेली मुदा जीबैक जोगार नै कऽ पौली। श्रमक सहारासँ जँ जिनगी ठाढ़ करितैथ तँ दोसर जिनगी भेट जैतैन से नै ताकि पौली। नै तकैक कारण परिवारक बेवहार रहैन। परिवारक एहेन बेवहार जइमे घरक अतिरिक्त उद्यम करैक अधिकार नारीकेँ नहि छैन, ओ अधिकार सिरिफ पुरुखकेँ छैन। ओना, परिवारोक दोख मानल जा सकैए। जे परिवार सज्ञानी रहल ओइ परिवारमे एहेन-एहेन समस्या-ले कोनो विचार नै भेल, तँए एकरा दोख कहले जाएत। अनेको मैथिलानी मिथिलाक धरतीपर जन्म नेने छैथ जे अविवाहित वा पति विहीन रहि शिखर छुबि बैसल छैथ।

देखिते-देखिते सुलोचना बहिन साठि-पैंसैठ बरख पार कऽ गेली। नमहर कद, गोर वर्ण, गोल मुँह सुलोचना बहिनक। मुदा नैहरमे रहि परिवारेक नहि, समाजक बहिन बनि गेली। केकरो बेटा-बेटीक बिआह होइ, सुलोचना बहिन पाँच दिन पहिनहि जा अदौरी खोंटबे करै छैथ, भोज-भातक तरकारी बनेबे (कटबे) करै छैथ। बर-बरी छानबे करै छैथ। गामक देव स्थानमे मुड़नक गीत, बिआहक गीत इत्यादि-इत्यादि

गेबे करै छैथ।

विद्यालयसँ जुगेसर सेवा-निवृत्ति भऽ गेला। ओना, सरकारी विद्यालय भेने जुगेसरक अन्तिम दस बरख नीक बनलैन। सरकारी वेतनक संग आरो-आरो सुविधाक आशा तँ बनबे केलैन। ओना, सेवा-निवृत्तिसँ पहिने पुरना घराड़ी (पिताक देल) छोड़ि दोसर ठाम घराड़ी कीनि पजेबाक नीक घर बना नेने छैथ। पाँचटा सन्तान छैन, दू बेटा आ तीन बेटी। विद्यालयमे नीक वेतन भेटने बेटियोक बिआह नीके घरमे केने छैथ। मुदा शिक्षाक जे दुरगुन छै ओइसँ परिवार प्रभावित भइये गेल छैन। दुरगुन ई जे बच्चेसँ लोक जिनगी-ले नहि, नोकरी-ले पढ़ैए। जखने प्राइमरी शिक्षासँ आगू विद्यार्थी बढ़ैत अछि तखनेसँ ओकरा मनमे नीक-नोकरी नाचए लगै छइ। नीक मेहनत करब नीक रिजल्ट हएत। नीक रिजल्ट हएत नीक नोकरी भेटत!

अभिभावकोक धारणा सएह बनि गेल अछि। उर्वर भूमि मिथिलाक ऐछे, जइसँ बौधिक रूपमे सेहो उर्वर अछिए। नीक शिक्षा-ले नीक जगह चाही से तँ अछि नहि। तखन? तखन यएह ने हएत जे राज्यसँ आन-राज्य आ नगरसँ महानगर होइत आन-आन देशक रस्ता पकड़ू।

एहने परिवार जुगेसरोक बनि गेलैन। हाइ स्कूल पार केलाक पछाइत दुनू बेटा गाम छोड़ि परदेशक बाट पकैड़ लेलकैन। परदेशोक आब पहिलुका रूप नहियेँ रहल जे देहा-देही कियो नोकरी करै छला आ परिवारकेँ गाममे रखै छला, जइसँ सामाजिक सम्बन्धमे कोनो बेवधान नै छल। मुदा आजुक परिवेशमे घरसँ निकैलते, अपन पत्नी-बच्चा सहितकेँ अगुआ चलि जाइ छैथ। भाड़ा-भुड़ीक घर (एक तँ ओहुना कम कमेनिहार-ले जहिना भोजनक समस्या छै तहिना रहैयोक) एकटा कोठरीक जिनगी केहेन हएत? भानससँ लऽ कऽ सुतब धरि।

दुनू बेटाकेँ परदेश गेने, जुगेसरो आने-आन जकाँ बुड़हारीमे दुनू

बेकती गाम धेने छैथ। जइ अवस्थामे दोसराक सेवाक जरूरत होइ छै तइमे सेवा केनिहारे नै रहलैन। अनेको प्रश्न एक संग ठाढ़ भेलैन।

मुनेसर सेहो सेवा निवृत्ति भऽ गेला। पलामूसँ राँची चल एला। मुदा जहिना नोकरीक अदहा दरमाहा गमौलैन तहिना ट्यूशनक अगहन सेहो। ओना, ट्यूशनक अभाव राँचियोमे नहियेँ, तहूमे मुनेसर एक तँ सांइसक शिक्षक छैथ दोसर पढ़बैमे इमानदारीए नै विषय बुझबैक अद्भुत गुण सेहो छैन्हे। मुदा सभ किछु रहितो शरीर तेहेन रोगा गेलैन जे जलखै-कलौ दबाइये होइ छैन। अपन कीनल राँचीक जमीन, तैपर अपन कमाइक बनौल नीक घर छैन्हे, तँए रहैक सुविधा छैन्हे। मुदा समय जहिना नव-नव जिनगी ठाढ़ करैए तहिना आने-आन जकाँ मुनेसरो तँ छैथे। सन्तानक नाओंपर मात्र दूटा बेटा छैन। दुनू बेटा नीक शिक्षा पाबि, एकटा मध्य प्रदेशक विलासपुरमे आ दोसर हरियाणामे नोकरी करै छैन। नोकरी की करै छैन जे अपन-अपन पत्नीक आ धियो-पुता लऽ लऽ छैन। ऐठाम प्रश्न उठैत जे जइ परिवारक एक समांग हरियाणा समाजक बीच रहि, ओतुक्का वातावरणमे पालल-पोसल जाएत, दोसर मध्य प्रदेशक वातावरणमे पालल-पोसल जाएत, तेसर राँची आ चारिम गाममे। तैठाम केना समावेश हएत? तहूसँ विकृत तँ ई भऽ जाइए जे एके परिवारक दू भैयारीमे एककेँ कमाइ बेसी आ दोसरकेँ कम भेने परिवारक स्तरो (खान-पान, पढ़ाइ-लिखाइ) मे दूरी बनिते अछि। तेतबे किए? गंभीर रोगसँ गरसित एक भाँइ इलाजक खर्च दुआरे मरि जाइ छैथ, जखन कि दोसर भाँइ बैंकमे रुपैआ रखने रहै छैथ! प्रश्न उठैत अछि, की यएह मिथिलांचलक भैयारी आकि परिवार आकि समाजक धरोहर छी जेकरा लऽ लऽ नाचब? ई मिथिलांचलकेँ ऊपरे-झापड़े देखब भेल। मिथिलांचलक योगदान दुनियाँक दर्शनमे ओ अछि जे श्रेष्ठ मनुक्खक संग नीक समाजक निर्माणक बाट देखबैए।

दुनू बेटा तँ मुनेसरक हटले-हटल छैन, जे पत्नियो डेढ़ साए

किलोमिटर हटि नोकरी करै छथिन। ओना, मुनेसरोकेँ कोनो तरहक अभाव नहियेँ छैन, किएक तँ पेंशन भेटते छैन, बैंकक सूदि अबिते छैन, तैसंग घरोक भाड़ा-किराया अबिते छैन। मुदा सभ किछु रहितो बुझि पड़ै छैन जे कियो ने अछि। रोगी-ले परिचारिकाक की जरूरत होइ छै ओ आन बुझि केना सकैए। जे अनुभव करैए ओ जिनगीक चुकल बेवस अछि। जेकरा एकटा पएर नै छै, पेटमे जखन भूख-पियास जोर मारै छै तखन ओकरा छोड़ि दोसर बुझि के सकैए। ई ओहने भेल जे कियो केकरो एक मुट्ठी खुआ सेवा करैत आ कियो ओकरा जिनगी दऽ एक मुट्ठीक जरूरते नै रहए दइत।

अस्सी बरख पार केलाक पछाइत पुरना घराड़ीपर सात हाथ नमती घर बना सुलोचना बहिन रहै छैथ। धानक नारसँ छाड़ल। बाँसक कोरो-बत्तीसँ ठाठल, बीचला तीनू खुटा लकड़ीक आ कतका छबो बाँसक घर, जइमे कड़ची-खरहीक टाटक बीच तख्ताक केवाड़ी शीशोक चौकैठ लगौल, घरमे बैस सुलोचना बहिन हिया कऽ तकै छैथ तँ सभसँ नीक अपनाकेँ बुझि मने-मन गुनगुनाइ छैथ- “साग खोंटि खेबै, मिथिलेमे रहबै।”

हिया कऽ अपन परिवार देखै छैथ। पिताक चारू भैयारीक भाए अपन-अपन पक्का मकान बना अँगना फुटा अपन-अपन अबै-जाइक रस्ता बना लेलैन, मुदा हम तँ वएह पुरना रस्ता होइत अखनो जाइ-अबै छी, जे पिताक देल चारू भैयारीक सझिया रस्ता छेलैन। ने तहीए बँटबारा भेल आ ने अखने कियो बँटलैन। सबहक सझिया रहितो, (सभ भाँइ बुझै छैथ) सोलहन्नी सुख तँ हमरे होइए।

तेतबे किए, साले-साल घरक मरम्मत करै छी, पुरनाकेँ नव करै छी। खुटा-खुटी सोझ करै छी। नवका नारसँ छाड़ै छी, टाट-फड़कक पुरना लेबा झाड़ि नवका लेबा लेबै छी, घर-ओसराक मुँह-कान बनबै छी। सीढ़ीकेँ सेरियबै छी। सभ दिन नवके घरमे रहै छी। नव घर उठे

पुरान घर खसे से हम किए बुझब। साल भरिक पछाइत ने घर पुरनाइ छै, जखन बर्खामे छाड़-बन्हन सड़ै छै तखन ने पुरान होइए। जहिना तीनू भैयारी अपन-अपन अँगनामे कल गड़ौने अछि तहिना ने मुनेसर अपनो गड़ाइए देने अछि। बाप-दादाक खुनौल इनार छेलैन, सभ कियो पानि पीनाइ छोड़ि देलैन तँ हमहीं किए सड़ल-पाकल पानि पीब। तँए कि हमरा कल जकाँ अनको छैन। देखै छी जे भरि ठेहुन की-कहाँ कलपर लगौने रहैए, केना ओहेन कलक पानि पीबैमे परपन होइ छै से नै जाइन। दतमैन कऽ कले लग फेक देलौं। बरतन माँजि फेकि देलौं.! एकरा की कहबै। अपचिष्ट नै कहबै तँ की कहबै। जँ कमे जगह अछि तँ ओहीमे खाधि खुनि देबै आ तइमे फेकब। जखन बेसी भऽ जेतै तखन रौदमे सुखा आगि लगा जरा देबइ। से करबे ने करब आ भरि ठेहुना गन्दगी लगौने रहब। मन घुमलैन, तीनू भाँइ पक्का घर-अँगनाक तीनू दिस बनौने अछि तइसँ की हमरा गरफेदा अछि, ने अँगनामे साले-साले टाट लगबए पड़ैए आ ने साँप-छुछुनैरक बील-बाल बनैए। तीनू भाँइक घरेक देवाल ने अँगनाक टाट बनल अछि। रातियो-बिराति तँ यएह बुझि पड़ैए जे चारू दिससँ जेरक-जेर ओगरबाह बैसल अछि आ बीचमे अपने चेनसँ भानसो करै छी, खेबो करै छी आ सुतबो करै छी। ‘चारूकात लत्ती बीचमे भगवती’ जकाँ रहै छी। राति-बिराति जे चोरो-चहार औत तँ कोठाबला ऐठाम जाएत आकि खढ़क घरमे औत।

जेना कियो सुलोचना बहिनकेँ ठोंठ पकैड़ आगू मुहेँ ठेल देलकैन तहिना घुसैक पिताक भैयारीसँ अपन चारू भाए-बहिनपर चलि एली। अपन बात केकरो किए कहबै, जेकरा कहबै तेकरे केलहा छी। हम जमाहिर लाल थोड़े छी जे मेननक विचार एकेबेरमे बुझि जेबइ।

अपनासँ घुसैक मन आगू बढ़ि माझिल भाएपर गेलैन। कहू जे सात बेटा रामकेँ एको ने कामकेँ। जेकरा दू-दूटा धाकर सन-सन पुतोहु रहतै से अपनेसँ बरतन माँजत! भानस करत.! आब कि जुगेसरोक ओ

उमेर रहलै जे साइकिलसँ झंझारपुर हाटसँ समान कीनि कऽ लौत। जखन नोकरी छेलइ, तखन परिवार चलिते छेलइ, धियो-पुतोकेँ पढ़ेबे-लिखेबे केलक, बेटीक बिआह अपनासँ बीसेमे केलक, घरो तेहेन बान्हि लेलक जे तीस-चालीस बरख ताकौ ने पड़तै। तैपर पीलसीनो तेते भेटै छै जे केतेकेँ दरमहो ने ओते छइ। तखन जे वौऐनी लगल छै से कोइ रोकि देतइ। जइ बेटा-ले बाप ओते करि कऽ रखि देने छै जे तेकरे बेटा नचबै तँ पेट नै भरतै आ जिनगी नै चलतै। हमहीं की करबै? ओकरोसँ बेसी उमेर अछि। 'अपने मुइने जग मुअए।' दुनियाँमे तँ सदैतकाल केतौ भुमकम अबै छै, केतौ झाँट-पानि होइ छै, केतौ समुद्री जुआरि उठै छै, केतौ ठनका खसै छै, केतौ हवा-जहाज खसै छै, केतौ रेलगाड़ी उनटै छै तँ केतौ धारक नाहे उनैट जाइ छै, ई केकरो रोकने रोकाएत.! तखन तँ भेल जे लोक अपन रक्षा करैत दोसरोक करए।

भाइक जिनगीमे डुमल सुलोचनाकेँ जेना भक्क खुगलैन। अपनो जुगेसरक चालि-परकित नीक नै छइ। जिनगी भरि रग्गरघस करैत रहि गेल! कहू जे अनकर झगड़ा किए मोल लेलक जे हमरो आ मुनेसरोसँ मुँह फुला–फुली छइ! सासुरमे बेटा नै रहने जमीनक लोभ किए केलक! एतबो किए ने बुझलक जे सासुर उपैट जाएत! तहूमे मुंगेर-घाट लगक सासुर, साले-साल बाबा धाम लोक जाइते अछि। एकोरत्ती मनमे विचार रहलै जे जँ कहीं गौंआँ-घरुआ हेराइत-भोंथियाइत ओइ गाम पहुँचत आ राति-बीच रहए चाहत तँ ओ गौंआँ गारि पढ़ि भगा देतै आकि रहए देतइ! भाइये छी, ओकर काज फुट छै, हमर काज फुट अछि, तैठाम कहबे ने करबै आकि कएलो हएत। ने एको कौड़ी हाथ लगलै आ ने अपेछा रहलै। हमहीं जेठ बहिन छिऐ, हमरा लिए जेहने जुगेसर अछि तेहने ने मुनेसरो अछि। मुदा ओ कहियो बुझलक जे बहिन केहेन गड़ूमे जीबैए? बड़ लीलसा रहए जे समाज ने समाजसँ ठेल देलक मुदा भगवान थोड़े बेपाट भऽ गेला, भाइयक बेटीक कन्यादान नै कऽ सकै

छेलौं? ..मुनेसरक आशा ऐछो तँ भगवान ओकरा बेटीए ने देलखिन, जेकरा देलखिन से तेहेन अछि जे बेटा-बेटीक बिआह केलक आ एक कौर खाइयो-ले ने देलक। कहू जे एहेन कि ओकरे बेटा छै जे रामकिसुनकेँ किए गारि लिखि चिट्ठी पठौलकै। खेत-पथारक हक-हिस्साक बात छेलै तँ ओ समाजे आकि कोटे-कचहरीसँ ने फरिछाइत। तइले एते भारी हंगामा किए भेल! अनेरे समाजक लोककेँ किए जहलो कटौलकै आ घरक चौकैठो-केबाड़ उखड़बौलकै!

मुदा हमहीं की कहबै, भगवान अपन सासुर हइर लेलैन तँए ने, नहि तँ हमरा कोन मतलब ऐ गाम-समाजसँ रहितए। अपन भरल-पूरल परिवार रहैत, बाल-बच्चा रहैत, मनुक्खक बोनमे हेराएल रहितौं...।

मुदा लगले सुलोचना बहिनक मन घुमलैन। आँगुरपर हिसाब जोड़ए लगली जे माएसँ कम दिन जीलौं, आकि बेसी दिन। बाबू तँ कहबे करैथ जे नब्बे बरख टपि गेलौं मुदा माए तँ से नै बजल। ओ तँ एतबे कहलक जे रौदी-साल दुरागमन भेल रहए। तइ हिसाबसँ तँ भरिसक ओहो नब्बेक धत्-पत् जीबे कएल। ओहुना बाबू कहला पछाइत दू-तीन बरख पाछू मुइला। तहू हिसाबसँ नब्बे भइये जाइए। मुदा अपन केते भेल, से केना बुझब?..कोनो कि लिखल-पढ़ल छी जे कुण्डली देखब। तहूमे घरक चुबाटमे सभटा पैछला कागज-पतर सड़ि गेल, तखन? ..बड़की बहिन मन दौगबए लगली तँ मोन पड़लैन जुगेसरक जन्म। बिआहसँ तीन-चारि बरख पहिलुका छी। मुदा दुनू तँ अन्हे-गाहिंस अछि। एकटा उपाय अछि, नअ-दस बरख नोकरी छुटना भेल हेतै, साठि बर्खमे नोकरी छुटै छै, तइ हिसाबसँ सत्तैरक धत्-पत् भेल हएत। ओकरा जन्मक समय ढेरबा रही। तखन तँ अस्सीसँ ऊपर भेल। 'अस्सी' मनमे अबिते सुलोचनाक हँसैत मुहसँ फुटलैन- "यएह छी जिनगी.!" ❑

तेसर पड़ाव

माझिल भाए-जुगेसरपर सँ साझिल भाए मुनेसरपर सुलोचना बहिनक नजैर बढ़लैन। दुनू भाँइमे मुनेसरे सहोदर बहिनो बुझैए आ जेतए तक वेचाराकेँ भऽ पबै छै मदैतो करैए। मुदा ओही वेचाराकेँ की दोख देबइ। गाममे रहैत आ लग-पासमे नोकरी करैत तखन ने से तेते दूरमे अछि जे मदैते की हएत। तहूमे तेहेन घरवाली भगवान देलखिन जे सदिखन अपने परिवारक पाछू तबाह रहैए। एक तँ दुनू बेकतीक बात, दोसर पढ़ल-लिखल परिवार, केतौ जे किछु बाजत आकि केकरो कहत सेहो केहेन हएत। खाएर जे हौउ, एते तँ वएह वेचारा करैए जे एते दिन कहियो काल किछु पठा दइ छेलए जइसँ दिके-कि-सिके कहुना कऽ गुजर करै छेलौं मुदा आब तँ से नहि, एकेबेर तेते रुपैआ बैंकमे जमा कऽ दइए जे साल-मालमे कोनो दिक्कत नहियेँ होइए।

छोट बहिन जे अछि तेकरा अपने तेहेन परिवार छै जे नैहरो बिसैर गेल। जँ कहियो भेँटो करए चाहै छी सेहो नइ होइए। केना कऽ छोट-बहिनक सासुर जाएब। लोक की कहत जेठ बहिन माए दाखिल होइ छइ।

घर-आँगन बहारि, चुल्हि-चिनमार नीपि, बरतन-बासन माँजि, जारैन-काठी ओरिया सुलोचना बहिन कलपर पानि आनए गेली। बाल्टीन भरि उठा जखन विदा भेली आकि बाल्टीन नेनहि चबुतरापर खसि पड़ली। गुण रहलैन जे गरदैनसँ ऊपर चबुतरासँ बाहर रहलैन, नहि तँ तेहेन खसान खसलैथ जे मरिये जइतैथ। ओना, माथक भाग बँचलैन मुदा डाँड़सँ निच्चाँ थौआ भऽ गेलैन। एक तँ सिमटीक चबुतरा

तैपर भरल बाल्टीन पानि। खसिते एकबेर पितियौत भाइक नाओं लऽ कऽ जोरसँ बजली-

“मनोहर, हौ मनोहर, कलपर खसि पड़लौं!”

अवाज तीनू भैयारीक आँगन तक पहुँचलैन। मुदा पहिल अवाज सुनि जहिना कियो कान ठाढ़ कऽ दोसर अवाज अकानए लगैए तहिना सभ (भैयारी परिवार) दोसर अवाजक आशा-बाट देखए लगला। मुदा दोसर अवाज दइसँ पहिनहि सुलोचना बहिन अचेत भऽ गेली। डाँड़क जोड़क हड्डी टुटि गेलैन। तैपर भरल बाल्टीनक चोट सेहो लगल रहैन।

दोसर अवाज नै उठने मनोहरकेँ शंका भेलैन जे दोहरा कऽ अवाज किए ने आएल। से नहि तँ केतौ अनतुका बात थोड़े छी। अँगनेसँ घरक पैछला खिड़की खोलि देखलैन जे सुलोचना बहिन कलपर चारूनाल चीत खसल अछि। घरेसँ हल्ला करैत मनोहर निकलला जे ‘सुलोचना बहिन कलपर खसल अछि।’

मनोहरक अवाज सुनि तीनू भैयारीक आँगनसँ धियो-पुता आ स्त्रीगणो दौड़ कऽ सुलोचना बहिन लग पहुँचली। मरदा-मरदी मनोहरेटा। स्त्रीगणो तँ स्त्रीगणे छी। काजक भीड़-भाड़ तँ नै मुदा विचारक तँ समुद्रे छी। रंग-रंगक विचार चलए लगल। विचारक तीर तेते तेज जे मनोहरक अपन बुधिये हेरा गेलैन, विचारे थकथका गेलैन। तँइए ने कऽ पबैथ जे बहिन जीवित अछि आकि मुइल। देहो-हाथ ने एकोबेर सुगबुगाइन। जहिना बिना ब्रेकक साइकिल वा गाड़ीक ठेकान नै रहै छै जे केमहर जाएत तहिना मनोहर भऽ गेला। तहूमे अपन पत्नी कहलकैन-

“पहिने नाकक साँस देखियौ!”

मुदा तइ बीचमे पितियौत भाइक पत्नी, भावो बाजि देलखिन-

“छातीपर हाथ दऽ कऽ देखथुन!”

दुनू गोरेक दुनू विचार सुनि मनोहर अकबका गेला। मुदा भावोक विचारक आदर करैत मनोहर छातीपर हाथ देलखिन तँ धक-धकी बुझि पड़लैन। मुदा तैबीच पत्नी गुम्हरैत बजली- “कहलौं जे नाकक सोंसा देखियौ, तँ डॉक्टर जकाँ छातीमे आला लगबए लगलौं!”

पत्नीक बातकेँ मनोहर नै ठेकानि सकला। किएक तँ काल्हि साँझमे जखन पत्नी आ भावोक बीच झगड़ा भेल रहैन तखन गामपर नै छला, तँए नै बुझल रहैन। दुनू गोरेमे सँ कियो कहबो ने केने रहैन। नै कहैक, कारण छेलै जे दुनू गोरे अपने फरिछबैक विचार केने छेली। ..छातीक धुकधुकी देखि मनोहर नाक लग हाथ देलखिन तँ बुझि पड़लैन जे साँस रूकि-रूकि चलै छैन मुदा अखन उपाइये की अछि? मरदा-मरदीमे असगरे छी, केना उठा कऽ ओसारोपर लऽ जाएब? गारि-गरौवैल आ मारि-मरौवैल करैकाल ने भैंसूर-भावोक सम्बन्ध नै रहैए मुदा बेर-बेगरतामे तँ रहिते अछि। असगरे पत्नीए-टा छैथ जे संग भीड़ि काज करती बाँकी सभ भावोए छैथ! देहमे केना भीरती। तहूमे अधमड़ू जकाँ छैथ। देहो-हाथ लरे-ताँगर हेतैन। जँ होशगर रहितैथ तँ घुघुओपर उठा लितौं। एक गोरे तँ दुनू डेने सम्हारैमे रहि जेती। अपने जँ धड़ पकड़ब तँ दुनू टाँगकेँ की हएत। तहूमे जँ टुटल हेतैन तँ आरो टुटि कऽ निच्चे खसि पड़तैन! डॉक्टरो ऐठाम केना जाएब। जँ डॉक्टर बजबए जाएब तैबीच की हएत, तेकर कोन ठेकान।

..जहिना बाल-बोध बच्चाक बुधिक पौती बन्न रहैए तहिना मनोहरक बुधिक नीचला खप्पी बन्न भऽ गेलैन। कलपर पड़ल सुलोचना बहिन फक-फक करैत। मनोहरकेँ सुमति एलैन। कलपर सभकेँ छोड़ि अपन कोठरी आबि मोबाइल निकालि चिन्हरबा डॉक्टरकेँ फोन केलैन। पछाइत पितियौत भाएकेँ केलखिन। मुदा जहिना फोन केलखिन तहिना एक्के-दुइए सभ पहुँचला। पहुँचते डॉक्टर डाँड़ फुलब देखि बजला- “डाँड़ भरिसक टुटि गेल छैन, चाहे डाँड़क जोड़ छिटैक गेल

छैन। हमर साधसँ बाहरक काज अछि। ओना, तत्काल इंजेक्शन दऽ दइ छिऐन मुदा हिनका नीक डॉक्टर ऐठाम लऽ जैयनु।"

तीनू-चारू भैंयो आ डॉक्टरो मिलि हाथे-पाथे उठा ओसारक बिछानपर सुलोचना बहिनकेँ पाड़ि देलकैन।

इन्जेक्शन पड़ला पछाइत सुलोचना बहिनकेँ कुहरब शुरू भेल। मुदा बोली नै फुटैन। हाथोक इशारा नै देल होइन। लगले मनोहर जुगेसरकेँ समाद पठौलखिन। ई सोचि जे किछु छिऐन तँ सहोदर बहिन हुनके छिऐन। हुनका पीठेपर ने हम सभ रहब। नै किछु करथिन तेकर पछाइतो ने दियाद-बाद आकि सर-समाज। समाज तँ सहजे समुद्र छी, आइ नै अदौसँ होइत आएल अछि जे कियो असाध रोगक शिकार हुअए आकि पढ़ए-लिखए चाहैत हुअए आकि बेटा-बेटीक बिआह करए चाहैत हुअए तँ समाज चन्दा दऽ ओइ काजक सम्पादन करैत आएल अछि। ..समदियाक समाद सुनिते सोमनी स्वामीकेँ सुसकारी देलखिन-

"अखन किए ने बहिन हेतैन!"

पत्नीक बात सुनि जुगेसर फटो-फनमे पड़ि गेला। जिनगीक हारल जुगेसर जे परिवारमे मात्र दुइए परानी रहि गेल छैथ। ..समदियाकेँ कहलखिन-

"दुखमे सुमिरन सभ करे...। अखन किए ने बहिन हएत। बजले तँ रहए जे चारि कट्ठा जमीन बेइमानी कऽ लेलिऐ। तइ कालमे मुनेसरा भाए रहै आ अखन हम भऽ गेलिऐ।"

पतिक सह पाबि सोमनी गोटी चलली-

"जेहेन जे करत से तेहेन पौत!"

दुनू परानी जुगेसरक बात सुनि समदिया आबि मनोहरकेँ कहलकैन। सहोदर भाइक बात सुनि मनोहर चौंक उठला। सहोदरसँ

कनियेँ हटि पितियौत भेल किने। एकर आगू ने समाज भेल। ओना, पितियौत चारि भाँइ अखनो छीहे। सेवे भरि ने करबै। भगवान नहि ने छी जे प्राण दऽ देबइ। मुदा नीक हएत जे मुनेसरोकेँ कहि दिऐ। जुगेसर भैया संगे ने खट-पट छैन मुदा सोल्होअना मुनेसर तँ सेवा करिते छैन।

मुनेसरकेँ फोन लगा मनोहर कहलखिन-

“मुनेसर, बड़की बहिन कलपर खसि पड़ली, चोट बहुत छैन। अखनो अचेते छैथ से जल्दी आउ?”

समाचार सुनिते मुनेसरक मनमे अनेको प्रश्न उठि कऽ ठाढ़ भऽ गेलैन। हँ-हूँ किछु उत्तर नै दऽ सकला। अखन हम हजारो किलो मीटर हटल छिऐ, जरूरत छै डॉक्टर ऐठाम लऽ जाइक, तखन तँ मनोहरेपर किए ने छोड़ि दिऐ जे जाबे पहुँचब ताबे तक ओ सम्हारत। मुदा हाथ-पर- हाथो दऽ बैसब नीक नहियेँ हएत। समाजमे केकरो जँ कहबो करबै से मुहेँ ने अछि। एतेटा जिनगीमे समाजक कोन उपकार केलिऐ। ..लगले मनोहरकेँ फोनपर मुनेसर कहलखिन।

“मनोहर, अबैक तैयारीमे जुटि गेलौं। जेते जल्दी भऽ सकत पहुँच रहल छी। तखन तँ गाड़ी-सवारीक रस्ता छी तँए स्पष्ट किछु नै कहल जा सकैए। तैबीच खर्चक दुआरे कोनो काज बाधित नइ होइन।”

मनोहरपर भार दइते मुनेसरक नमहर साँस छुटलैन। साँस छुटिते मन भेलैन जे एकबेर फेर मनोहरकेँ कहिऐ जे कनी बड़की बहिनसँ गप करा दिअ। मुदा लगले भेलैन जे काजक दौड़मे गपो-सप्प बाधक होइ छइ। छुच्छे गप्पो केने तँ कोनो लाभो नहियेँ अछि। फोन लगा मुनेसर छोटकी बहिनकेँ कहलखिन-

“बुच्ची, बड़की बहिन कलपर खसि पड़लखुन से जहिना हुअ तहिना जल्दी गाम पहुँचह।”

मुनेसरक बात सुनि कविता उत्तर देलखिन- “भैया, कियो घरमे

नै अछि। असगरे छी। जखने घर छोड़ि जाएब तखने घर विरहा जाएत।”

छोटकी बहिनक बात सुनि मुनेसर सकदम भऽ गेला। हम हटले छी, जेहो सभ लगमे अछि सेहो सभ हटिए रहल अछि। कहू जे ई की भेल। ‘घर विरहा जाएत!’ घरक चीजे-वौस ने लोक चोरा लेत सभ समांग कमाइते अछि फेर कीनि लेत। मुदा सहोदर बहिन...।

मने-मन मुनेसर गामक गर अँटबए लगला। राँची-जयनगरक गाड़ीक काल्हि नहि अछि। आइ पकैड़ नै हएत। सोझहे विदा भऽ जाएब सेहो नै हएत। सोझहे तँ लोक ओइठाम ने चलि दइए जैठाम काजक आशा रहै छै, मुदा जैठाम काजक आशा नै रहै छै तैठाम तँ तैयारे भऽ कऽ जाए पड़ै छइ। बसक जे रूट अछि ओहो गाड़ीसँ पहिने नै पहुँचा सकैए, तखन? परसूका गाड़ी निसचित पकैड़ लेब। नीक हएत जे दुनू बेकती जाइ। महिला रोगीक संग महिला नीक। बीचमे काल्हि बैंकोक काज कऽ लेब। ओना, अबैले नै कहबै मुदा दुनू भैंयोकेँ जानकारी तँ दइए दइक अछि। अबैले तखन कहब ने नीक हएत जखन असगर-दुसगर रहैत।

..परिवारक संग बिना रिजवेशनक चलब तँ कठिन अछि। ईहो तँ नीक नहियेँ हएत जे रस्तेमे समानो (चीज-वौस) चोरि भऽ जाइ आकि बच्चे सभकेँ किछु भऽ जाइ। नीक हएत जे दुनू भाँइकेँ जनतब दऽ दिऐ।

मोबाइल उठा रघुनाथकेँ कहलखिन-

“बौआ, दीदी कलपर खसि पड़लखुन, से सुनैमे आएल अछि जे डाँड़े कज्जी भऽ गेलैन अछि।”

दीदीक नाओं सुनि रघुनाथक मन चौंकल, बाजल-

“बड़का बाबूकेँ ताबे नै कहि देलिऐन जे आबि रहल छी। तैबीचक भार अहाँक। आगू भऽ कऽ अहाँ जाउ, पाइ-कौड़ीक चिन्ता नै

करब। अखन ऑफिसमे छी, बेसी बात नै हएत, डेरापर गेला पछाइत फोन करब।”

रघुनाथक विचार सुनि मुनेसर छोटका बेटाकेँ मोबाइलपर कहलखिन-

“बौआ, बड़की दीदी कलपर खसि पड़लखुन। मनोहर अखने फोनपर कहलक हेन!”

बाल-बोध रमाकान्त बाजल-

“आर, की सभ भेलैन?”

मुनेसर-

“एतबे जानकारी भेटल अछि। आरो जानकारी होइए तखन फेर कहबह।”

“बाबू, केकरो कियो परान नै दऽ सकैए, मुदा परान बँचबैक तँ परियास कइए सकै छइ। तइले आगू बढ़ि कऽ जाउ, पछाइत जँ हएत तँ हमहूँ आएब। ओना, रघुनाथ-भैयासँ ऑफिसक पछाइत गप करब। गाम-घरमे इलाजक असुविधा छै तँए जरूरतकेँ देखैत कहब। ऐठाम तँ इलाजक नीक बेवस्था छइहे।”

“अखन जानकारीए बुझह। जाबे अपना नजरिये नै देखि लेब ताबे किछु कहब नीक नहियेँ हएत। सुनल बात गँड़ि-मुड़ाह होइ छै, हल्लुको बात भारी आ भारियो बातकेँ हल्लुक बना लोक बजैए।”

दुनू बेटाक बात मुनेसरकेँ बल भरलकैन। मनमे मजगूती एलैन। परसूका गाड़ी कोनो हालतमे छोड़क नै अछि। रहली पत्नी, हुनको कहब उचित अछि, मुदा नाकर-नुकर तँ करबे करती। खाएर, नाकर-नुकर किछु करैथ, हमरो निर्णयक दौड़सँ चलए पड़त। जँ नाकर-नुकर करती तँ मुँह फोड़ि कहबैन, माए दाखिल बहिन छी, जँ दुनियाँमे कियो माए-बापक सेवाकेँ नीक बुझैत हेतै तँ हमहूँ बुझै छिऐ। पत्नीक मतलब

ई नहि जे पथभ्रष्ट करए...।

मुनेसरक मन निर्णय केलक- 'नीक हएत जे अखने हुनको (पत्नी) सँ गप-सप्प कइए ली। मोबाइल लगा मुनेसर साधनाकेँ कहलखिन-

“परसू गाम जाएब जरूरी अछि, तँए स्कूलमे छुट्टीक आवेदन दऽ काल्हि राँची चलि आउ?”

पतिक बात सुनि साधना बजली-

“एहेन कोन हलतलबी भऽ गेल जे एकाएक गाम जाइक विचार कऽ लेलिऐ?”

सुलोचना बहिनक सभ समाचार सुना मुनेसर बजला-

“ओइठाम जा हम नै सेवा करबै तँ दुनियाँमे वेचारीकेँ रहलै के, जे करतै। सुनैमे आएल अछि जे भैयो दुनू परानी खुशीए मनबै छैथ जे भने नीक भेल। तैठाम अपन दायित्व नै बुझिऐ, से मन गवाही नै दइए। खाएर जे हौउ, अखन एतबे जे काल्हि चलि आउ।”

पतिक विचारमे साधनाकेँ दबाब बुझि पड़लैन। ओ अपन दायित्वक विचार नै करैत बजली-

“अखन स्कूलमे छुट्टी नै देत।”

मुनेसर-

“हमरो जिनगी स्कूलेमे बीतल, किए ने छुट्टी देत, जँ नै देत तँ ओहिना चलि आउ।”

साधना-

“ओहिना केना चलि आउ!”

मुनेसर-

“रिजाइन दऽ कऽ। मुदा गाम चलैक अछि?”

जहिना दबाबमे साधना बजै छेली तहिना दबाबमे मुनेसर सेहो आबि गेला। दुनूक दू दबाब, एककेँ कर्तव्यक दबाब आ दोसरकेँ सत्ताक दबाब। दुनू दू दिशामे बहैत जाइत।

..तुरैछ कऽ साधना बजली-

“बहिन अहाँक छैथ, अहाँ जा कऽ देखियौन। हम अखन नै जाएब!”

साधनाक उत्तर सुनि मुनेसर अमबसियाक अन्हारमे पड़ि गेला। दुनियाँक अन्हेरमे सभ किछु सबहक अन्हरा रहल छै, अन्हरा कि रहल छै जे सभ अपने अन्हराइ पाछू पड़ल अछि। एकक पति आ दोसराक भाए तँ हमहीं छी। ई बात सत् जे जे नगीची बहिनक संग अपन अछि ओ पत्नीक नै छैन। मुदा की हुनका (पत्नी) आन बुझल जाए..?

जिनगीक संगिनी। संग मिलि जिनगीक दुर्गकेँ टपैक व्रती। मुदा काल्हि एकर विपरीतो तँ भऽ सकैए...।

मुनेसर सकदम भऽ गेला, मुदा थोड़ेकालक पछाइत फुरलैन- ‘अनेरे मनकेँ वौअबै छी।’ कियो अपन मन, अपन भाव आ अपन विचारक अनुकूल अपन दुनियाँ गढ़ैए आ ओइमे बास करैए। जेते करैक शक्ति अछि, ओते करैक अधिकारी छी। परसू निसचित गाड़ी पकड़ब चाहे बीचमे जेते विध्न–बाधा उपस्थित किए ने हुअए...।

राँचीसँ जयनगरक गाड़ी खुजैक समय पौने छह बजे साँझमे छइ। तीन बजिते मुनेसर बेर-बेर घड़ी देखैथ जे कहीं गाड़ी ने छुटि जाए। पनरह मिनट स्टेशनक रस्ता अछि। चारि बजिते भाड़ादारकेँ कहि मुनेसर बैगक संग घरमे ताला लगा निकैल गेला। ओना, अखन पौने दू घन्टा समय अछि मुदा तैयो मनमे होनि जे हो-ने-हो जँ समैयक हिसाबसँ जाएब आ बीचमे कोनो बाधा उपस्थित भऽ जाए आ गाड़ी छुटि जाए तखन तँ सभ विचारल चौपट भऽ जाएत। तइसँ नीक जे

जखन डेरोपर गाड़ीए-क प्रतिक्षा कऽ रहल छी तखन किए ने स्टेशनेपर जा कऽ टिकटो कटा लेब आ प्लेटफार्मेपर बैसब जे गाड़ी पकड़ैक पूरा बिसवास बनल रहत।

स्टेशन पहुँच पूछ-ताछ ऑफिस दिस मुनेसर बढ़ला। ओना, एकेटा ट्रेन राँची-जयनगरक जे सप्ताहमे तीन दिन चलैत तँए समय तँ अपनो बुझले मुदा मनमे रंग-रंगक विचार उठने मुनेसरकेँ अपनोपर शंका होइत रहैन जे हो-ने-हो गाड़ीक समय-सारणीमे किछु फेर-बदल बीचमे ने भऽ गेल होइ। ओना, दिन-रातिक हिसाबसँ अप्रील अक्टूबरमे समैयक बदलाब होइ छै मुदा से आब कोनो ठेकान अछि। कहियो समय बदैल देल जाइ छइ। तेकर कारणो अछि जे जाबे दुरगामी ट्रेन कम छल ताबे दिन-रातिक सुविधा बुझल जाइत छल मुदा आब तँ से नहियेँ रहल। दिन-राति दौड़ैबला ट्रेनक बीच केतेको जक्शन आ केतेको साधारण स्टेशन पड़िते अछि, तैबीच समैयक की सुविधा हएत। पूछ-ताछमे बुझले बात दोहरा कऽ बुझि मुनेसर प्लेटफार्मक सिमटीक बैसकीपर बैस गाम दिस नजैर देलैन, ने अन्हारे आ ने इजोते बुझि पड़लैन, झल अन्हार जकाँ सभ किछु देखैथ।

देखए लगला चारि भाए-बहिनक बीच हमहूँ छी आ सुलोचनो बहिन छैथ मुदा अखन तकक जे जानकारी अछि तइमे की छी। चारि छी आकि दू छी? आइ जँ दुनू परानी भैयो बड़की बहिनकेँ अप्पन बुझि आगू इलाज करबए बढ़ि गेल रहितैथ तँ अखन जे परिस्थिति बनि गेल अछि से थोड़े बनैत। कोनो अस्पताल आकि डॉक्टरक देख-रेखमे रहितैथ, मुदा से...। तत्खनात जँ कियो कर्जो हाथे अखन धरिक प्रतिकार केने रहितैथ तँ जेते चिन्ता अछि से थोड़े रहैत। बेमारीक अन्तिम सीमा जँ घेरा कऽ पाछू दिस ससरैत रहैत सेहो नहियेँ भेल। प्रतिकार नइ भेने रोगेकेँ ने अवसर भेटल। जे बिससँ बिसम बनैत गेल हएत। मुदा विचार तँ मात्र विचार छी। विचार केना काजक रूप पकैड़

चलत ई नान्हिटा थोड़े अछि! खाएर जे हौउ, अपन नाप-जोख तँ अपने जिनगीक कसौटीपर ने हएत। भावलोक (भवलोक) आकि विचारलोक कर्मेपर ने निर्भर करै छइ...।

'कसौटी' मनमे अबिते मुनेसरक आगू एक मजगूत प्रश्न आबि गेलैन- जैठाम छी तैठामक कसौटी आ जैठाम नै छी तैठामक कसौटी एके थोड़े हएत?

प्लेटफार्मक हजारोक भीड़मे मुनेसर अपनाकेँ असगरे देखैथ, के केकरा देखत, सभकेँ अपने भवसागर पार करैक छइ। सभकेँ अपन-अपन बाट छै, अपन-अपन घाट छै, अपन-अपन घट छै आ अपन-अपन घटबारि छइ। लाखोक भीड़मे प्रेम जहिना केतौ दोसरठाम नै अँटैक प्रेमीक हृदैमे सटि जाइए तहिना मुनेसरक हृदए सुलोचना बहिनक हृदैमे सटल। एहनो तँ भऽ सकैए जे पहुँचैसँ पहिने मरि जाए। जँ सएह हएत तँ रोकियो तँ कियो नहियेँ सकैए। जँ रोकनिहार रहैत तँ रोकलो जा सकै छल सेहो तँ नहियेँ अछि! तखन यएह ने हएत जे जे समय आ श्रम जिनगीमे लगैबतौं से दोसर दिस लागत।

प्लेटफार्मपर हल्ला भेल जे गाड़ी नहि जाएत। इंजन खराप भऽ गेलइ। हल्ला होइते जहपटार यात्री एक दोसरसँ पूछ-ताछ करए लगल। पूछ-ताछ कॉन्टरक आगू पुछनिहारक भीड़ लगि गेल। सबहक एके प्रश्न जे की भेल किए ने गाड़ी औत? ..बिनु बुझल जवाब देनिहार बिगैड़-बिगैड़ एतबे जवाब करैत जे कोनो जानकारी नै अछि। मुदा यात्रियो तँ यात्रीए छी, सभकेँ अपन-अपन काज छइ। केकरो कम जरूरी तँ केकरो बेसी। जेकरा कम जरूरी काज छै ओ तँ धीरे-धीरे अस्थिर भेल मुदा जेकरा कोट-कचहरी आकि डॉक्टर-अस्पतालक काज छै, ओ केना अस्थिर हएत। समयपर कचहरी नै पहुँच हाजिरी नै देने वारंट हेतइ तहिना अस्पतालोक। समयपर जँ मरीज आकि मरीजाकेँ दबाइ नै भेटतै तँ मरत। मुदा पनरहे मिनटक पछाइत हल्लाक रूप बदलल।

प्लेटफार्मक रूप-रंग बदैल बेदरंग हुअ लगल। केतौ चर्च होइत जे गाड़ी नै चलने भारी नोकसान भेल, तँ केतौ चर्च होइत जे तीन दिन काज पछुआ गेल! मुदा गाड़ी चलैक समाचार सेहो एके-दुइए पसरैत-पसरैत सौंसे प्लेटफार्म पहुँच गेल।

पनरह मिनटक पछाइत ट्रेन स्टेशनमे लगि जाएत। यात्री सभ अपन-अपन छुटल काज पुरबैमे लगि गेला। कियो पानिक बोतल कीनए लगला तँ कियो बटखर्चा। तैबीच मुनेसर बेर-बेर घड़ी देखैथ जे केते समय बँचल अछि। आब केम्हरो उठि कऽ नै जाएब। रिजवेशन टिकट रहैत तँ जगहक बिसवासो रहितए, सेहो ने अछि। जेनरल बोगीमे अगुआ कऽ नै चढ़ब तँ रेड़ामे पड़ि जाएब। जुआन-जहान तँ रेड़ा-रेड़ी बरदासो कऽ सकैए मुदा सेहो ने हएत। ओना, खलासी-कुली सभ पहिनहिसँ माने पाछूए-सँ सीट अजबारने रहैए आ पाइ लऽ लऽ एक्सट्रा सीट बेचैए। अन्तमे बुझल जेतइ। समय तँ समय छी, अधलो काज तेहेन सिरचढ़ भऽ जाइ छै जे बेवस कऽ दइ छइ।

गाड़ी अबैक मात्र दस मिनट समय शेष रहल। बेर-बेर मुनेसर मुड़ी उठा-उठा पाछू दिस तकैथ जे गाड़ी अबैए आकि नहि। तैबीच जेबीमे मोबाइलिक घन्टी टुनटुनाएल। ..जेबीसँ मोबाइल निकालि मुनेसर देखलैन तँ पत्नीक नम्बर रहैन। नम्बर देखि ने रिसिभ करैथ आ ने रिजेक्ट।

..जहिना मोबाइलिक घन्टी टनटन करैत मुदा मुनेसरक मन पत्नीक सिंहावलोकन करैत। एहेन पत्नीकेँ की बुझल जाए? मुदा गाड़ी अबैक समय अछि, अखन की कहल जाए। किछु ने। तरे-तरे मन तड़ियाइत-तड़ियाइत मुनेसरक मन तुरैछ गेलैन। तुरैछते स्वीच दाबि झंझट कात केलैन। मुदा लगले दोसर घन्टी बाजि उठल। नम्बर देखि जहिना रेती चढ़िते घार पनिया जाइत तहिना मुनेसरक मन अनायासे पनिया गेलैन। मन चहकलैन, रघुनाथक नम्बर छी। रिसिभ करिते

रघुनाथ कहलकैन- “बाबू, गाड़ी पकैड़ रहल छी किने?”

बेटाक प्रश्न सुनि मुनेसर पसीज गेला। विचारए लगला जे एकरा की बुझल जाए। की बेटा आदेश दऽ रहल अछि आकि काजपर सिरचढ़ अछि?

मुदा समैयक कमी विचारकेँ रोकि देलकैन। उत्तर दैत बजला-

“बच्चा, स्टेशनपर गाड़ी पकड़ए आएल छी। गाड़ी अबैएपर अछि।”

रघुनाथ-

“बाबू, अखन बेसी बात करैक समय अहाँकेँ नै अछि। मुदा हम डेरेपर छी। पोतो अछि आ पुतोहुओ लगेमे अछि।”

‘पोता-पुतोहु’ सुनि मुनेसरक मन मेमिया उठलैन- “ईहो तँ रघुनाथ बाजि सकै छल जे दुनू बेटो आ पत्नियो लगेमे छैथ। से किए ने बाजि बाजल जे पोतो आ पुतोहुओ अछि। अपन रहितो अपन किए ने कहलक।”

पतालक पानि जकाँ जेहने सुन्नर तेहने शीतल मनसँ मुनेसर बजला-

“बौआ, बेसी गप करैक समय नै अछि मुदा धियानमे रखिहह...।”

रघुनाथ- “धियानमे रखब आकि धियानमे छैथे। अहाँ बुलन्दीसँ जाउ। बोकारो, जसीडीह, बरौनी, दरभंगा पहुँच जरूर जानकारी देब। काज करैएबला ने हम-अहाँ भेलिऐ तइमे जानि कऽ एक्को-रत्ती तिरोट ने होइन। अनजानमे भैयो सकै छै, तँए तेकर चिन्ता नै करब। रखि दियौ मोबाइल।”

‘रखि दियौ’ सुनि मुनेसरक मनमे समुद्रक बाढ़ि जकाँ हिलकोर

मारलकैन। बजला- “बौआ, अखन पाँच मिनट गाड़ीमे देरी अछि ताबे एकटा गप आरो कऽ लेब।”

‘एकटा गप’ सुनि रघुनाथक मनमे उठल, भुखाएलकेँ जहिना ई थाह नै रहै छै जे केते खाएब, पियासलकेँ पानिक अन्दाज नै रहै छै तहिना भऽ रहल छैन। जरूरत छैन संगीक। मुदा हम तँ बेटा भेलिऐन, पाछू रहि संग दऽ सकै छिऐन, बराबरीमे केना देबैन। ओ दइवाली तँ माइए छथिन, से की केलखिन। मुदा पुछबो केना करबैन जे माइयो संग छैथ आकि नहि। बाजल-

“बाबूजी, गाम पहुँचते, से जखन पहुँची राति होइ आकि दिन, सुलोचना दीदीक सभ किछु बुझि जानकारी देब। हमहूँ ऐठाम डॉक्टरक सम्पर्कमे रहब। जेना जे जरूरत हेतैन से तहिना हेतइ। जँ गाममे अँटाबेश नइ हुअए तँ हुनका लाइए कऽ ऐठाम चलि आएब। जेते काल ऑफिसक काज रहत तेतबे काल ने, तैबीच पुतोहु लगमे रहतैन; बाँकी समैयक काज तँ अपनो कऽ सकै छी। अखन निचेन से गाड़ीमे जाउ।”

रघुनाथक बात सुनि मुनेसर बजला-

“बौआ, अखन तीन मिनट समय बाँकी अछि, अखनसँ की करब। कियो दोसराइतो रहैत तँ गपो करितौं, सेहो ने...।”

पिताक भरभराइत अवाजमे चनैक कऽ खापैड़क तीसी जकाँ एकटा बात कुदि निच्चाँ खसल। ओ अछि दोसराइत। जखन कोनो प्रश्नपर रघुनाथ दुनू बेकती माए-बाबूसँ गप करैत तँ स्पष्ट आभास भऽ जाइ जे दुनूक विचारक दूरी अछि। मुदा दूरियो तँ दूरी छी आगूक दूरी आकि पाछूक दूरी। एक रास्ताक दूरीसँ विपरीत दूरी दोबर होइत। मुदा दुनियाँक अजीव खेल अछि। विषुवत रेखासँ जेते दूरी दच्छिनक रहत ओते दूरी उत्तर भेने मौसम मिलि जाइए। ओना, दुनू बेकती बी.ए; बी.एस-सी छी तँए वैचारिक दृष्टिसँ कम-बेसी आँकब उचित नहि,

तेकर दोसरो कारण अछि जे उमरोक हिसाबसँ एकरंगाहे छैथ। तँए ईहो प्रश्न उठत जे ‘हम बेसी दुनियाँ देखलिऐ आकि अहाँ?’ मुदा एकटा नमहर प्रश्न तँ ऐछे जे एके काजक दू विचारक बाट परिवारमे उठि कऽ ठाढ़ भऽ जाइए। ओना, परिवारोक तँ दिशा छै जे आगू मुहेँ बढ़त आकि ठमकल रहत आकि पाछू मुहेँ ढुलकत?

..रघुनाथक मन ठमकए लगल। हाथक कोनो आँगुर काटू घा अपने हएत। मुदा विचारो तँ विचार छी। कियो बन्दूकक गोलियोक आगू अपन विचार भंग नै करए चाहैत तँ कियो बुधिक खेल बुझि गेन जकाँ गुड़कबैए! खाएर जे हौउ, जानए जअ आ जानए जत्ता। मुदा ऐठाम तँ एक परिवारक प्रश्न अछि जइमे बाबू-माए छैथ, दू भाँइ दू दियादिनी आ तीनटा बच्चा अछि। ओना, बच्चा तँ अखन दुधमुहेँ अछि मुदा चारि गोरे तैयो बँचलौं, ई चारि विचार जाबे एकठाम नै हएत ताबे समुचित ढंगसँ परिवार चलत केना? जँ परिवारकेँ दू पहिया गाड़ी बुझि विचारब तँ आगूमे माइए-बाबू भेला, तइमे दुनू दिसिया छैथ! केना परिवार आगू मुहेँ ससरत! तहूमे ढलानपर नै चढ़ाइपर?

..कोनो काजक सोलहन्नी बिसवास ताबे तक नहि कएल जा सकैए जाबे तक मनक सोच-विचार वाणी होइत कर्म दिस नइ बढ़त। जखने हाथ रहत घाटपर आ मन रहत सीकपर, तखने तेकर कोन ठीक...। हाथमे रघुनाथोक मोबाइल आ मुनेसरोक मोबाइल टनटनाइत बोलक आशा करैत। मुदा बोल कोनो मुँहमे नहि। मुदा विरामक पछाइत ने विश्राम हएत, बीचमे केना विश्राम हएत। तैबीच ट्रेनक अवाज धमकल। कानमे धमक लगिते मुनेसर बजला-

“बौआ, गाड़ी आबि गेल जाइ छिअ।”

पिताक बात सुनि रघुनाथ, खापैड़क खराएल अन्न जकाँ बाजल-

“बाबू, अहाँ आगू बढ़ि जानकारी दिअ, जरूरत देखि विचारब। जुआन-जहान छी, अखन नै ट्रेनक धक्का-धुक्की बरदास करब तँ

कहिया करब। जेहेन स्थिति रहत तइ हिसाबसँ काज करब। कोनो जरूरी अछि जे परिवारकेँ संगे लऽ चली। अपन डेरा अछि, अपना घरमे रहत। काजोक तँ लहैर होइ छै जे दुइए-चारि दिन ने समुद्र जुआरि जकाँ रहैए, रसे-रसे रसाइए जाएत...।"

बाजि रघुनाथ मोबाइलक स्वीच दाबि आगूमे रखलक। लगमे ठाढ़ पत्नी पुछलखिन-

"बाबूजी असगरे गाम जाइ छथिन! एक तँ अपने देहमे सभ रोग रखने छैथ, तैपर ऑपरेशन कएल पेट छैन?"

कहि सुनीता चुप भऽ गेली। ..गुम भेल रघुनाथ एक दिस नजैर पितापर दैत तँ दोसर दिस पत्नी-बच्चा आगूमे। सभ तँ अपने भेल, तैठाम डेग उठाएब असान नहि। मुदा जहिना भुमकम-बाढ़ि जेते काल रहैए ओते काल तँ दुनियासँ पकैड़ अनबे करैए। भलेँ चलि गेला पछाइत जे हौउ। ..पत्नीकेँ हाथक इशारासँ बैसबैत रघुनाथ बाजल-

"माएसँ अहीं गप करू, हम सुनब।"

सुनीता-

"माए, सुनलयैन हेन जे गाममे दीदीक डाँड़ टुटि गेलैन से बाबूजी गेला हेन?"

पतिक आगूक छुटल मुँह पुतोहुक आगू तँ छुटले-छुटले, साधनाक मुँह बाजल-

"बहिन छिऐन तँ जेता नै?"

सुनीता-

"अपनो तँ बिमरयाहे छैथ, तखन जँ अपनो बेमार पड़ि जाथि तखन?"

पुतोहुक प्रश्न सुनि साधना मोबाइल रखि देलैन। बेर-बेर सुनीता

‘हेलौ-हेलौ’ करैत रहली मुदा कोनो उत्तर नहि!

मुनेसर हजारो यात्रीक बीच ट्रेनक एकटा कोणक सीटपर बैसला। जहिना चौड़ी खेतमे आनो-धान झड़े भऽ जाइए तहिना मुनेसरक कानमे लोकक बात झड़ाहे बुझाइत रहैन। मन टाँगल रहैन अपन यात्रापर। चारि भाए-बहिनक बीच जहिना सुलोचना बहिन छैथ तहिना ने हमहूँ भेलौं आ तहिना ने ओहो दुनू भाए-बहिन भेलखिन। मुदा चारिमे दुइए किए? ..फेर अपना दिस मन घुमलैन अपनो तँ सएह छी। जखन बेर-बेगरतामे पत्नियो संग नै एली तखन अनका की कहबै। कियो अपन मनक राजा छी, भिखारी छी। पोथीमे छापल फोटो जकाँ दुनियाँ नहि ने अछि। कर्ता बनि सभ जन्म नेने अछि, दिन-राति कर्मो करिते अछि। मंशो सबहक एके छै मुदा भऽ की जाइ छै, से केकर के देखत। मुदा अपना संग परिवार आ समाजक जे दायित्व ऊपरमे रहै छै, सेहो तँ अपने केने हेतइ। ❑

चारिम पड़ाव

बचकानी मन जेहने रघुनाथक तेहने सुनीताक। बचकानी ऐ मानेमे जे ने रघुनाथ बेकती-परिवारसँ आगूक दुनियाँ देखने आ ने सुनीता। तीस बर्खक रघुनाथ स्कूल-कौलेजसँ बैंक धरि जहिना देखने तहिना सुनीतो स्कूल-कौलेजसँ परिवारे धरि समटाएल। ओना, सुनीताक अपन प्रवल इच्छा जे जखन ग्रेजुएशन केने छी तखन केतौ नोकरी करब जइ कमाइसँ परिवारक भरण-पोषण हएत। बेकतीगत तौरपर तँ समान्य विचार भेल, सभकेँ अपन कर्मपर ठाढ़ भऽ जिनगीक यात्रा करक्के चाही मुदा मनुक्ख तँ मनुक्ख छी जेकरा मनुक्ख पैदा करैक क्षमता छइ। तँए स्त्री–पुरुखक सम्मिलित रूप परिवार छी। जइमे पति-पत्नीक बीच विचारक समावेश केलाक पछाइते ने रस्ता धेने टघरत। ओना, जँ दुनू बेकतीक तलब एकठाम जोड़ल जाएत तँ एको काज भेने एक रंग नहि, कमी-बेसी किछु हेबे करत। कारणो अछि दू रंगक ढंग।

..जहिया रघुनाथ सुनीताक बीच सम्बन्धक नाओं लेल गेल तहिया दुनूक विचार अपन-अपन रहैन। कारणो छल जे ने रघुनाथ नोकरी करै छला आ ने सुनीते, जइसँ विचारमे बान्ह-छेक पड़ैत। जहिना सुनीता टटके कौलेज छोड़ने तहिना रघुनाथो। ओना, रघुनाथ दू-तीन साल सुनीतासँ बेसी उमेरक। सुनीता कौलेजसँ मात्र बी.ए. ऑनर्स केने जखन कि रघुनाथ बी.एस-सी ऑनर्सक संग एम.बी.ए. सेहो केने। जहिना रघुनाथक पिता-मुनेसरक धारणा रहैन जे नोकरी दू-चारि साल आगूओ-पाछू होइ छै मुदा बिआहोक तँ अपन समय अछि। अपनो तँ बिआहक पछाइते नोकरी भेल, तँए हाथक चूड़ी-ले ऐनाक कोन

प्रयोजन। तहिना सुनीताक पिता–मदन मोहन–क धारणा छेलैन। अपनो जिनगीमे तहिना भेल जे प्रशासनिक परीछा पास केलाक पछाइत ट्रेनिंग पछुआएले छल, जे नोकरीक पूर्ब अवस्था भेल। मुदा दुनूक अपन-अपन पारिवारिक स्थितिक कारण रहैन। मुनेसरक पारिवारिक स्थिति रहैन जे बिआहक तीन-चारि सालक पछाइत दुरागमन होइ छइ। तैबीच नोकरीक परियास करब। मुदा मदन मोहनक परिवारक विचार-धाराक संग बेवहारिक-धारा सेहो फुटकौर छेलैन। अखन धरि मदन मोहन सोल्होअना माता-पिताक आदेशमे छला। जइसँ दू धारणा परिवारमे नहि जन्म नेने छेलैन जे नोकरी होइते बेटा-पुतोहुकेँ अगुआ नोकरी-ले घर छोड़त। जहिना पतिक अधिकार पत्नीपर आ पत्नीक पतिपर तहिना सासु-ससुरक सेहो ने पुतोहुपर। समैनुकूल खेनाइयो-पीनाइक आ भानसो-भात एते असान तँ भइये गेल जे घन्टो भरिक काज नै रहल।

दुरागमनसँ पहिनहि रघुनाथकेँ बैंकमे नोकरी भऽ गेलैन। सुनीता सासुरेक ताकमे। बिआहक पछाइत नैहर-सासुरक बीच संक्रमण होइते अछि। मदन मोहन दुनू परानीक स्पष्ट सोच रहैन जे बिआहसँ पहिने धरि सुनीतापर जेते अधिकार छल तइमे आब कम करए पड़त। जँ अपना सभ नोकरीक पक्षमे छी आ ओइठामक (सासुर) विपक्षमे होथि तखन एहेन काज औगता कऽ करबो नीक नहि...।

दुरागमनक पछाइत रघुनाथकेँ एक संग तीन घर सोझमे पड़लैन। पहिल अपन विलासपुरक डेरा, जइमे सभ तरहक सुविधाक अछि। दोसर- राँचीक डेरा मुदा पिता पलामूमे भाड़ाक घरमे रहै छैथ। तेसर पूर्वजक गाम जे समैयक धक्कामे से डोलि-डोलि उखैड़ रहल अछि। केना नै उखड़त? बिआहेमे विदागरी आ विदागरियो केतए तँ जैठाम नोकरी करै छी तैठाम! सासुर तँ पहिनहि छुटल जे रसे-रसे नैहरो छुटिए जाइए, तैसंग कोजगराक मखान आ तिलासराँतिक जड़ौउ-वस्त्र

इत्यादि, आ मधु-श्रावणीक हिसाबे केतए।

पत्नीक बेवहारसँ परिचित मुनेसर अपन भार हटबैत रघुनाथकेँ दुरागमनसँ पहिने कहि देने रहथिन- 'बौआ नीक हेतह जे दुरागमनक पछाइत विलासेपुर चलि जइहह। ऐगला छुट्टीमे हमहूँ एबह।'

विलासपुरक तीन कोठरीक डेरा, अतिरिक्त-अतिरिक्त। बैंकसँ वेतन उठा रघुनाथ डेरा आबि पलंगपर रुपैआ रखि वाथरूम विदा होइत सुनीताकेँ कहलखिन-

"जलखै करैक मन नै अछि, केन्टिनेमे कऽ लेलौं। मुदा चाह पीब। जाबे बाथरूमसँ निकलै छी ताबे अहूँ चाहक जोगार करू।"

जैठाम चाह-चीनीक समस्या रहैत तैठाम ने एहेन आदेश पाबि पत्नी अँगैठी-मड़ौर करितैथ, मुदा जैठाम से नहि तैठाम तँ काजे उत्तर होइ छइ। सएह भेल। रघुनाथ अपन कमाइपर अपन जिनगी ठाढ़ करैक प्रश्न उठबैत बजला-

"अहाँक एलापर ई पहिल दरमाहा छी, हम तँ बाहरसँ कमा हाथमे दऽ देलौं, आब अहाँ बाजू जे केना घर चलाएब?"

जिनगीक नक्शा नै बना सुनीता अपन मनक बात उगैल देलैन-

"हमहूँ केतौ नोकरी करितौं।"

पत्नीक विचार सुनि रघुनाथ गुम भऽ गेला। मुदा ऐठाम तेसर अछि के जे गुमी छजतैन। ऐठाम तँ प्रश्नक उत्तर दिअ पड़ितैन। एक संग अनेको प्रश्न रघुनाथक मनमे तड़कैत मेघ जकाँ उठलैन। मरदा-मरदी डेरासँ निकैलते डरए लगै छी जे बैंकक स्टाफ बुझि कियो आक्रमण ने कऽ दिअए, तहिना ऑफिस आबि थरथराइत रहै छी जे फेड़-फाड़ ने भऽ जाए। खाएर.., ई तँ घरक बाहर भेल मुदा डेरोकेँ सुरक्षित कहाँ देखै छी। सभ किछु रहितो डरौन जकाँ लगैए। तैठाम महिलाकेँ असगरे घरसँ निकलब..?

दोसर, रघुनाथक मनमे ईहो बात उठलैन जे परिवारक स्तर बना ने घरक खर्च निर्धारित हएत मुदा सेहो तँ घरक काजेपर निर्भर करैए। घरक काज यएह ने जे समुचित भोजनक संग वस्त्र, घर आ बाल-बच्चाकेँ पढ़ैसँ लऽ कऽ बिआह-दान आ मौका-मोसीबत (बर-बेमारीसँ लऽ कऽ सामाजिक काज) सम्हारै धरि। अपन मनक दौड़मे रघुनाथ परेशान होइत गुम्मी लधने...।

मुदा तँए कि सुनीताकेँ प्रश्न दोहरबैक मन रहलैन। मन वौआइत माता-पितापर चलि गेलैन। पिताजी जिला- स्तरक प्रशासनिक अफसर रहितो पाँच गोरेक परिवारमे आठ दिनपर साए ग्राम खस्सीक कलेजी चाहे तीनटा अण्डा अनै छला आ सभ मिलि खाइ छेलौं। टुकड़ी-टुकड़ी बना-बना हिस्सा पुरबै छेलौं। बच्चेसँ कहियो झूठ नइ बजलौं। कहियो केकरो कोनो चीज नइ छुलिऐ। ओहने आदैत ने अपनो परिवारमे बाल-बच्चाकेँ लगबैक अछि। रघुनाथ कहलकैन- “अपन की विचार, स्पष्ट करू?”

‘विचार स्पष्ट’ सुनि सुनीता ठमकली। ठमकैक कारण भेलैन जे जेते दरमाहा उठा पिताजी पाँच गोरेक परिवारकेँ नीक जकाँ चलबै छला तेते तँ पतियो कमाइ छैथ, माइयो नोकरी नै करै छली, तखन नोकरीक की प्रयोजन! परिवारो तँ परिवारे छी। जहिना कोनो देशक किरिया-कलाप छै तहिना ने परिवारोक अछि। जे केलाक पछाइते पूर्ति हएत। जँ पाइयेक पाछू दुनू बेकतीक समय चलि जाएत तँ बाल-बच्चा आकि परिवार-समाजक बीच सम्बन्ध केना बनत? जखन कि अपना ऐठामक चिन्तनधारामे माए-बापकेँ सिरिफ जन्मदते नहि गुरु सेहो मानल गेल अछि। प्रश्न अछि जे पति-पत्नी मिलि बच्चाकेँ जन्मसँ तीन साल धरि पोसि-पालि कोनो विद्यालयमे दऽ दइ छिऐ, माए-बापसँ कोसो दूर। तैठाम माए-बापक आकर्षण बच्चाक प्रति केते दिन टिकत? तहूमे जे नोकरीक रूप बनि गेल अछि ओ घन्टाक समय किताबक

पन्नेमे नुकाएल जाइए। एक तँ ओहुना सभकेँ अपन जिनगीक बेकतीगत काज–शौच क्रियासँ सुतै धरि–ऐछे तैपर काजक वृहत भार सेहो पड़िये रहल अछि। समय गमौने आमदनी तँ बढ़िए जाइए। आमदनीक अनुरूप जिनगी बनबैक इच्छा तँ मनमे अछिए। प्रश्न चौबीस घन्टाक दिन-रातिमे अपन आकि परिवारक फड़ै-फुलैक केते समय बँचैए आ केते दुनियाँक दौड़मे जा रहल अछि। चाहे बेकतीगत जिनगी हुअए आकि पारिवारिक, समैनुकूल रस्ता तँ बनबैए पड़त, नहि तँ धारासँ कटि किनछैर लागि जाएब।

बेकतीक निर्माण लेल माने मनुख बनैले बेकतीगत कर्मक आवश्यकता पड़बे करै छै जँ से नै हएत तँ मानवीय संवेदनापर चोट पड़बे करत। तहिना परिवारो-समाजोक अछिए। सुनीतासँ स्पष्ट पुछैक कारण रघुनाथक मनमे अपन परिवार (माए-बापक) आबि गेलैन। परिवार तँ परिवारक लोककेँ बिसवासमे लइए कऽ चलत। तखने परिवारक असल रूप सोझमे पड़त, जइमे बेकतीक समुचित विकास होइ छइ। पत्नीक मनक बात बुझै दुआरे प्रश्न उठौलैन। मुदा जइ परिवारमे बौधिक अनुशासन अछि तइ परिवारक सुनीता, तँए प्रश्नपर ठमैक गेली। दुनूक बकार बन्न। ने रघुनाथ आगू बढ़ि किछु बाजि पबैथ आ ने सुनीता। मुदा चिड़ै जकाँ बोलक बदला लोलोसँ तँ काज नहियेँ चलत। लोलो तँ सुग्गा-मेनाक छी। एकटा पाकल तिलकोर-लताम खाइबला दोसर काँचोसँ काँच खाइबला। मुदा यक्ष प्रश्न जेहने रघुनाथक संग तेहने सुनीताक संग सेहो। ..एक पलंगपर बैसल रहितौ जोगिनी जकाँ साए जोजनपर दुनूक मन वौआइत रहलैन। केना नै वौऐतैन? आखिर परिवारक नीब गाड़ैक प्रश्न अछि ने।

अपन गतिए गाड़ी (ट्रेन) चलि रहल अछि, कोणक सीटपर बैसल मुनेसर बिसैर गेला, बेटाक फोनपर जानकारी देनाइ। ईहो थाह नै रहलैन जे कएकटा टीशन पार केलौं। मनमे सुलोचना बहिनक जिनगी

नचैत रहैन। आइ जँ आने बहिन जकाँ सुलोचनो बहिन सासुरमे रहितैथ, बेटा-पुतोहु, पोता-पोती रहितैन तँ हमरा रातिकेँ किए चलए पड़ैत। मुदा जँ से नै छैन तँ की हमहूँ बीरान भऽ जइऐन। एक तँ ओहिना भैया-भौजी लगमे रहितो हटल छथिन। तैसंग छोट बहिनो हटले सन अछि तैठाम के देखत वेचारीकेँ? तीनमे एक हम भेलिऐ, मुदा जँ तीनू थोड़बो-थोड़बो कऽ भार उठा लितैथ तँ मोटा तँ हल्लुक भइये जाइत। भने तँ बेटा कहबे केलक जे केकरो कियो परान नै दइ छै मात्र सेवा धरि करै छइ। तइमे जानि कऽ कोनो खोंट नइ होइ। बिनु बुझल भाइयो सकैए। नजैर पत्नीपर गेलैन-जिनगीक संगिनीक संकल्प लेनिहारि पत्नी सेहो बिछुड़ले जकाँ छैथ, जकाँ की छैथ जे जइ काजक नीविते जा रहल छी आ ओ संग नै छैथ तँ की भेल? मुदा बेटा तँ पीठपोहू अछिए। ..बेटापर नजैर पड़िते मुनेसर हाँइ-हाँइ कऽ जेबीसँ मोबाइल निकालि धरेलैन-

"बौआ, तेज गतिए जा रहल छी, कोठरीमे तँ इजोत अछि मुदा कोठरीक बाहर तेते अन्हार छै जे किछु देखि नै पड़ैए जे केतए गेलौं। स्टेशनक ठेकान नै रहल।"

पिताक बात सुनि रघुनाथ कहलकैन-

"कोनो चिन्ता मनमे नै राखू। हमहूँ जगले छी, समय-समयपर जानकारी दैत रहब। अखन कोनो डॉक्टर सभसँ सम्पर्क करब उचित नै बुझि रहल छी, तँए किनकोसँ सम्पर्क नै केलौं हेन।"

"ठीक छै, मोबाइल रखि दहक।"

मोबाइल रखिते सुनीता बजली-

"एक तँ अपनो बाबूजी केतेको रोगसँ रोगाएल छैथ तैपर बहिनक ई दशा छैन! केना कऽ सम्हारि पौता?"

सुनीताक बात सुनि रघुनाथ बाजल- "दोसर उपाय?"

रघुनाथक प्रश्नक उत्तर सुनीताकेँ नै फुरलैन। असमनजसमे पड़ल सुनीताकेँ देखि रघुनाथ बजला-

"पिताजी धैनवादक पात्र छैथ जे अपन रोगाएल वृद्ध शरीर रहितो सेवा करैले तैयार छैथ। जँ थोड़ो-थाड़ सभ कियो संग देबैन तँ की ओ पाछू हटता। किनौं ने पाछू हटता। ..ओना, जँ पाछूओ हटता मुदा जँ पीठपर रहबैन आ काजक महत देखब तँ हुनका हटनहि की हेतैन। जैठाम तक ओ अगुआ कऽ पहुँचल रहता तैठाम तकक अपनो आ परिवारोक तँ बनले रस्ता भेटत, मात्र ओइ दिशामे आगू बढ़ैक अछि।"

रघुनाथक विचार सुनीताक मनकेँ तेना हौंरलकैन जे विचारक पशे बदैल गेलैन। ..जहिना अखड़ाहापर हारैत खलीफा वा रंगमंचपर पछड़ैत नर्तक, कुश्ती वा मंचक मंचन बदैल दोसर दाओ वा चालि पकैड़ नव दृश्य सृजन करैए तहिना सुनीता पाशा बदलैत बजली-

"बाबूजीक जे दशा छैन ओ माए किए ने बुझि पौलैन?"

जहिना निरुत्तर होइत सुनीता पाशा बदैल लेलैन तहिना सुनीताक प्रश्न रघुनाथकेँ पाशा बदलैले बाध्य कऽ देलकैन। मुदा प्रश्न तँ एहेन सघन भऽ गेल जे बिहिया कऽ जड़ि पकड़ब कठिन अछि। बिना जड़ि भेटने केतबो चिक्कन शब्द किए ने प्रयोग होइ मुदा वस्तु–स्थिति तँ हेराएले रहत! ..एक संग अनेको प्रश्न रघुनाथक मनमे उठि एलैन। माइक खिधांस जाँघ तरक पत्नीकेँ कहब उचित हएत? जँ नै कहबैन सेहो तँ उचित नहियेँ हएत, एक तँ ओहुना पढ़ल-लिखल बुझनुक पत्नी छैथ आन जकाँ जँ चौबन्नियो-अठन्नी अबुझ रहितैथ तँ अँटाबेशो भऽ सकै छल, सेहो नै अछि। दोसर पति-पत्नीक बीच नव सम्बन्ध संगीक रूपमे ठाढ़ भेबे कएल अछि! ..जहिना कोनो छोट गाछक पहिल डारि सुखने-टुटने वा कटने जिनगी भरिक दाग बना दइ छै, तेना जँ भेल तँ कहियो सीना तानि सकब। जखने सीना तानि किछु बाजए लगब आ जँ

ओही बातक गोलासँ गोलियौल जाएब तखन छाती छोड़ि लगत केतए! जखने सीनामे गोला भीरत तखने दलदला कऽ करेजमे भूर करबे करत.!

विचित्र स्थितिमे रघुनाथ उलैझ गेला। मनमे उठलैन- जिनगीमे जखन आन संकट अबै छै तखन धर्म ओकरा बँचबैए, मुदा जखन धर्मेपर संकट औत तखन के बँचौत? ..जेना-जेना रघुनाथ प्रश्नक जड़ि तकैथ तेना-तेना संकट बढ़ल चलि जाइत रहैन। अखन धरि माइक देख-रेखमे रहलौं, जेकरा नकारब अनुचित हएत मुदा कोन रूपमे रहलौं ई तँ नकारल नै जा सकैए। ..विचारक गंभीरता रघुनाथक चेहराकेँ तेतेक मलिन कऽ देलक जे लगले पत्नीक प्रति बिसवास रोपब कठिन भऽ गेलैन। एना होइतो छैहे जे पोसल बच्चा कनियोँ सेवा पाबि कलशए लगैए मुदा रोगाएल आकि दूधकट्टू बच्चाकेँ तँ से नइ होइत, ओकरा कलशबैले जड़िमे मालीकेँ तेलक माली लऽ कऽ बैसला पछाइते आशा जगै छइ। मुदा रघुनाथकेँ से नै भेल, भेल ई जे जहिना पाँच बर्खक पछाइत भेटल संगी वा परिवार-जनकेँ बिछुड़ैक अन्तिम दिनक मिलाप पहिल दिनसँ मिला आगू बढ़ैए। मनमे अबिते रघुनाथ बजला-

“भने दुनू परानी अपनो सभ छी आ पितोजी गाड़ीमे असगरे हेता, एक तँ दूरक सफर तहूमे असगर आरो गड़ूगर होइ छइ, तँए नीक हएत जे अहीं हुनकासँ गप करू।”

ससुरसँ मुहाँ-मुहीं गप करब सुनीताकेँ अनुचित बुझि पड़लैन। अनुचित ई जे ससुर-पुतोहुक बीच पति होइ छैथ। भऽ सकैए किछु एहेन बात बजा जाए जे उपयुक्त नइ होइ। कारणो अछि। कारण ई अछि जे ऐठाम हम दुनू परानी छी, भरल-पूरल परिवारक बीच छी, मुदा ओ तँ गाड़ीमे असगरे छैथ तहूमे रातिक रस्ता। एक तँ ओहुना बोनो-झाड़मे मूससँ बेसी छुछुनैरे फड़ि गेल अछि, गाड़ी तँ सहजे गाड़ीए छी। जँ कहीं कियो बैगे पार कऽ नेने होनि, जइसँ ने किछु खाइक बँचल

होनि आ ने बेमारीक गोटी-दबाइ। ओ तँ बिषमो स्थितिमे भऽ सकै छैथ मुदा पुरुष-नारीक बीच एकटा ओहनो सम्बन्ध सूत्र अछि जे मरदा-मरदी भावहीन अछि, बेटा तँ बेटा भेलखिन। ..विचार मनमे अबिते सुनीता बजली-

"नीक हएत जे अहीं मोबाइलक सम्पर्क करू हमहूँ सुनब?"

सुनीताक बात सुनि रघुनाथक मनमे उठलैन- केकर मन कोन रूपमे कोनो चीज बुझैए ई तँ बजनहि बुझब। जँ हमहीं दुनू बापूत गप करब तँ अपने ढंगसँ ने करब। काजक दौड़मे जेतए धरि आबि चुकल छी तइसँ आगूएक गप ने करब, तइसँ हिनका की भेटतैन। मुदा प्रश्न तँ अछि पारिवारिक विचारक। बजला-

"देखियौ, जहिना कोनो गाछ बीजसँ होइ छइ जे एक दिस ओ अकास दिसन बढ़ै छै आ दोसर दिस सिर निकैल मुसराइत पताल दिसन बढ़ै छइ। पतालो दिस ने सिरगर सिर मुसरासँ आरो-आरो सिर सभ निकलै छै आ सिरोसँ सिर निकलै छै, आ तहिना धरतीक ऊपरोक भागमे डारि सभ निकलै छइ। ..जहिना सिरगर डारि गाछेक रूपमे बढ़ैत निकलैए आ माटिक तरक मुसरा शील बनि गाछक ऊपर आबि रूपमे बढ़ैए आ तइसँ दोसर-तेसर डारि सेहो निकलैत रहै छै, तहिना जइ परिवारमे अपना सभ छिऐ ओइ परिवारक पैछला पीढ़ीक सभसँ ऊपर (आगू) हम भेलिऐ आ हमरा पछाइत (पाछू) एक दिस अहाँ भेलिऐ आ दोसर दिस भाए। अहाँ ऐ मानेमे जे हमरा कान्हीक भेलिऐ। अहाँसँ उमेरो भाइक कम छइ। अहाँ पहिने स्कूल धेलिऐ, आगू भऽ दुनियाँक मंचपर एलिऐ, भाए पाछू आएल। तँए देहा-देही सम्बन्ध देखए पड़त।

जहिना हमरा संग पति-पत्नीक सम्बन्ध अछि तहिना भाइक संग दिअर-भौजाइक। तहिना दुनू दियादिनी भेलौं। जहिना छोट दियादिनी

बेटी तुल्य होइ छै तहिना ने छोट भाए बेटे जकाँ होइ छइ। यएह ने पारिवारिक सम्बन्ध अछि। तँए अखन पिताजी जइ स्थितिमे हेता तइसँ हटि आन बात पुछब हमरा-ले उचित नइ भेल। जँ कहीं काल्हि हमरो जाइक जरूरत भऽ गेल तँ भाए (छोट भाए) ऐठाम अहूँ चलि जाएब। जाबे धरि बहराएल रहब ताबे तक अहूँ रमाकान्त ऐठाम रहब। जखन-जखन गप करैक समय भेटत तखन-तखन अपनो दुनू दियादिनीक परिवारक आ अपने परिवारक गप-सप्प करब। गप-सप्प की करब जे सभ मिलि विचार करब जे पिताजी केतए धरि हमरा सभकेँ पहुँचा देलैन आ आगू हम सभ केना बढ़ब।"

एक संग रघुनाथक मुहसँ केतेको प्रश्न उठि गेल। मिथिलांगना सुनीता एके धारक अनेको घाट देखि वौआए लगली जे कोन घाट पहिल स्नान कएल जाए। तैबीच मोबाइलक घन्टी बजल। घन्टी बजिते रघुनाथ उठौलैन।

मोबाइल उठैबते रघुनाथकेँ आसीरवाद दैत मुनेसर पुछलखिन-

"बौआ, जगले छी?"

'जागल' सुनि रघुनाथकेँ किछु जवाब नै भेट सकलैन। खखास केलैन। खखास सुनि पिता बजला-

"बौआ, करीब जसीडीह आबि गेल छी। अखन धरि गाड़ीमे एको बेर उकासियो ने भेल हेन। ओना, दबाइयो आ पानियोँ रखने छी, जखने खाहिंस हएत तखने खा लेब, मुदा किछु छिऐ तँ गाड़ीए छिऐ। भुमकमक समय धरती डोलने देह-हाथ तँ डोलबे करै छै तहिना ने गाड़ियो छी।"

पिताक बात सुनि तोष भरैत रघुनाथ कहलकैन-

"बाबूजी, भोर तँ भइये गेल, फरिच जकाँ सेहो भऽ गेल, ओमहर केहेन बुझि पड़ैए।"

एक तँ खिड़की-केबाड़ बन्न तैपर बिजलीक इजोत तँए कोठरीक भीतर तँ दिने जकाँ बुझि पड़ैत मुदा गाड़ीक बाहर धुनि जकाँ रहने अन्हराएले। सर्द हवा अबै दुआरे मुनेसर खिड़की खोलि बाहर नै देखलैन। एक तँ तेज गतिए ट्रेन अछि तैपर जँ अहिना पुरबो-पछियाक गति होइ तखन तँ जाबे खिड़की खोलि देखि बन्न करब ताबे खिड़की मुँहक हवा तँ सर्द कइए देत। बाहर देखब ओते खगतो नहियेँ अछि। अखन तँ अदहासँ कनियेँ आगू बढ़लौं हेन, कहुना-कहुना तँ पान-सात घन्टाक रस्ता बाँकीए अछि।

बजला-

“बौआ, दस बजे तक दरभंगा पहुँच जाएब।”

‘दरभंगा’ सुनि रघुनाथ पुछलकैन-

“दरभंगासँ केना जेबइ। सुनै छी सकरीमे गाड़ी नै रूकै छै, तखन तँ दरभंगे उतरए पड़त किने?”

“हँ, से तँ दरभंगे उतरए पड़त। मुदा दोसर उपैयो तँ नहियेँ देखै छी। जँ आगू बढ़ि जाएब तँ मधुबनीमे गाड़ी रूकत। मधुबनीसँ नीक दरभंगे उतरब हएत। एक तँ मधुबनीसँ सवारीक रस्ता नीक नै अछि, तेते जरकिन अछि जे देह-हाथ तोड़ि दइए। तैसंग सवारियोक मेल नीक नहियेँ छइ। मुदा दरभंगासँ से सभ नीक अछि। बड़ी लाइनिक गाड़ी जाइयोनगर जाइए आ बिरौलो जाइए। एक-आध घन्टाक पछाइतो जँ गाड़ी हएत तँ गाड़ीए-सँ सकरी चलि जाएब आ ओइठामसँ निर्मलीक गाड़ी पकैड़ लेब। किछु अछि तँ ट्रेन सभसँ नीक सवारी अछि। दरभंगेमे नहा-धो सेहो लेब आ किछु खाइयो लेब। जँ से नै हएत तँ दबाइक बेरे हूसि जाएत।”

पिताक आशा भरल बात सुनि रघुनाथ मने-मन खुशी भेला। खुशीक कारण ई जे कोनो काज करैले जखन कियो विदा होइए तखन

काज पहिनहि कहि दइ छै जे जेते मनसँ करबह से तेते पेबह। ठढ़िया प्रणाम आ छठिक हाथी, पानिक किनछैरमे बैसल रहि जाइए। मुदा मुनेसरक काजक बीच कर्मठता झलकैत। जैठाम कर्मठता रहत तहीठाम ने सफलतो रहत...। बाजल-

“बाबूजी, आब हमहूँ ओछाइन छोड़िये दइ छी। फरिचो भइये गेल। दरभंगा पहुँचते फोन करब।”

रघुनाथक बात सुनि मुनेसरक देहक थकान जेना मेटा गेलैन। मेटा ऐ दुआरे गेलैन जे मन दरभंगा स्टेशनक बाथरूमे सँ निकैल अपनाकेँ दोकानपर खाइत बुझि पड़लैन। मने-मन गोटीक मिलान करए लगला जे तीनू गोटी एकबेर खेने चौबीस घन्टा निचेन भऽ जाएब। ताबे गामो पहुँचिये जाएब। गाम तँ गाम छी, नै कियो सेवा रूपमे औत तँ चारि गोरेकेँ भरि दिनक बोइने दऽ देबइ। तँए कि काज छोड़ि देब। बजला-

“बौआ, आइ बुझि पड़ैए जे सेवा-निवृति नै भेलौं हेन। भलेँ स्कूलसँ भऽ गेलौं मुदा परिवारो तँ छोट पाठशाला नहियेँ होइए। चारि भाए-बहिनक बीच ‘सुलोचना बहिन’ सभसँ जेठ छैथ जिनका परिवारसँ लऽ कऽ सासुर धरि ठोकरा जिनगीकेँ नीरस बना देलकैन, सोझहामे मृत्युक सिवा किछु शेष नै बँचलैन, तैठाम जँ अपनाकेँ पबै छी तँ ऐसँ बेसी जिनगीमे की करब। जिनगी जँ जिनगी पकैड़ चलत तँ जिनगी छोड़ि आरो भेटबे की करतै। जिनगी भेटल, सभ किछु भेटल।”

पिताक अह्लाद सुनि अह्लादित होइत बेटा कहलकैन-

“बाबूजी, मनमे कखनो ई नहि आनब जे खर्च-बर्च दुआरे काज नइ कऽ पाबि रहल छी। हमहूँ तैयार भऽ कऽ बैंको आ डॉक्टरो सभसँ सम्पर्क बना लइ छी। अहूँ दरभंगा उतैरते जानकारी देब।”

“बड़बढ़ियाँ, मोबाइल रखि दहक।”

भोरक भौड़ाएल भौंरा जकाँ रघुनाथकेँ देखि सुनीता अवसरकेँ हाथसँ नै गमा टिपली-

“वृन्दावनमे आगि लगल कोइ ने मिझाबै हौ.!”

सुनीताक प्रभात बेल सुनि रघुनाथ विस्मित भऽ गेल। जहिना चकेबा परिवार-समाजसँ भगौल बहिन लेल माए-बाप सभकेँ छोड़ि पीठपोहू भेला तहिना ने पितोजी भेल छैथ। की माएकेँ उचित भेल जे संगी नै भेलखिन। हो-ने-हो जँ कहीं रस्ते–पेरे हुनका किछु भऽ जाइ छैन तँ यएह भेल अर्द्धांगिनी, जिनगीक आधा। मुदा पिता-ले जे बनि सकत तइमे पाछू हटब बिसवासघात भेल। हो-ने-हो जँ दीदीक सेवा-ले माइयो बेपाट हेती तँ हुनका किनौं नै नीक कहबैन। जइ परिवारमे जन्म भेलैन तइ परिवार दिस बेसी झूकल रहै छैथ, रहथु। तइसँ परिवारमे कोनो खास बधो तँ उपस्थित नहियेँ होइए। मुदा जखन सोझहा-सोझही दुनू परिवारक बीच जँ कोनो प्रश्न उठैत अछि आ माए सासुरसँ नैहर दिस झुकै छैथ तँ अनुचित भेल। दुनूक बीच कोनो तरहक अनोन-बिसनोन आकि मधनोने-मिठनोन नइ हौउ से नीक बात मुदा जैठाम परिवारक जड़िक प्रश्न रहत तैठाम तँ विचारए पड़त किने जे केकरा जड़िमे पानि ढारल जाए।

दिनक सबा दस बजे गाड़ी दरभंगा स्टेशनमे पहुँचल। निर्मली-सकरीक गाड़ी जकाँ नहि जे जहिना चढ़ैकाल धक्कम-धुक्का आ पॉकेटमारी तहिना उतरैकाल। ओना, मुनेसरक मनमे उठलैन जे गाड़ीए-सँ रघुनाथकेँ फोन कऽ दिऐ मुदा फेर मन बदैल प्लेटफार्मेक भेलैन। गाड़ीसँ उतैरते रघुनाथकेँ कहलखिन-

“बौआ, दरभंगा पहुँच गेलौं। एके घन्टाक तरपटमे बिरौलक गाड़ी अछि तइसँ सकरी चलि जाएब। अखन बेसी बात नै करब। घन्टेक भीतर तैयारो होइक अछि।”

बैंक आ ऑफिसक काज रोकि रघुनाथ मने-मन पिताक रूप देखए लगला। एक तँ रोगसँ रोगाएल तैपर उमेरक रोग सेहो छैन्हे, मुदा काज केहेन करैक बाट धेने छैथ!

जितेन्द्रीक इन्द्री जहिना क्रियाशील होइत तहिना मुनेसरक सेहो रहैन। लगले बैग उठा शौचालय गेला। बैग रखि अपन क्रिया-कर्म करैत, कॉनटरपर दू-टकही दैत प्लेटफार्मसँ निकैल होटल पहुँचला। अधपेटा खा दबाइ खेलैन। हिसाब दैत, टिकट कटा पुन: प्लेटफार्मपर पहुँच गेला। गाड़ी लगले रहै, जा कऽ बैसला। बसिते साँस छोड़लैन। ओना, सकरीसँ दुनू सुविधा अछि। गामो लगे अछि। जे जरूरी बुझि पड़त से पकैड़ लेब। भने दिन-देखार अछिए। घरपर जा वस्तु स्थिति देखैत जेना-जे हएत से करब।

गाड़ी खुजैसँ पहिने गामेक राधाचरण सेहो धड़फड़ाएल ओही डिब्बामे पहुँचल। जगहक सिकेस देखि मुनेसर राधाचरणकेँ कहलखिन-

“राधाचरण ऐठाम आबह।”

अपने मुनेसर कनी घुसैक राधाचरणकेँ बैसबैत पुछलैन-

“सुलोचना बहिनक की स्थिति छैन?”

राधाचरण-

“सात दिनपर दरभंगासँ जा रहल छी। नीक जकाँ नै बुझल अछि। उड़न्ती समाचार सुनलौं।”

मुनेसर-

“किए सात दिनपर जाइ छह?”

राधाचरण-

“छोटकी बहिनकेँ पेटक ऑपरेशन भेल हेन।”

आगू बात नै बढ़ा मुनेसर बजला-

“ऑपरेशन सफल भेल किने?”

“हँ-हँ, खर्चा तँ बहुत भेल। परसू टाँका कटत। किछु रुपैआ-पैसाक भाँजमे जाइ छी। फेर काल्हि घुमब।”

राधाचरणक काजमे मुनेसर अपनो काज देखलैन। काज ई देखलैन जे जखन बहिनक ऑपरेशन भेल तखन माइयो आएले हेतैन। तैसंग एकटा-दूटा आरो समांग हेबे करतै। अपने ने अनाड़ी रहब मुदा जखन राधाचरणो काल्हि घुमबे करत तखन अपने हिसाबसँ समय बना लेब। कम-सँ-कम एते तँ हेबे करत जे समांगे जकाँ राधाचरण गामेपर सँ जा रहल अछि, जँ कहीं समयपर पाइक भाँज नै हेतै तँ कौल्हुका बदला परसूओ घुमि सकैए। किएक तँ काजपर काज ठाढ़ अछि। टाँका परसू कटतै। परसू तक पहुँचबाक समय तँ छइहे। मुदा अपना तँ से नै अछि भऽ सकैए जे आइयो घुमए पड़ए। ..मने-मन मुनेसर हिसाब बैसबए लगला। गुन-धुन करैत मनमे उपकलैन, आब कि कोनो ओ जमाना रहल जे मास-मास, दू-दू मासपर पोस्ट ऑफिससँ पाइ भेटै छइ। आब तँ जेतए जाउ तेतए बक्सा-पेटी संगे रहत। तेहेन ने ए.टी.एम. भऽ गेल अछि जे जखने खगता तखने पूर्ति होइए। सामंजस्य करैत मुनेसर बजला-

“राधाचरण, अखन तँ तूँ सगरे अस्पताल घुमैत हेबह?”

अपन प्रशंसा सुनि राधाचरणक मनमे खुशी उपकल। खुशी उपैकते बड़बड़ए लगल-

“काका, साते दिनमे की सभ ने देखलौं। एकटा नवका दुनियाँ देखलौं।”

‘नव दुनियाँ’ सुनि मुनेसर बजला-

“की नव दुनियाँ देखलह? कोनो कि आइए अस्पताल बनल जे

नव देखलह।”

जहिना चुल्हिपर चढ़ल बरतनमे निच्चासँ आँच लगला पछाइत बरतनक पानि उधियाए लगैत तहिना राधाचरणक मन उधियाइत। मुदा पाइक चिन्ता मनकेँ दबैत। मुँहक सुर्खीसँ मुनेसर बुझि गेला जे पाइक मारि वेचाराक मनकेँ मारि रहल छइ। गरजू अखन जेहेन ई अछि तेहने तँ अपनो छी! से नइ तँ किए ने अन्हरा-नेंगराक दोस्ती जकाँ हाथ बढ़ाबी...।

बजला- “केते पाइक खगता छह, राधाचरण?”

ओना, लोकक बीच एहेन धारणा बनि गेल अछि जे दुनियाँ-जहानक सभ बात बाजत मुदा लेन-देनक बात छिपा कऽ रखैए। मुदा खगता एहेन परिस्थिति पैदा करैए जे छिपारोकेँ देखार कइये दइ छइ। राधाचरण बाजल-

“काका, हम तँ संकोचे मुँह नै खोललौं। किएक तँ एक तँ अहाँ सेने ओहन सम्बन्ध नै अछि, दोसर अहूँ तँ अखन विपैतेमे पड़ल छी।”

राधाचरणक बात सुनि मुनेसर गुम भऽ गेला। हमरा परिस्थितिकेँ आँकि बाजि रहल अछि जे अहूँ विपैतेमे छी! बजला- “जखन जिनगी अछि तखन किछु-ने-किछु आपैत-विपैत एबे करत, तइले लोक घबरा जाएत तँ काज चलतै। जानियेँ कऽ तँ अन्हार घर साँपे-साँप अछिए। मुदा ओहीमे ने सपहरिया अपन शिकारो खेलाइए।”

मुनेसरक बात सुनि राधाचरण थकथका गेल। बाजल-

“काका, अखन धरिक सभ काज सम्हारि नेने छी मौका-मोसीबत दुआरे माइयक हाथमे पान साए दइयो कऽ आएल छिऐ। सभ किछु मिला डेढ़ हजारक खर्च आगू अछि।”

‘डेरहे हजार’ सुनि मुनेसरकेँ हल्लुके बुझलैन। बजला- “अच्छा पाइक चिन्ता मनसँ हटा लएह।”

पाइक चिन्ता हटिते जहिना फलकैत फूलसँ भौंरा फुड़फुड़ा कऽ निकैल उड़ैए तहिना राधाचरण बाजल-

“काका, कहए लगलौं जे नवका दुनियाँ देखलिऐ, से कहै छी। जहिना असमसान घाटक लीला अछि तहिना अस्पतालक लीला अछि। एक गोरेकेँ कनैत देखलिऐ, पुछलिऐ तँ कहलक जे खेत बेच कऽ बेटाक इलाज करबए एलौं, डॉक्टर ऐठाम पहुँचबो ने केलौं आकि तइ बिच्चेमे तीनटा बदमास आएल आ रुपैआ छीनि लेलक। मुँह तकैत रहि गेलौं। के हमर बात पतियाएत। लगमे थाना, जेरक-जेर लोक तैठाम एना भेल!”

मुनेसरक मन सुलोचना बहिनपर टँगल तँए दोसर बात कानमे झड़ जकाँ बुझि पड़ैन। बजला-

“अनेरे किए वौआइ छह राधाचरण। ठन्का ठनकै छै तँ कियो अपना माथापर हाथ दइए। ई कहह जे टुटल हड्डीक इलाज कोन-कोन डॉक्टर करै छैथ?”

मुनेसरक बात सुनि राधाचरण गुम भऽ मने-मन विचारए लगल। इलाज तँ अस्पतालोमे होइ छै आ प्राइवेटोमे होइ छइ। मुदा जहिना ‘अनेर गाइक धरम रखबार’ होइ छै तहिना अस्पतालोक गति अछि। कियो फीसक दुआरे काजमे बेइमानी करैए तँ कियो दबाइये बेच लइए। कियो कमीशनक भाँजमे काज बिगाड़ैए तँ कियो खेनाइये बेच लइए। तइसँ नीक सुविधा प्राइवेटमे छइ। मुदा ओ तँ पाइबलाक छी एकक तीन लगै छइ। बाजल-

“काका, जेहेन पाइ तेहेन इलाज। की कहब.!”

राधाचरणक बात सुनि मुनेसर तारतम करए लगला जे की नीक। मुदा जहिना बिनु हवोक कोनो आम गाछसँ धब-दे खसैए तहिना मनमे खसलैन। इलाजो तँ इलाज छी। ई तँ नहि जे साए बर्खक बुढ़क पाछू

घर-घराड़ी बेच लगा देब। जँ से लगा देब तँ ऐगला पीढ़ीमे जँ ओहने रोग लगि जाए तखन की कएल जाएत मुदा अछैते सम्पैते इलाज नइ होइ, सेहो तँ नीक नहियेँ हएत। खाएर जे हौउ, जहाँ धरि सम्भव हएत तहाँ धरि मनसँ कसैर नै करब। बजला-

"राधाचरण, जँ आइए पाइक जोगार भऽ जेतह तँ आइए घुमि जेबह?"

उत्सुक होइत राधाचरण बाजल-

"आइए किए कहै छी, अखने जँ भऽ जाए तँ ऐगला टीशनमे उतैर दोसर गाड़ी पकैड़ लेब। कहुना भेल तँ बेमारीक अवस्था भेल किने। कखन कि भऽ जेतइ तेकर कोनो ठेकान छै, से तँ रहनहि प्रतिकार हएत।"

राधाचरणक विचार सुनि मुनेसरक मनमे उठल, पकड़ाएल संगी छुटि जाएत। से नहि तँ गाम पहुँच कम-सँ-कम सुलोचना बहिनकेँ देखि लेब उचित हएत। बजला-

"गाम गेलासँ परिवारोक हाल-चाल बुझि लेबह, नीक हेतह ने। कहै छह जे सात दिन गाम छोड़ना भऽ गेल।"

राधाचरणक दहलाएल मन आरो दहैल गेल। बाजल-

"हँ से नीक हएत। गामक आरो समाचार सभ बुझि लेब। एक लपकन खेतो-सभ देखि लेब।"

अपन सुढ़ियाइत काज देखि मुनेसर बजला-

"अच्छा, एकटा कहह जे गाममे गाड़ी-सवारी समयपर भेट जाएत किने?"

"गाड़ी-सवारीक कोन कमी छइ। तखन तँ समय-कुसमय कनी दब कि उनार भइये जाइ छइ। जखन खगता हएत तखन गाड़ी भेटत।

अहाँकेँ नहि ने बुझल अछि, हमरा तँ सभ गाड़ीबला सभसँ चिन्हारे अछि। घरेपर बैसल-बैसल सभ काज भऽ जेतइ।”

स्टेशनसँ संगे दुनू गोरे गाम पहुँचला। गाम आबि राधाचरण अपना ऐठाम गेल आ मुनेसर अपना ऐठाम। ..आँगन पहुँचते मुनेसर देखलैन जे ओसारक ओछाइनपर सुलोचना बहिन पड़ल कुहैर रहल छैथ। सिरमा लग लोटामे पानि राखल अछि। सौंसे देह झाँपल, खाली मुँहटा उघार छैन। दोसराइत कियो ने।

..मुनेसरक मनमे उठलैन जे सम्बन्धो तँ दू रंगक होइए। ओना, सम्बन्धक अनेको डारि-पात छै मुदा मोटा-मोटी दू रंगक तँ अछिए। एक ओ भेल जे कुल-खनदान, दियाद-वादक होइए आ दोसर उपकारक होइए। अखुनका समयमे केकरा एते छुट्टी छै जे अपन काज छोड़ि दोसरकेँ देखत। सभ अपने पाछू बेहाल अछि। ने बाप-माएकेँ बेटा-पुतोहु देखैए आ ने बेटा-पुतोहुकेँ बाप-माए। ओना, पढ़ै-लिखैसँ लऽ कऽ बिआह-दान धरि बाप-माए बेटाकेँ देखिते अछि भलेँ कमाइ-खटाइ बेरमे छुटि जाए मुदा से नहि। जखने बेटा-बेटीक जन्म होइए तखने सँ माए अपन सुन्दरता दुरि होइ दुआरे अपन दूध नै पीआ बजरूआ दूध पिआबऽ लगैए। तैसंग कनियेँ टेल्हुक भेला पछाइत आवासीय विद्यालयमे नाओं लिखा भर्ती करा दइ छइ। जइसँ मौके-कुमौके सोझहा-सोझही भेँटो-घाँट होइ छइ। जँ अहिना हएत तँ किए केकरो कियो चिन्हत। मुदा उपकारक सम्बन्ध से नइ होइ छइ। एक तँ ओहुना लोकक आँखिमे पानि रहिते छै जे फल्लाँ बेरपर पाइसँ आकि समांगसँ ठाढ़ भेल रहए तँए अपन कर्ज चुकाएब उचित अछि। ..मुनेसरक मन दुनू दिससँ ओझरा गेलैन। गाममे नै रहने समाजक बीच किछु कएल नै अछि। दियादो-वाद तेहेन जे भोज तँ खाइयो लइए मुदा छुतका-केश कटबैमे नाकर-नुकर करिते अछि।

सुलोचना बहिन लग मुनेसर बैस बजला- “बहिन! बहिन! हम

मुनेसर! एलौं!”

मुनेसरक अवाज सुनि सुलोचना बहिन आँखि खोलि उठए लगली। पेटसँ ऊपरक अंग तँ डोललैन मुदा डाँड़क निच्चाँ सगबगेबो ने केलैन। तहूमे फुलि सेहो गेल रहैन। उठैक प्रक्रिया देखि मुनेसर बजला-

“नै उठि हएत, सुतले रहू।”

मनमे एलैन जे पहिने पितियौत समांग सभकेँ बजा पुछिऐन आकि पहिने बहिनेक बात सुनी। पहिने बहिनक बात सुनब उचित बुझि बजला-

“बहिन, की सभ भेबो कएल आ होइतो अछि?”

बाढ़िक लहैरमे जहिना कोनो चुट्टी वा आन जन्तु नान्हियोँ-टा सहारा पाबि खुशीसँ खुशीया जाइत तहिना सुलोचना बहिन अन्तिम सहारा पाबि खुशी भेली। खुशी एते भेली जे मने दहला गेलैन। बजली-

“बच्चा मुनेसर, जे भेल से तँ भेबे कएल आ जे होइए से होइते अछि मुदा तूँ गाड़ीक झमारल छह पहिने किछु खा लएह। चाहो बना कऽ दैतियह से तँ समांगे खसल अछि।”

सिनेहासिक्त बहिनक बोल सुनि मुनेसर विस्मित भऽ गेला। मुदा अपनो आगू-पाछूक बाट बन्न देखि थकथका गेला। थकथकाइत मन हारैत जिनगी देख, अन्तिम साँस गनैत बजला-

“बहिन, जेते दिन सोझहा-सोझहीक दर्शन अछि से तँ नीके कि अधले रहबे करत, मुदा अपनो हूबा करू आ जेते पार लगत से करबो करब।”

दहलाइत मन सुलोचना बहिनक, मुनेसरक बात नीक जकाँ सुनबो ने केलैन, मुदा गपक विराम देखि बजली-

“बच्चा, ने एको बेर दर-दियाद देखए अबैए आ ने एको परानी जुगेसर। बड़ आशा छल जे बेर-विपैतमे कविता ठाढ़ हएत। मुदा ओहो

एको बेर घुमि कऽ नै तकलक। तखन तँ दुनियाँमे रहल के जेकर मुँह देखि जीबो करब, तइसँ नीक जे भगवान जगहे दैथ।”

सुलोचना बहिनक टुटैत दुनियाँक सम्बन्ध देखि मुनेसर बजला-

“दुनियाँमे अहिना सभ दिनसँ होइत एलैए, होइत रहतै। तहीले ने लोक नीक कि अधला कऽ लइए। अच्छा पितियौतो सभसँ कनी गप कऽ लइ छी आ अखने डॉक्टर ऐठाम लऽ जाएब।”

कहि मुनेसर पितियौतक दरबज्जा दिस बढ़ला तँ मरदा-मरदी कियो भेँट नइ भेलैन। तही बीच राधाचरण पहुँचल। राधाचरणकेँ देखिते मुनेसर कहलखिन-

“राधाचरण, कनी झंझारपुर चलू। अहूँक काज रस्तेमे कऽ देब। झंझारपुरमे बहिनकेँ देखा, जेना जे नीक बुझि पड़त तेना से करब।”

मुनेसरक बात सुनि राधाचरण बाजल-

“काका, गाड़ियोबलाकेँ कहि दइ छिऐ जाबे ओ औत ताबे गामपर सँ तैयारो भेल अबै छी।”

गाड़ी अबिते राधाचरण जनिजाति सभकेँ चरियबैत कहलकैन-

“चारि-पाँच गोरे उठा कऽ चढ़ा दियौन।”

मुदा बगलमे ठाढ़ मुनेसरक मनमे रंग-बिरंगक प्रश्न उठि गेलैन। जँ मुँह खोलि किनको संग चलैले कहबैन तँ पुरुखक नाओं लगा बहन्ना करबे करती, तखन? बजला-

“राधाचरण, परिचरजा करैमे जनिजातिक जरूरत हएत, से..?”

मुनेसरक बात सुनिते राधाचरण बाजल-

“काका, चिन्ता किए करै छी। अस्पतालमे नर्स सभ रहिते अछि। तइले काज रोकब नीक नहि।”

जहिना मुनेसर राँचीसँ आएल रहैथ तहिना बैग समटले रहैन।

तैयार होइक प्रश्ने नहि, तैयारे रहैथ। हाथे-पाथे तीन-चारि गोरे पकैड़ सुलोचना बहिनकेँ गाड़ीमे चढ़ौलैन।

ओना, झंझारपुरमे सरकारियो अस्पताल अछि आ प्राइवेटो इलाज चलिते अछि। सरकारी अस्पतालक कियो माए-बाप ऐछे नहि। भगवाने भरोसे चलैए। बाटमे मुनेसर राधाचरणकेँ पुछलखिन-

“सभसँ नीक डॉक्टर के छैथ?”

नीक डॉक्टर सुनि राधाचरण अकबका गेल। नीक-अधलाक विचार तँ ओइठाम होइए जैठाम एके-विभागक अनेको डॉक्टर रहैए मुदा जैठाम सभ बेमारीक डॉक्टरो फुटा-फुटा नै अछि तैठाम केना नीक-अधला बुझब। तहूमे हड्डी रोगक तँ लऽ दऽ कऽ एके गोरे छैथ तैठाम केना नीक-अधला बुझब। तखन तँ जएह छैथ सएह नीक। नइ मामासँ कनहे मामा नीक किने। बाजल-

“काका, ऐठाम जे राँची जकाँ आकि दरभंगा-पटना जकाँ तकबै तइसँ काज चलत। ऐठाम तँ टुट-फाटक एके गोरे इलाज करै छैथ, दोसर ठाम जइए कऽ की हएत?”

राधाचरणक बात सुनि मुनेसर मने-मन विचारलैन तँ दमगर बुझि पड़लैन। दोसर उपाय की अछि। तहूमे कोनो जरूरी अछि जे जँ एको गोरे छैथ तँ अधले छैथ। नीको भऽ सकै छैथ। तखन तँ एकटा कमी डॉक्टरोमे छैन्हे, जे जेहो रोग परेखमे नै आएल ओहू रोगीकेँ पकैड़ घिसिएबे करै छैथ। खाएर जे हौउ, अपनो तँ सोलहन्नी चौपट्टे नै छी, नीक कि अधला देखबे करब।

डॉक्टर ऐठाम पहुँचैत-पहुँचैत गोसाँइ डुमि गेल। टहलैले डॉक्टर रमेशो चलि गेल छला। मुदा गाड़ी पहुँचते पत्नी जानकारी देलखिन। डॉक्टर रमेश लगले पहुँचला। पहुँचते सुलोचना बहिनकेँ देखलखिन। देखिते बजला- “मास्सैब, जेते ओजारक जरूरत पड़त तेते नै अछि।

नीक हएत जे दरभंगा लऽ जइऐन।”

दरभंगा सुनि मुनेसर मने-मन तारतम करए लगला जे एक संग केतेको समस्या अछि! सोझहे होलो-लोलो करैत चलि जाएब आ ओइठाम सम्हारल नइ हुअए तखन की करब। दरभंगा गाम थोड़े छी जे लाजो-पछे लोक मदैत करत। अपने असगर छी, तहूमे नीक जकाँ बुझल गमल नै अछि। ई तँ धैनवाद राधाचरणेकेँ दी जे एतबो मदैत केलक। मुदा रोगीक जे दशा अछि ओहो राँची-पटना लऽ जाइबला नै अछि। गाड़ियो-सवारीक असुविधा अछि। एन-एच बनने पटनाक तँ भाइयो गेल मुदा राँचीक तँ नहियेँ भेल अछि। छोटकी गाड़ीबला एते दूर जाइयोसँ हिचकिचेबे करत। जँ पटना जाइले तैयारो हएत तँ जे समस्या (समांगक) दरभंगामे अछि से तँ पटनोमे हेबे करत। ..काज भरियाइत देखि मुनेसर राधाचरणकेँ पुछलाखिन-

“राधाचरण, हमरा की असान हएत?”

मुनेसरक प्रश्न सुनि राधाचरण पेसो-पेसमे पड़ि गेल। जहाँ धरि बनि पड़ल संग देलिऐन। अपनो बहिनक ऑपरेशन भेल अछि, तेकरो छोड़ब उचित नहि। बेमारी बेमारी छी, कखन की भऽ जाएत तेकर कोन ठेकान। जँ हम भार लेबैन तँ पार लगाएब कठिन भऽ जाएत। एक संग केरा-दहीक भार कियो थोड़े उठा सकैए। जखन उठबे ने करत तखन चलत केना। एकटा भेल कसताराक दही दोसर भेल बागनरक घौर। ठढ़कानर जकाँ छीपक मुँह केतौ आ करीनक मुँह केतौ रहत! मुदा तइसँ की! मनुक्ख तँ मनुक्ख छी, नीक बात सभकेँ प्रिय लगै छइ। ओना, नीकोक अनेक रूप छै मुदा से नहि काजक नीक, नीक भेल।

..काजकेँ ठेकनबैत राधाचरण बाजल-

“काका, ऐ देहक काजे की छै, जगरनाथ आ केदारनाथ नीक रहितो दुनू दू दिस अछि। एकटा पूब अछि आ दोसर पच्छिम। किम्हरो

तँ एके दिस जाएब। एकर माने ई नहि ने भेल जे दोसर अधला भेल। हमरो तँ अहाँ देखिते छी।”

राधाचरणक बात सुनि मुनेसर मने-मन विचारए लगला जे जहिना बहिन हमर तहिना तँ अपनो छइ। तहूँमे दुनियाँक बोनमे अपन सम्बन्ध आ भूमि सेहो अछिए। तखन जहिना सुलोचना बहिनक भार हमरा ऊपर अछि तहिना तँ राधाचरणोकेँ छइ। तहूमे सुलोचना बहिन अस्सी बर्ख पार कऽ गेल छैथ जखन कि राधाचरणक बहिन कुमारिये अछि। जे दुनियाकेँ किछु ने अखन धरि देखलक हेन। उचित हएत जे राधाचरणकेँ अपन काज करैले छोड़ि दिऐ। अखन धरि वेचाराक जान भरियाएले छै तँए भऽ सकैए जे बेबस हुअए। से नहि तँ पहिने राधाचरणकेँ रुपैआ दऽ देब उचित हएत। जखन ओकरो काज सुढ़िया जेतै तखन देखैयोक अवसर भेटत जे आब ओ कि करैए। काज छोड़ि चलि जाइए आकि काज सुढ़िया कऽ जाइए। कहलो गेल छै दुखमे सुमिरन सभ करे...।

पैछला जेबीसँ पर्श निकालि मुनेसर डेढ़ हजार रुपैआ दैत राधाचरणकेँ पुछलखिन-

“काज सम्हैर जेतह आकि आरो खगता छह?”

ओना, अखन धरिक हिसाब राधाचरणक डेरहे हजारक छल मुदा कोट-कचहरी आ अस्पतालक हिसाब अनठिया-ले कनी उकड़ू होइते अछि। आएल लक्ष्मीकेँ हाथसँ छोड़ब नीक नहि बुझि राधाचरण बाजल-

“काका पान साए जँ आगरे कऽ दऽ देब सेहो नीके हएत?”

राधाचरणक बात सुनि मुनेसरक मनमे उठलैन, खगल लोककेँ अहिना होइ छइ। मुदा जखन पुछि देलिऐ तखन नहियोँ देब नीक नहियेँ हएत। दू हजार रुपैआ पूरा कऽ दैत मुनेसर बजला- “आब तँ कोनो

उलझन नहि ने रहतह?”

कलियाएल फूल जकाँ मुस्की दैत राधाचरण बाजल-

“काका, आब तँ परसू अपन रोगीकेँ घर पहुँचा अहाँ जेतए रहब तेतए पहुँच जाएब। रस्तोक भाड़ा भइये गेल।”

राधाचरणक बात सुनि मुनेसरकेँ ग्लानि भेलैन। ग्लानि ई भेलैन जे एक-सँ-अधिक वस्तु मिलौला पछाइत जहिना खिचड़ियो आ खीरो बनैए मुदा दुनू एक तँ नइ भेल। ❑

पाँचम पड़ाव

डॉक्टर रमेशक बात सुनि मुनेसर मने-मन गर अँटबए लगला जे कोनो धरानी सुलोचना बहिनकेँ लऽ कऽ जे राँची पहुँच जाइ छैथ तँ सभसँ नीक हएत। राँचीक गाड़ी काल्हि आठ बजे रातिमे दरभंगासँ अछि। तैबीच भरि दिनक बात रहल। गाड़ीमे बुझल जेतइ...।

बजला-

“डॉक्टर साहैब, राँची पहुँचै तकक ओरियान अहाँ कऽ दिअ।”

मुनसेरक बात सुनि डॉक्टर अपन भार कम होइत देखि बजला-

“इन्जेक्शन, दबाइ दऽ दइ छिऐन काल्हि चारि बजे तक एतै अँटैक जाउ। सभ बेवस्था अछिए। भरि दिनक घर भाड़ा आ दबाइक खर्च लागत। तीन दिन तक एक्के-उपे रहती, कोनो बेसी तरद्दुतक जरूरत नइ पड़त।”

मुनेसर-

“बड़बढ़ियाँ। राधाचरण कौल्हुके गाड़ी पकैड़ चलि जाएब।”

मुनेसरक बात सुनि राधाचरण बाजल-

“हमरा की कहै छी, हम की कहब?”

मुनेसर-

“डॉक्टरो साहैबक विचार सुनियेँ लेलिऐन। तखन तँ कौल्हुका गाड़ी पकड़ै धरि तूँ संग दएह।”

राधाचरण-

“ओहुना काल्हि दरभंगा जाएबे अछि, तैबीच जँ दोसरो काज

भऽ जाइए तँ हरजे की। मुदा भरि दिन जे झंझारपुरमे बैसल रहब तइसँ नीक दरभंगे हएत। किएक तँ अपनो रोगीकेँ देखि लेब आ ईहो काज सम्हारि लेब।”

झंझारपुरमे सभ सुविधा देखि मुनेसर बजला- “ओना, तोरो विचार कटैबला नहियेँ छह। मुदा जखन भरि दिनक घरक भाड़ा ऐठाम लागिए जाएत आ सभ सुविधो ऐछे तखन एना कऽ जेबाक प्रोग्राम बनाबह जे दरभंगामे रहैक जोगार नै करए पड़ए।”

दुनू काजकेँ अँटावेश करैत राधाचरण बाजल-

“काल्हि बारह बजे तक ऐठाम रहू तेकर पछाइत एतए-सँ चलि जाएब। हमहूँ अपन रोगी देखि डॉक्टर साहैबसँ राय-विचार कऽ लेब आ अहूँकेँ गाड़ीमे बैसा देब।”

राधाचरणक बात मुनेसरकेँ जँचलैन। मुड़ी डोलबैत स्वीकार करिते रहैथ आकि धक-दे बेटा-रघुनाथ मोन पड़लैन। मोन पड़िते मोबाइलसँ रघुनाथकेँ कहलखिन-

“रघुनाथ, झंझारपुरमे छी। ऐठाम दरभंगा-पटना आकि राँची जकाँ तँ सुविधा नहियेँ अछि, डॉक्टरो साहैब कहलैन जे नीक हएत राँचीए लऽ जैयनु।”

मुनेसरक बात सुनि रघुनाथ बाजल-

“राँची बीचक भार जँ ओ लऽ लइ छैथ तँ नीक हएत जे राँचीए चलि आबी।”

मुनेसर-

“हँ, से डॉक्टरो साहैब कहै छैथ जे तीन दिनक बेवस्था कऽ दइ छी। जँ दरभंगा आकि पटना जेबो करब तँ असगरे फ्रीसान भऽ जाएब, तइसँ नीक राँचीए हएत।”

रघुनाथ- “जे बेसी नीक हुअए से करू।”

प्रात-भने दोसर चरिपहिया गाड़ी भाड़ा कऽ बारह बजे तीनू गोरे दरभंगा विदा भेला।

दरभंगा पहुँच मुनसेर स्टेशनमे पता लगौलैन जे कोन प्लेटफार्मपर गाड़ी अबै छइ। भाँज लगा दूटा कुलीकेँ पकैड़ प्लेटफार्मपर सुलोचना बहिनकेँ लऽ जा सुता देलैन।

राधाचरण बाजल-

“काका, चारि-पाँच घन्टा अहाँ ओगइर कऽ रहू, तैबीच हम अपनो समांग सभसँ भेँट केने अबै छी।”

“बड़बढ़ियाँ।”

स्टेशनसँ विदा होइत राधाचरण मने-मन हिसाब बैसबए लगल जे साढ़े-सात बजे जयनगरसँ गाड़ी पहुँचैए। तैबीच एनौं कोनो काज नहियेँ हएत। मुदा अपन जे काज अछि, तहूमे काल्हि टाँका कटिते डेरो तोड़ब। तैबीच जेकर जे हिसाब-बाड़ी छै सेहो सभ फरिया लेब आ साढ़े-सात बजे गाड़ी छै, साते बजे पहुँच जाएब। सएह केलक।

राँचीक गाड़ीमे दुनू भाए-बहिनकेँ बैसा राधाचरण बाजल-

“काका, ओना राँचीमे अपन घरे अछि, जानो-पहचानोक लोक सभ छेबे करैथ, असुविधा नहियोँ हएत, मुदा तैयो कहि दइ छी जे जँ जरूरत हुअए तँ कहब।”

राधाचरणक बात सुनि मुनेसर विस्मित भऽ गेला। मनमे उठलैन कोन जन्मक उपकार कएल छल जे राधाचरण एते केलक। जे पाइ देलिऐ से नइ लेब। अहू वेचाराकेँ पैंच-पालट नै हेतइ आ अपनो मन कहत जे बेमारीमे मदैत केलऐ। जिनगी भरि तँ कमेबे केलौं, मुदा एहेन उपकारो तँ नहियेँ केने छेलौं। ओना, अखनो समाजमे एहेन फुसि-फटक खर्च सभ अछि जे जँ ओकरा बँचा कऽ माने रस्ता बदैल कऽ खर्च कएल जाए तँ समाजक जे पढ़ैबला अछि आकि बर-बेमारी अछि

ओ शत-प्रतिशत समाधान भलेँ नै हौउ मुदा बहुत हद तक तँ हेबे करत। तेतबे किए, समाजो जे दिशा-विहीन चलि रहल अछि ओहो सुढ़िया कऽ रस्तापर चलि औत। जाबे समाज आकि बेकती अधला रस्ता छोड़ि नीक रस्ता पकैड़ नै चलत, ताबे कल्याण केना हएत। कल्याणक ढोल केतबो किए ने बजौल जाए मुदा ढोलेसँ काज थोड़े चलत। लगले मन घुमलैन। कोनो जरूरी अछि जे राधाचरणकेँ हमरासँ कोनो उपकारे भेले हेतइ। एहनो तँ भऽ सकैए जे ओकर अगुरबारे होइ। होइ किए, भेबे कएल ने। जँ किछु उपकार कएल रहैत तँ मन नै रहितए? जिनगीमे सभ काज सभकेँ मन रहौ आकि नै रहौ मुदा उचित-उपकार तँ रहिते छइ। बजला-

"राधाचरण, तूँ भगवान बनि आगूमे ठाढ़ भेलह। जीवनमे कहियो नै बिसरब। तोहूँ मनमे रखि लएह जे जँ कहियो जरूरत हुअ तँ कहिहह। शरीर तँ देखिते छह जे अपनो दबाइयेपर चलै छी, एकर माने ई नहि ने जे अकाजक भऽ गेल छी।"

मुनेसरक बात सुनि राधाचरण बिसैर गेल जे तीन किलो मीटर असगरे जाइयोक अछि। बाजल किछु ने। मुनेसरक आँखि-पर-आँखि गाड़ि सोझहे देखैत रहल।

गाड़ीक समय होइते सीटी देलकै। सीटी सुनि राधाचरणक भक्क खुजल। गाड़ी ससरलै। राधाचरण प्लेटफार्मपर ठाढ़, मुनेसर राँचीक बाट पकड़लैन। पाछू उनैट मुनेसर आ आगू देखैत राधाचरण, धीरे-धीरे ओझल होइत गेल। राँची पहुँच मुनेसर अपना डेरापर एला। एक्के दुइए भाड़ादार सभ आबि-आबि सुलोचना बहिनकेँ देखए लगलैन। जेते मुँह तेते जुति-भाँति।

ओसारपर सुलोचना बहिनकेँ सुता अपने मुनेसर आगू-ले सोचए लगला। स्त्रीगण छी तँए स्त्रीगणक जरूरत अछिए। ओना, भाड़ादार सभ छैथ मुदा अपनो तँ परिवार अछिए। ओना, हुनका मनमे अनोन-

बिसनोन रहिते छैन मुदा की? परिवारो आ समाजोमे तँ ई गुण ऐछे जे समयपर चुनो-तमाकुल-ले झगड़ा होइ छै आ बेर-बेगरतामे सम्हारो होइ छइ। दिनक दोख कहि लोक टारि दइ छइ। नीक हएत जे इलाजमे जाइसँ पहिने परिवार जनसँ राय-विचार कऽ ली। ओना, परिवारमे तीन बापूत आ तीन सासु-पुतोहु अछि, मुदा लगमे तँ पत्नीए-टा छैथ। साए किलो मीटर कोनो बेसी दूर नइ भेल। तैसंग ईहो हएत जे जँ पुतोहुकेँ कहबैन तँ बेटो बरदाएत। तइसँ नीक पत्नीए हेती।

मन तँ मानि गेलैन मुदा लगले प्रश्न अँकुर गेलैन जे जँ कहीं पत्नी सहयोग नै करैथ, तखन?

मुरछैत मुनेसरक मन तुरैछ उठलैन। एक गड़ूकेँ बहत्तैर आशा। पत्नीकेँ मोबाइल लगा मुनेसर बजला-

“सुलोचना बहिनकेँ एतै लऽ अनलयैन। आनठामक असुविधा देखि यएह नीक बुझि पड़ल, तँए अहाँ छुट्टी लऽ कऽ चलि आउ?”

मुनेसरक बात सुनिते जेना जीहेपर साधनाकेँ रहैन तहिना बजली-

“अनलयैन तँ नीक केलौं। अस्पतालमे भर्ती करा दियौन। ओइठाम सभ बेवस्था छइहे, हमर कोन काज अछि। अपने डेरामे रहब, एक बेर-दू-बेर देखि-सुनि एबैन।”

पत्नीक विचार सुनि मुनेसर सकदम भऽ गेला। आगू बजैक साहस नै भेलैन। मोबाइल रखि विचारए लगला जे की कएल जाए? अस्पतालक जेहेन बेबस्था अछि से केकरा ने बुझल छइ। कनी नीक आकि कनी अधला, सबहक एके गति अछि। तखन तँ दरभंगामे बेसी रद्दी अछि राँची-पटनामे कनी तहदर छइ। तँए नीक कहबै सेहो नहियेँ। वएह डॉक्टरो आकि नर्सो ने अदैल-बदैल ऐठाम-ओइठाम करै छैथ। दोष की कोनो जगहक होइ छै, दोष होइ छै लोकक चालिक। जेहेन

चालि-चलैनक लोक रहैए तेहने तेकर काजो होइ छइ। मुदा सेहो की ओहिना होइ छै, होइ छै बेवस्थाक अनुरूप। बेकती-विशेषक दोख तँ लोक खिसिया कऽ लगा दइ छै, मुदा से थोड़े अछि। निच्चाँ-ऊपर एके-रंग अछि। कनी कम आकि कनी बेसी, मुदा अछि सबतैर।

..दृढ़ होइत मुनेसरकेँ मनमे एलैन- हम सुलोचना बहिनक नीक इलाज करेबैन। मरण-जीअन अपना हाथमे नै अछि, मुदा नीक-अधलाक जोगार तँ अपना हाथमे अछिए। हम जे करब से की सुलोचना बहिन नै देखती, देखबे करती। कखनो-पानि पीबैक मन हेतैन आ कियो दइबला नै रहतैन तखन ओ की बुझती जे नीक सेवा होइए? पत्नीक विचार सुनिए लेलौं, बेटोसँ पुछिए लिऐ। मुदा पुतोहुकेँ अबैले नै कहबैन। पत्नी जँ रहितैथ तँ उमेरदारो भेली आ ऐठामक सभ किछु बुझलो-सुझल छैन। से तँ पुतोहुकेँ नै छैन। ..रघुनाथकेँ मोबाइल लगा मुनेसर बजला-

“बौआ, बहिनकेँ राँचीए आनि लेलिऐन। ऐठाम सुविधो हएत।”

मुनेसरक बात सुनिते रघुनाथ बाजल-

“नीक केलौं। पहिने ई भाँज लगा लिअ जे सभसँ नीक बेवस्था कोन ठाम अछि। पाइ भलेँ किछु बेसियो खर्च हुअए मुदा इलाजमे कमी नइ होइन।”

रघुनाथक बात सुनि मुनेसरक मन भरि गेलैन।

बजला-

“बौआ, परिवारमे अहिना सभ एक-दोसरपर आश्रित रहैए, जँ से नै रहत तँ कुत्ता-बिलाइ आ मनुक्खमे अन्तरे कथी हएत। एक तँ ओहुना बिनु विवेकेक सभ अछि सिबा मनुक्खक। दोसर, मनुखेक योनि ने कर्म योनि छी, बाँकी तँ भोगे योनि छी किने। से जँ मनुक्खमे नै आएल तँ कर्म-योनि आ भोग-योनिमे दूरीए की रहल।”

पिताक बात रघुनाथ कान ठाढ़ कऽ सुनैत रहल, सुनैत रहल। बाजल किछु ने। मुदा लगमे सुनीता जे बजलैन से मुनेसरो सुनला। बाजल छेली-

"माए छथिन की नै से पुछि लिअनु?"

रघुनाथ-

"किए?"

सुनीता-

"लगमे रहने काज असान हेतैन। एहेन समयमे जनिजातिकेँ रहब जरूरी होइ छइ। सेवा-टहलसँ लऽ कऽ पानिक ओरियान धरिक जरूरत तँ होइते छै किने। मरदकेँ तँ क्लिनिकसँ दबाइ दोकान आ दबाइ दोकानसँ डॉक्टर लग करैत-करैत समय चलि जाइ छइ।"

बहन्ना बनबैत रघुनाथ पिताकेँ कहलखिन-

"टाबर कटि रहल अछि। कनी कालमे फेर गप करै छी।"

मोबाइल रखि रघुनाथ पत्नीकेँ कहलखिन-

"अहाँ जे बात कहै छी, से उचित हएत। केना पुछबैन जे ओतए माए छैथ की नहि?"

जइ नजरिये रघुनाथक प्रश्न छल तइ नजरिये उत्तर नै दैत नजैर बदैल सुनीता बजली-

"नारीक सोभावक ठेकान नै अछि। नान्हिटा बात लऽ कऽ लोक मूसक दबाइ खा जिनगी मेटा लइए। जिनगी घिया-पुताक खेल नहि ने छी जे हाथेसँ बहारि गरदा-माटिक घर-अँगना बना खेला लेब आ जखने मन उचटत कि हाँइ-हाँइ कऽ मेटा चलि देब।"

रघुनाथ-

"हँ से तँ नहियेँ छी, मुदा...।"

सुनीता- “मुदा-तुदा किछु ने, मुँह खोलि कऽ बाजू। कहियौन जे एकटा महिलाक जरूरत ऐछे, जँ माए नै अबै छैथ तँ पुतोहु अबैले तैयार छैथ। अहाँ बहिनकेँ इलाजमे लऽ चलियौन, गाड़ी पकैड़ आबि रहल छी। काल्हि भरि दिन गाड़ीमे लगत, परसूका नाओं कहि दियौन जे पहुँचब।”

पत्नीक बात सुनि रघुनाथ थकथका गेल। मुदा धर्म संकट तँ अछिए। पत्नियोक विचार अकाट्य अछि मुदा माइक सम्बन्धमे पितासँ पुछलो नहियेँ हएत। तखन? तखन किए ने हिनके संग मुहाँ-मुहीं बात होइन। ने ससुर आन भेलखिन आ ने पुतोहु। पिते-पुत्रीक सम्बन्ध भेलैन, किए ने दुनूक बिच्चे विचार जानि विनिमय भऽ जाइन।

मोबाइल उठा नम्बर मिला रघुनाथ सुनीताक हाथमे देलखिन। सुनीता बजली-

“बाबूजी, गोड़ लगै छिऐन।”

पुतोहुक बोल अकानि मुनेसर आसीरवाद तँ दऽ देलखिन मुदा आगू किछु बजैसँ परहेज केलैन। परहेज ऐ दुआरे केलैन जे जे किछु कहैक हएत ओ बेटाकेँ कहबै, हिनका केना कहबैन।

ससुरक कोनो आगूक बात नै सुनि सुनीता बजली-

“जहिना सुलोचना बहिन हिनकर जेठ बहिन छिऐन जे माए दाखिल भेली, तहिना तँ हमरो जेठ दीदीए भेली? पिताक बहिन तुल्य।”

मुनसेर-

“भेली। जँ झगड़ा-दन भेने बेवहारिक पक्ष टुटियो जाइ छै तैयो पुश्तैनी पक्ष तँ रहबे करै छइ। एकरा हम केना नकारि देब।”

सुनीता- “काल्हि गाड़ी पकैड़ आबि रहल छी।”

‘गाड़ी पकैड़ आबि रहल छी।’ सुनि मुनेसर थकथका गेला। पुतोहु औती सासुक किरदानी देखती। हो-ने-हो जँ कहीं पुछि दैथ जे

माए किए ने छैथ, तखन की जवाब देबैन। मुदा काजक दौड़ तँ ओहन दौड़ होइए जे नीक-अधलाक भण्डाफोर करिते अछि। मन गरमेलैन।

..गरमाइते मन बाजि उठलैन। ‘सत्यपर पर्दा देब पाप छी।’ मनुक्खक बीच देहा-देहीक सम्बन्ध होइ छै, सभकेँ अपना-ले करैक अधिकार छइ, हुनको छैन। तँए रोकब नीक नहि।

ससुरक कोनो बात नै सुनि सुनीता बजली-

“एक तँ हिनको बेसी उमेर भऽ गेलैन तैपर केते रंगक रोगो छैन्हे। एहनो तँ भऽ सकैए जे एक्के बेर दुनू गोरेकेँ रोग जोर मारि दनि। तखन के केकरा देखथिन?”

निरुत्तर मुनेसर उत्साहित भऽ बजला-

“कनियाँ, केकरो अधिकारमे दखल देब उचित नै बुझि पड़ैए तँए हम किछु ने कहब, जे मन हुअए से करू। अहाँ स्वतंत्र छी।”

कहि मोबाइल रखि देलखिन। मोबाइल रखिते सुनीता रघुनाथकेँ कहली-

“काज-उदम बेर कोनो काजकेँ झाँपि-तोपि नै राखी। ऐसँ काज बाधित होइ छइ। जखन काजे बाधित भऽ जाएत तखन काज हएत केना।”

रघुनाथ-

“हँ, से तँ नहि हएत?”

सह पबैत सुनीता बजली-

“कौल्हुका गाड़ीसँ हमरा राँची पहुँचा कऽ अहाँ घुमि जाएब। अहाँ नोकरी करै छी तँए छुट्टी कटत, दरमाहा कटत। मुदा ओइठाम पहुँचला पछाइत तँ अपन चसमसँ सभ किछु देखबै। नै जरूरत पड़तैन जिगेसा भेल, जरूरत पड़तैन रहि कऽ सेवा करबैन।”

पुतोहुक बात मुनेसरक मनकेँ खोड़ि देलकैन। विचारए लगला जे केना कएल जाए। ओना, अपन अंगीते डॉक्टर छैथ। ओहो जनै छैथ आ हमहूँ जनै छिऐन मुदा सोझहा-सोझही गप-सप्प नै भेने चेहरासँ ने ओ चिन्है छैथ आ ने हम चिन्है छिऐन। मुदा लगले मनमे द्वन्द्व ठाढ़ भऽ गेलैन। एक मन कहए लगलैन जे जखन समांग डॉक्टर छैथ तखन नीक काज किए ने हएत। दोसर कहैन जे जखन पाइयेक खेल-तमाशा अछि तखन परिचय दऽ कऽ अपन प्रतिष्ठा किए गमाएब। प्रतिष्ठो तँ प्रतिष्ठा छी। सासु-ससुर जँ भीखो मांगि खेती आ जँ बेटी-जमाइक दरबज्जापर हाथीए रहतैन तँ केना हाथ पसारती। मुदा सम्पैत सम्पैत छी जे भोज्य पदार्थ छी किन्तु प्रतिष्ठो सएह छी। खाएर जे हौउ, मुनेसर विचार केलैन जे एक शिक्षकक रूपमे अपन परिचय देबैन। गाम-घरक कोनो चर्च नै करब। मन ठमकलैन, उत्साह जगलैन, काल्हि निसचित डॉक्टर ऐठाम जेबे करब। मुदा जाइसँ पहिने नीक हएत जे अस्पतालोक बेवस्था देखि लिऐ आ प्राइवेटो सभकेँ देखि ली।

आँखिक देखलकेँ मनो मानै छइ। बिनु देखलमे एहनो भऽ सकैए जे औगताइमे अधले भऽ जाए। पछाइत जँ बुझैमे एबो करत, ता काजे हूसि गेल रहत।

दोसर दिन सबेरे आठ बजे मुनेसर टेम्पू पकैड़ अस्पताल पहुँचला। रोगी-वार्ड सभमे जा-जा देखलैन तँ मन मानि गेलैन जे प्राइवेटेमे इलाज कराएब नीक। ओना, हड्डियो रोगक केते डॉक्टर छैथ, मुदा तइमे नीक के छैथ? भाँज लगबैत-लगबैत भाँज लगलैन जे डॉक्टर शेखर नीक छैथ। मुदा छिया तँ अंगीत। पाइबला सबहक सोभावो बदैल जाइ छइ। केतबो लगक किए ने हुअए, पाँच प्रतिशत छोड़ि कऽ, मने-मन बाजिए देता जे जेते-हेराएल-भोथियाएल रहैए, धरमशाला बुझैए। तँए नीक जे जखन चेहराक चिन्हारए नै अछि तखन भषो तँ दूरी बनैबते छइ।

वार्ड सभ देखि-सुनि मुनेसर ऑफिसक आगू पहुँचबे केलाह आकि डॉक्टर शेखर गाड़ीसँ उतैर ऑफिसमे प्रवेश केलैन। संयोग नीक बुझि मुनेसरो कनियेँ अँटैक कऽ पाछूसँ ऑफिस पहुँचला। कुरसीपर बैसैत पुछलखिन-

"डॉक्टर साहब, अस्पताल अच्छा होगा कि प्राइवेट?"

डॉक्टर शेखर-

"अच्छा दोनो है। हमहीं लोग ने दोनो जगह हैं। रही बात देख-रेख की, यहाँ हम स्टाफ को कह सकते हैं, दवाब नहीं दे सकते हैं। लेकिन प्राइवेट की दूसरी बात है।"

दुनू गोरेक बीच गप-सप्प शुरूहे भेल छेलैन आकि मुनेसरक पिसियौत भातीज माने डॉक्टर शेखरक सार, ऑफिस पहुँचला। मुनेसरकेँ देखिते गोड़ लागि पुछलकैन-

"काका, केमहर-केमहर आएल छी?"

मुनेसर-

"कलपर बहिन खसि पड़ली से डाँड़मे कज्जी भऽ गेल छैन सएह एलौं जे नीक अस्पताल हएत आकि प्राइवेट।"

डॉक्टर शेखरक सार-देवेन्द्रक संग मुनेसरक बीच सम्बन्धकेँ अँकैत डॉक्टर शेखर मुँह खोललैन-

"अपने पलामूमे कार्यरत छिऐ?"

मुनेसर-

"छेलिऐ। आब सेवा-निवृत भऽ गेलौं।"

जहिना डॉक्टर शेखर मुनेसरक सम्बन्धमे बहुत बात जनै छैथ तहिना मुनेसर सेहो डॉक्टर शेखरक सम्बन्धमे जनिते छैथ। मुदा पनरह साल पहिने जे शेखरक बिआह भेलैन तइमे मुनेसरकेँ रहनौं चेहराक

चिन-पहचिन नै भेल रहैन।

..जहिना कोनो पोथी पढ़ैक जिज्ञासुकेँ अनायास कोनो समांगक माध्यमसँ एने मनक पोटरी अपने खुजि जाइत तहिना डॉक्टर शेखरोकेँ भेल छेलैन। होइक कारण भेलैन जे बिआहक पद्धति मोन पड़ि गेलैन। मोन पड़ि गेलैन पत्नीक पिताक मात्रिक नीक कुल-मूल। अपनसँ पैघ। ओना, पैघ-छोटक बीच वैवाहिक सम्बन्ध पुरान अछि मुदा ऐठाम दोसर भेल। ऐठाम भेल अर्थक कारण। उदार पिता बेटीक सुख-सुविधा (आर्थिक) देखि अपन विचार सुधार केने रहैथ। मोन पड़लैन सुलोचना दीदीक जिनगी। केना नैहर-सासुरमे ठोकरौल गेल छैथ। एहेन जगहपर जँ मानवीय विचार प्रतिपादित नै करब तँ हमरा विचारक कोनो मोल नहि।

मनमे विचार फुटिते डॉक्टर शेखर, देवेन्द्रकेँ कहलखिन-

“चाचाजी एला अछि आ अहाँ बैसल गप-सप्प करै छी।”

डॉक्टर शेखरक मनमे एलैन जे किए ने घरे सुमझा दिऐन। नहि तँ अनेरे फज्झैतमे पड़ब। जखने पत्नी बुझती जे चाचाजी केँ चिन्हबो ने केलिऐन तखन आन काल जे हुअए मुदा खेनाइ तँ गड़गट भइये जाएत। तइसँ नीक ने जे अखन सभ बुझै छैथ जे नोकरीक ड्यूटीमे छी। यएह ने हएत जे अपन ऑफिसे सुमझा दिऐन, खेता-पीता अराम करता। काज तँ काजक पछाइते हएत किने। तहूमे जाबे चाह-पान करता ताबे जे अराधल काज अछि ओकरा हमहूँ पूरा कऽ ऐगला काजक योजना बना लेब।

डॉक्टर शेखरक इशारा देवेन्द्र बुझि गेल। बुझि गेल ई जे जँ जेठ रहितिऐन (पत्नीक जेठ भाय) तखन जँ कहितैथ, तँ विचारो करितौं। मुदा से नै अछि। जे मन फुरत से करब। खर्चा तँ दिअ पड़तैन। बाजल-

“काकाजी, अहाँ ताबे अराम करू। ई तँ घर नहि ने छिऐ,

सरकारी अस्पताल छिऐ किने, ऐठाम की खाएब, की नै खाएब आ की पीअब से तँ विचारए पड़त किने।”

भार उतरैत देखि डॉक्टर शेखर बजला-

“एकटा ऑपरेशन अछि, ओ सम्पन्न कऽ हमहूँ निचेन भऽ जाइ छी। तखन ऐगला काजमे भीर जाएब।”

अस्पतालक ऑफिसकेँ घर जकाँ देखि मुनेसरक मनमे बिसवास जगलैन जे ठौर परहक काज भेल। जँ पत्नी लगमे नहियोँ रहती तैयो भतीजी तँ रहबे करत। बच्चेसँ देखल अछि जे केहेन बचिया अछि।

टेबुलपर सँ उठैत शेखर देवेन्द्रकेँ कहलखिन-

“डेरोपर चाची जीक जानकारी दऽ दियौन। कहि दियौन जे दू घन्टा पछाइत आबि रहल छी।”

दू घन्टा आगत-भागतक पछाइत तीनू गोरेक डॉक्टर शेखर, मुनेसर आ देवेन्द्रक बीच काजक गप-सप्प उठल। ने डॉक्टर शेखर सोझ मुहेँ मुनेसरकेँ किछु कहथिन आ ने मुनेसर डॉक्टर शेखरकेँ। दुनूक बीच देवेन्द्र, तँए दुनू गोरे देवेन्द्रेकेँ मानि बजैथ।

विचार करैत मुनेसर बजला-

“जखन डेरेक विचार भेल तखन नीक हएत जे पहिने हुनका (बड़की बहिनकेँ) लऽ अबिऐन।”

डॉक्टर शेखर चुप-चाप सुनैत रहैथ, देवेन्द्र बाजल-

“काकीक संग दिदियोकेँ डेरेपर पहिने पहुँचा लिअ। अखनसँ डॉक्टरो साहैब छुट्टीए-मे रहता। अपन क्लिनिक छैन, बीच-बीचमे देखि औता।”

देवेन्द्रक बात सुनि मुनेसर सकपका गेला। सकपका गेला ई जे ‘काकियोकेँ संगे नेने एबैन।’ मुदा डुमैत मनुक्खक धैर्य थरथरेबे करै छै,

मुदा बिच्चेमे युक्ति फुरलैन।

बजला-

"बौआ, एहनो बात लोक बजैए जे काकियोकेँ संगे नेने एबैन। अहिना कुल-खनदानकेँ बुझै छहक।"

जमाइक सोझ अपनाकेँ छिपबैत मुनेसर बाजि तँ गेला मुदा मन धिक्कारए लगलैन। अपनापर ग्लानि भेलैन जे पढ़ल-लिखल (पति-पत्नी) परिवारमे जँ एना हुअए तँ आनक की गति हएत। मुदा, जहिना एक झूठ हजारो झूठकेँ हजम कऽ जाइए तहिना एक सतोक तँ गुण छइहे। से नइ तँ जमाए-केँ परोछ होइते देवेन्द्रकेँ कहि देबै जे बौआ पत्नीक सहयोग नै अछि।

टेम्पू अबिते मुनेसर देवेन्द्रकेँ कहलखिन-

"बौआ, तोरासँ लाथ कोन। भानस अपने करै छी। जखन काज नै रहैए तखन तँ गैसक बेवस्था अछि, भीड़ नै बुझि पड़ैए, मुदा, जेना आइए देखहक जे भानस करब आकि बहिनकेँ डॉक्टर ऐठाम लऽ जाएब।"

मुनेसरक बात सुनि देवेन्द्र बाजल-

"ओहो घर की आन भेल। कहि देने छिऐ, सभ ओतै भोजन करब।"

टेम्पूसँ तीनू गोरे डॉक्टर शेखरक डेरापर पहुँचला। डेरापर पहुँचते यमुनाकेँ नैहर मोन पड़ि गेलैन। मोन पड़ि गेलैन जे जहिया सुलोचना बहिन अपना ओतए रहैथ। केते सामोक गीत आ आनो-आन सिखा देने छेली। यएह ने सुलोचना दीदी छैथ। मुदा बजली किछु ने।

डॉक्टर शेखर सुलोचना बहिनकेँ डॉक्टरी नजरिये देखि विचारलैन। विचारलैन ई जे देहक काट-खोंट छी, हो-ने-हो अपनत्वमे मन पघिल जाए। मुदा डॉक्टर होइक नाते बाजियो तँ नै सकै छी। बात

बदैल यमुनाकेँ कहलखिन- “काज गड़ूगर तँ ऐछे, मुदा असाध नै अछि। तैयो नीक हएत जे दोसरो सहयोगीकेँ बजा लिऐन।”

डॉक्टर शेखरक भक्की यमुना नै बुझि सकली। मुदा नीक होनि से तँ मनमे रहबे करैन। बजली-

“एकटा किए जेतेक जरूरत हुअए आकि राँचीक सबहक (हड्डी रोगक डॉक्टर) जरूरत हुअए तँ सभकेँ बजा लिअ, मुदा दीदी ऐठामसँ अपना पएरे जाथि से तँ देखबए पड़त।”

साढ़े छह बजे साँझमे तीनटा डॉक्टर बीच सुलोचना बहिनक ऑपरेशन भेलैन। नीक ऑपरेशन।

तेसरा दिन हहाएल-फुहाएल रघुनाथ पहुँचला। डेरा बन्न देखि मोबाइलसँ सम्पर्क केलैन। मुदा चीज-वौस तँ रहबे करइ। भाड़ादारक डेरामे सभ समान रखि रघुनाथ दुनू परानी शेखरक ऐठाम विदा भेल।

डॉक्टर शेखरक डेराक बाहर ओसारपर राखल कुरसीपर बैसल मुनेसर विचार करैत रहैथ जे एक दिस बेटा-पुतोहु-भतीजी-जमाइक बीच छी तँ दोसर दिस अर्द्धांगिनीसँ दूर। यएह छी जिनगी।

सड़कपर बेटा-पुतोहुकेँ गाड़ीसँ उतरैत देखि मुनेसर आगू बढ़ला। मुदा बिना गोड़ लगने रघुनाथ केना किछु पुछितैन आकि बिनु आसीरवाद देने मुनेसरे किछु बजितैथ।

दुनू दिससँ दुनू आगू बढ़ैत गेला। लग अबिते रघुनाथसँ पहिने सुनीता गोड़ लगलकैन। गोड़ लगिते मुनेसर आसीरवाद दैत बजला-

“कनियाँ, अपने भतीजीक परिवार छी।”

सड़कपर गाड़ीक अवाज सुनि यमुना सेहो बहरा गेल छेली। मुदा परिचित अनठिया देखि ठमैक गेली।

लग अबिते मुनेसर बजला- “रघुनाथ दुनू बेकती छी। बौआ,

यमुना बहिन छथुन।"

सौंझुका समय। रघुनाथ डॉक्टर शेखरसँ पुछलकैन-

"डॉक्टर साहैब, ऐठाम थोड़े असुविधा अछि। असुविधा ई अछि जे मध्य प्रदेशक विलासपुरमे कार्यरत छी। एक तँ नोकरी तहूमे बैंकक, ऐठामसँ ओइठाम नै लऽ जा सकै छी।"

डॉक्टर शेखर-

"सात दिन एतै रहए दियौन, तहीमे एते भऽ जेतैन जे दोसर डॉक्टर ऐठाम नै लऽ जाए पड़त। दबाइ-दारू चलतैन।"

सएह भेल। सात दिनक पछाइत सभ कियो–सुलोचना बहिन, मुनेसर आ बच्चाक संग दुनू बेकती रघुनाथ–विलासपुर रबाना भेला।

छह मासक पछाइत विलासपुर सँ सभ कियो गाम एला। ❑

❑❑❑
❑❑
❑

Notes